CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के महान योगी

विश्वनाथ मुखर्जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत देवभूमि है। कलियुग में संत महात्मा, योगी इस देवभूमि के साक्षात देवता हैं। ये संत, ये महात्मा, ये योगी, मानव मात्र को प्रेरणा प्रदान करते हैं, अन्धकार में प्रकाश की ज्योति जागृत करते हैं।

ऐसे संतों का जीवन निराशा में आशा का संचार करता है। बड़े भाग्य से ऐसे संतों का दर्शन होता हैं। 'भारत के महान् योगी' ग्रन्थमाला में जो ६ भागों में प्रकाशित हो रही है, तेजस्वी और विस्मृत महात्माओं और योगियों का जीवन-चरित प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं। विश्वास है इस ग्रन्थमाला के माध्यम से पाठकों को लौकिक और अलौकिक मनीषियों का मानस-दर्शन प्राप्त होगा।

मूल्य : तीस रुपये

RaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12.2

7

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के महान् योगी

पंचम खण्ड

विश्वनाथ मुखर्जी

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

BHARAT KE MAHAN YOGI

Part V

by

VISHWANATH MUKHERJEE

1989

© विश्वनाथ मुखर्जी

प्रथम संस्करण : १९८९ ई०

प्रकाशक

अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी–१

मुद्रक

विद्या प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्माघाट, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी जगत् के सुप्रसिद्ध संस्मरण लेखक तथा
मूर्धन्य पत्रकार श्रद्धेय कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
तथा
प्रसिद्ध कोशकार, भाषा विज्ञानी
बन्धुवर डाक्टर बदरीनाथ कपूर को
सादर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरोवाक

पिछले खण्ड के पुरोवाक में तांत्रिक मर्प और उनके शिष्य योगी मिलरेप का उल्लेख किया गया है। साधना-काल में कितनी कठिन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, इसकी जानकारी अपने लेखों में पण्डित गंगाशंकर मिश्र ने दी है।

धर्मशास्त्रों के अध्ययन के लिए मर्प तिब्बत से नेपाल आया तब यहाँ उसे भारतीय पण्डित नरोप के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। फुल्लहरि नामक स्थान में आकर मर्प नरोप से मिला। उसे देखते ही नरोप ने कहा—"तुम मेरे ज्ञान-पुत्र हो। तुम्हारे आने की सूचना मुझे मिल चुकी है। तुम्हारा नाम मर्पपति है और तुम तिब्बत से आ रहे हो। मेरी राय यह है कि तुम सबसे पहले विष सरोवर चले जाओ। वहाँ आचार्य कुक्कुरिपा से शिक्षा ग्रहण करो। उनका मुंह बन्दर के मुख के समान है। देखने में भयंकर लगते हैं। नाना प्रकार के रूप धारण कर सकते हैं। उनके निकट जाकर कहना कि मुझे यहाँ नरोप ने भेजा है।"

मर्प नरोप से पत्र लेकर कुक्कुरिपा के पास आया। यहाँ बहुत दिनों तक शिक्षा प्राप्त करता रहा। सिद्धियाँ प्राप्त करने के बाद वह पुनः नरोप के पास आया। मर्प से सारा विवरण सुनने के बाद नरोप ने उसे महामाया-रहस्य की शिक्षा दी। मर्प ने पूछा—"गुरुदेव, जब आपको महामाया-सम्बन्धी रहस्य का ज्ञान है तब आपने आचार्य कुक्कुरिया के पास मुझे क्यों भेजा?" नरोप ने कहा—"कुक्कुरिया आदि परम्परा के गुरु हैं। वे अनादिकाल से मंत्र जानते हैं।"

१२ वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् मर्प ने नरोप से वापस जाने की आज्ञा माँगी। नरोप ने कहा—"इस वक्त जाओ, पर एक बार तुम्हें पुनः आना पड़ेगा।

दूसरी बार आकर वह नरोप से छह वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद वापस चला गया। इस घटना के कई वर्ष बाद पुनः वह भारत आया। उस समय नरोप का देहान्त हो गया था। इस समाचार से वह व्याकुल हो उठा। बात यह थी कि दूसरी बार उसने वह नरोप से दूसरे शरीर में प्रवेश करने की विधि सीखी और इस विशेष योग-क्रिया का ही उसने अपने ग्रन्थों में अधिक उल्लेख किया है। इससे मनुष्य को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation / Jakgadn.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वजन्म का अनुभव होता है। लेकिन अपने शरीर में लौट आने की शक्ति रहती है। इससे अनेक जन्मों का फल एक ही जन्म में पाया जा सकता है। यह विद्या 'काया-प्रवेश' के नाम से प्रसिद्ध है। शंकराचार्य ने इस विद्या का प्रयोग किया था।

लगातार आठ महीने तक खोज करने के बाद मर्प की मुलाकात नरोप से हुई। वे अन्य शरीर में प्रवेश कर गये थे। इस विद्या का शेष ज्ञान उन्होंने मर्प को दिया था। इसी मर्प का शिष्य योगी मिलरेप था। सिद्धि प्राप्त करने के लिए कितना कष्ट सहना पड़ता है, इसका विवरण निम्नलिखित उद्धरण से स्पष्ट हो जायगा—

इस विद्या को सीखने के लिए कठोर अभ्यास करना पड़ता है। इसके लिए एकान्तवास आवश्यक है। जिन स्थानों में योगी रहते हैं, उसे 'सम्स' कहा जाता है। इनके कई प्रकार होते हैं। अभ्यास साधारण से उत्तरोत्तर कठोर होते जाते हैं। इसके लिए पहले कोई लामा अपने को एक कोठरी में बन्द रखता है। निश्चित समय पर कुछ देर के लिए बाहर निकलता है। धीरे-धीरे इसमें कमी करता है और इने-गिने लोगों से मिलता है। अगर कोई मिलने आता है तो आड़ में रहकर बातें होती है। थोड़े दिन बाद एक व्यक्ति से बातें करता है। बाद में बिलकुल मौन हो जाना पड़ता है। फिर कोठरी की खिड़कियाँ बन्द कर दी जाती हैं। केवल एक छेद से आकाश-दर्शन किया जाता है। कुछ लोग यह भी नहीं करते। उनके लिए दिन-रात समान होता है। केवल उन्हें भोजन पहुँचा दिया जाता है। इस प्रकार के तपोमय एकान्त जीवन व्यतीत करने की अवधि निश्चित रहती है। कुछ लोग केवल कुछ दिनों, कुछ लोग कुछ महीनों, कुछ लोग कुछ सालों और कुछ लोग आजीवन के लिए ऐसा व्रत ले लेते हैं। ऐसे लोगों की कोठरियाँ एकान्त में बनाई जाती हैं जहाँ वे घोर तपस्या करते हैं। इनका पूरा समय आसन, प्राणायाम, ध्यान, जप आदि में व्यतीत होता है। इसके अलावा गुरुओं द्वारा कठोर परीक्षा ली जाती है।

यह सारी प्रक्रिया उनके लिए है जो योग सीखना चाहते हैं। इसके विपरीत भारत में ऐसे अनेक योगी हो गये हैं जिन्हें बचपन में ही ईश्वर की ओर से अलौकिक ज्ञान प्राप्त हो गया था। उन्हें साधना की इन कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा था। केवल जप-साधना से ही वे उच्चस्तर तक पहुँच गये थे।

विश्वनाथ मुखर्जी

RajGuru-Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रमणिका

स्वामी रामानुजाचार्य	१
रामदास काठिया बाबा	२६
राम ठाकुर	५४
साधक रामप्रसाद	६९
भूपतिनाथ मुखोपाध्याय	८१
स्वामी भास्करानन्द	९७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

षष्ठ खण्ड में

माधव पागला
पवहारी बाबा
हरिहर बाबा
बाबा रणछोड़दास
साईं बाबा
सदानन्द स्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी रामानुजाचार्य

पूजा-गृह से बाहर आने पर भक्तप्रवर श्रीशैलपूर्ण को एक व्यक्ति ने श्रद्धापूर्वक नमस्कार किया। श्रीशैलपूर्ण ने मुस्कराते हुए पूछा—"कहो, क्या समाचार है? बड़े प्रसन्न दिखाई दे रहे हो?"

आगन्तुक ने कहा—"हाँ, स्वामी। आपके लिए शुभ समाचार लेकर आया हूँ। आपकी दोनों भगिनियों को एक-एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई है।"

प्रसन्न मुद्रा में श्रीशैलपूर्ण ने पूछा—"कब? क्या दोनों को एक साथ पुत्र हुए हैं?"

आगन्तुक ने कहा—"नहीं स्वामी। देवी कान्तिमती[1] को पाँच दिन पहले और महादेवी[2] को कल सायंकाल। दोनों ही पुत्र हैं।"

श्रीशैलपूर्ण ने कहा—"साधु-साधु। यह तो शुभ समाचार है। केशव[3] से कहना मैं शीघ्र ही आकर नामकरण करूँगा। अशौच पूरा हो जाय।"

निश्चित दिन श्रीशैलपूर्ण अपनी बहनों के यहाँ आये। आशीर्वाद देने के पश्चात् उन्होंने बड़ी बहन के पुत्र का नाम लक्ष्मण[4] और छोटी बहन के पुत्र का नाम गोविन्द रखा। लक्ष्मण अपने मौसेरे भाई से पाँच दिन बड़ा था।

दिन गुजरते गये। दोनों बालक शुक्ल पक्ष के चाँद की तरह बड़े होते गये। लक्ष्मण के लक्षणों को देखकर श्रीशैलपूर्ण चकित रह गये। बचपन से ही उसने अपनी प्रतिभा का परिचय देना प्रारंभ किया था। लक्ष्मण के बाद कान्तिमती को लगातार दो कन्याएँ हुईं।

---

१. कान्तिमती को भूमि पेराट्टी, भूदेवी या कान्तिमती कहा गया है।
२. महादेवी को पेरिया पेराट्टी, द्युतिमती और महादेवी कहा गया है।
३. केशव का पूरा नाम था—श्रीमदासुरि सर्वकेतु केशव दीक्षित।
४. लक्ष्मण अप्रैल, १०१७ ई०, शुक्ल पंचमी, गुरुवार को उत्पन्न हुए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूणामेली गाँव में कांचीपूर्ण नामक एक भक्त रहता था जो जाति से शूद्र था, परन्तु उसकी इस बात की ख्याति थी कि विष्णुकांची स्थित श्रीवरदराज भगवान् उसके सामने प्रकट होते हैं, बातें करते हैं और निवेदन को स्वीकार करते हैं। इसी विश्वास के कारण आर्त-पीड़ित लोग उससे अपनी मनोकामनाएँ कहते ताकि वह श्रीवरदराज से निवेदन करे और उनका भला हो।

कांचीपूर्ण का यह नित्य का नियम था, वह अपने गाँव से पैदल ही श्रीवरदराज के मंदिर तक पूजा के लिए आता था। मार्ग में पेरेम्बुदुर[1] गाँव आता था। इसी गाँव की मुख्य सड़क पर लक्ष्मण का घर था।

लोहा और चुम्बक एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं। एक दिन कांचीपूर्ण मंदिर से दर्शन करके लौट रहा था तभी उसने देखा—एक अपूर्व बालक सड़क पर टहल रहा है। कांचीपूर्ण ने अपनी दिव्यदृष्टि से यह भी देखा कि बालक के शरीर से एक प्रकार की ज्योति निकल रही है। कौन है यह देव-शिशु? अपनी ओर एक व्यक्ति को आते देख लक्ष्मण भी ठिठककर खड़ा हो गया। लक्ष्मण के हृदय में भी हलचल मच गयी।

कांचीपूर्ण ने पास आकर लक्ष्मण से उसका परिचय पूछा। अपना परिचय देने के बाद लक्ष्मण ने नम्रतापूर्वक आग्रह किया कि आज आप मेरे घर चलकर भोजन कीजिए। कांचीपूर्ण बालक के आग्रह की उपेक्षा नहीं कर सके। न जाने कौन-से आकर्षण ने उन्हें लक्ष्मण के घर जाने के लिए बाध्य किया।

कांचीपूर्ण को आदर के साथ बैठक में बैठाने के बाद लक्ष्मण ने अपने पिता केशव से कहा—"पिताजी, इस महापुरुष को आज अपने यहाँ भोजन करने के लिए निमंत्रित किया है।"

केशव बाहर आये। कांचीपूर्ण को देखते ही उन्होंने प्रसन्नता के साथ उनका स्वागत किया। वे कांचीपूर्ण की ख्याति से अपरिचित नहीं थे। केशव ने अपने पुत्र से कहा—"बेटा, तुमने अच्छा कार्य किया है। आप परम भागवत हैं। इनकी सेवा करो। इन्हें कोई कष्ट न हो।"

कांचीपूर्ण ने कहा—"आपके पुत्र ने मुझे निमंत्रित किया है। मैं इसके आग्रह को अस्वीकार नहीं कर सका।"

केशव ने कहा—"महात्मन्, यह तो मेरे लिए सौभाग्य की बात है जो आप जैसे भागवत मेरे यहाँ अतिथि हुए हैं। आप इस बालक को आशीर्वाद दें ताकि इसका मन ईश्वर के प्रति लगा रहे।"

---

१. प्रचलित नाम श्रीपेरुमबन्दर था, पर संस्कृत में इस गाँव का नाम श्रीमहाभूतपुरी कहा गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजन के पश्चात् कांचीपूर्ण आराम कर रहे थे तभी लक्ष्मण उनका पैर दवाने के लिए आया। उसके उद्देश्य को समझते ही कांचीपूर्ण ने कहा—"नहीं, बेटा। मैं शूद्र हूँ, तुम ब्राह्मण-पुत्र हो। ऐसा नहीं करना चाहिए। पैर दवाना मेरा काम है"

लक्ष्मण ने कहा—"शास्त्रों में तो यह लिखा है कि प्रत्येक हरिभक्त ब्राह्मण होता है। तिरुपान्न आलवार चाण्डाल होते हुए भी ब्राह्मणों के लिए पूज्य बन गये थे। आप भी हरिभक्त हैं, फिर आपत्ति क्यों ?"

लक्ष्मण की बातें सुनकर कांचीपूर्ण चमत्कृत हो उठे। इतनी कम उम्र का बालक इतनी ऊँचाई की बात कैसे कर सका ? अभी से शास्त्र की बातें कर रहा है तो आगे चलकर तो प्रभूत शक्तिशाली विद्वान् बनेगा। बालक के प्रश्न का उत्तर कांचीपूर्ण नहीं दे सके।

× × ×

धीरे-धीरे लक्ष्मण बचपन की ड्योढ़ी पारकर किशोर बन गया। जब वह सोलह वर्ष का हुआ तब उसके पिता ने उसका विवाह कर दिया। इस विवाह के कई वर्ष बाद केशव का निधन हो गया। लक्ष्मण बचपन से अब तक सारी शिक्षा पिता से प्राप्त करता रहा। गांव में अब ऐसा कोई पंडित नहीं था जिसके निकट जाकर लक्ष्मण आगे की शिक्षा ले सके। पता लगाने पर बुजुर्गों ने बताया कि कांचीपुरम् में अद्वैतवादी यादव प्रकाश नामक एक पंडित हैं जो अपनी चटशाला में विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं, वे ही एक ऐसे विद्वान् हैं जो तुम्हें शिक्षा दे सकते हैं।

लक्ष्मण के ज्ञान की प्यास ने निश्चय किया कि वह यादव प्रकाश के निकट जाकर अध्ययन करेगा। माँ से अनुमति लेकर वह यादव प्रकाश के यहाँ चला आया। यादव प्रकाश न केवल पंडित थे, बल्कि संन्यासी और तांत्रिक थे। अद्वैतवादी भी थे।

लक्ष्मण के ज्ञान की परीक्षा लेने के बाद यादव ने उसे विद्यार्थी के रूप में स्वीकार कर लिया। इधर पुत्र का अभाव माँ को पीड़ा देने लगा। पुत्र-वियोग जब सहन नहीं हो सका तब वे अपनी पुत्रवधू को लेकर कांचीपुर चली आयीं। आश्रम से कुछ दूर एक मकान में आकर रहने लगीं।

दीदी कांचीपुर चली गयी है और लक्ष्मण भी वहीं पढ़ रहा है, यह समाचार पाते ही महादेवी ने अपने पुत्र को वहीं पढ़ने के लिए भेज दिया ताकि दोनों भाई एक साथ रहें। गोविन्द अकेलापन महसूस न करे। दोनों भाई यादव प्रकाश के आश्रम में पढ़ते रहे।

कुछ ही दिनों के अध्ययन के पश्चात् लक्ष्मण ने अनुभव किया कि गुरुदेव भले ही विद्वान् हों, पर उनके विचार असंगत हैं। उनका ज्ञान द्वेषपूर्ण है। वे जो कुछ कहते हैं, सारा का सारा रुचि-हीन है। वास्तव में यहाँ दो संस्कृतियों की टक्कर थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक्ष्मण का परिवार वैष्णव था। उसी संस्कृति में उसका लालन-पालन हुआ था। इधर यादव प्रकाश शंकराचार्य के अद्वैतवाद के समर्थक होने पर भी कर्मकाण्ड-शून्य थे। उनके विचारों में ज्ञान की अपेक्षा पंकिलता अधिक थी। इसी कारण लक्ष्मण के मन में निरंतर असंतोष बढ़ता गया।

एक बार छान्दोग्य उपनिषद् में आये शब्द 'कप्यासं' की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा—"सूर्यमण्डलस्थ पुरुष की आँखें किस प्रकार लाल हैं? जैसे वन्दर का नितम्ब।"

इस व्याख्या को सुनकर लक्ष्मण को वड़ा धक्का पहुँचा। भगवान् की आँखों की तुलना वन्दर के चूतड़ से की जा रही है? ऐसी उपमा वेदों में कदापि नहीं हो सकती। उस समय लक्ष्मण यादव प्रकाश की पीठ पर तेल मालिश कर रहा था। दुःख के कारण उसकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े।

पीठ पर पानी गिरने के कारण यादव ने पीछे मुड़कर देखा तो लक्ष्मण रो रहा था। कारण पूछने पर लक्ष्मण ने अपनी शंका प्रकट की। यादव ने कहा—"इसमें मैं क्या कर सकता हूँ। आचार्य शंकर ने यही लिखा है।"

लक्ष्मण को यह बात मालूम थी कि गुरुजी अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के लिए असत्य का सहारा लेते हैं। उसने कहा—"गुरुदेव, इस हीन उपमा को हम वदल भी सकते हैं। 'कप्यासं' शब्द 'कं' पद का अर्थ जल को और 'पिवति' का अर्थ पान करना, अर्थात् कपि का अर्थ सूर्य होगा। 'आस' अर्थ आस् धातुरूप है, इसका अर्थ हुआ विकसित। फलतः संपूर्ण शब्द का अर्थ हुआ—सूर्य के द्वारा जो विकसित होता है अर्थात् पद्म। इस प्रकार आँखों की लालिमा की उपमा पद्म सरीखे लाल से की जा सकती है।"

इस विद्वत्तापूर्ण व्याख्या को सुनकर यादव चौंक उठे। उनका ही शिष्य इतनी ऊँची कल्पना कर सकता है, इसका उन्हें स्वप्न में भी विश्वास नहीं था। ऐसे तीक्ष्णाधि वालक को कब्जे में लाना कठिन है। ऊपरी मन से उन्होंने लक्ष्मण की प्रशंसा की, पर भीतर से कुढ़ते रहे। इसी बीच एक और घटना हो गयी।

तांत्रिक के रूप में यादव प्रकाश की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। मंत्र के माध्यम से वे भूत-प्रेत-वाधा दूर करते थे। उन दिनों कांचीपुर की राजकुमारी को ब्रह्मदैत्य ने पकड़ रखा था। काफी प्रयत्न करने पर राजकुमारी उसके पंजे से मुक्त न हुई। राजा ने यादव प्रकाश को अपने महल में वुलवाया। वे वहाँ जाकर अपने मंत्रों का प्रयोग करने लगे।

उनके मंत्रों से चिढ़कर राजकुमारी के भीतर के ब्रह्मदैत्य ने कहा—"हे पंडित, तेरा मंत्र-तंत्र वेकार है। तू मुझसे कमजोर है। मेरा कुछ नहीं कर सकता। तुझे यही नहीं मालूम कि पूर्व जन्म में तू क्या था?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस अपमान से चिढ़कर यादव ने पूछा—"पूर्व जन्म में हम दोनों क्या थे ? जरा बताओ तो सुनें।"

ब्रह्मदैत्य ने कहा—"पूर्व जन्म में तुम अजगर थे। एक ब्राह्मण का उच्छिष्ट खाने के कारण इस जन्म में पंडित हुए हो। मैं ब्राह्मण था, पर यज्ञ करते समय प्रमाद-वश भूल हो गयी, इसलिए ब्रह्मदैत्य बना।"

यादव ने चिढ़कर पूछा—"अब यह बताओ कि राजकुमारी को कैसे छोड़ोगे ?"

ब्रह्मदैत्य ने कहा—"तुम्हारे तंत्र-मन्त्र का मुझ पर कोई असर नहीं होगा। अगर तुम्हारा शिष्य लक्ष्मण राजकुमारी के मस्तक पर कृपापूर्वक अपना चरण रख दे तो मैं चला जाऊँगा। अन्यथा मैं कदापि नहीं जाऊँगा।"

यादव के आदेश पर लक्ष्मण ने राजकुमारी के मस्तक पर पैर रखा। ब्रह्मदैत्य चला गया। राजा ने प्रसन्न होकर लक्ष्मण को स्वर्ण-मुद्राएँ दीं। उक्त मुद्राएँ लक्ष्मण ने गुरुदेव को समर्पित कर दीं। इस अपमानजनक घटना से यादव मन ही मन लक्ष्मण पर कुपित हो उठे। भरी सभा में ब्रह्मदैत्य से अपमानित होने की इस घटना को वे भूल नहीं सके।

इसी बीच अध्ययन-काल में एक और घटना हो गयी। एक के बाद एक निरन्तर होनेवाली घटनाओं के कारण यादव प्रकाश लक्ष्मण से इतने नाराज हुए कि उन्होंने उसकी हत्या करने का संकल्प कर लिया। कुछ दिनों तक वे नाना प्रकार के उपाय सोचते रहे। इसके बाद एक दिन उन्होंने घोषणा की—"हम सबको वाराणसी जाकर गंगा-स्नान करना चाहिए। वहाँ विश्वविश्रुत विद्वान् रहते हैं, उनसे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।"

इस यात्रा के पीछे क्या रहस्य है, इसका अनुमान कोई नहीं लगा सका। एक दिन वे अपनी शिष्य-मंडली के साथ रवाना हुए। महीनों चलने के बाद सभी विंध्याचल के गोण्डारण्य में आये। यादव प्रकाश ने देखा—यहाँ कहीं भी मानव-बस्ती नहीं है। चारों ओर घनघोर जंगल और हिंस्रक पशु हैं। यही उपयुक्त स्थान है। यहाँ हत्या कर देने के बाद यह प्रचारित किया जा सकता है कि लक्ष्मण को हिंस्रक पशुओं ने मार डाला था। अपनी इच्छा को उन्होंने कतिपय शिष्यों के सामने प्रकट किया। इसके बाद वे अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

इस यात्रा में लक्ष्मण का मौसेरा भाई गोविन्द भी था। उसे इस षड्यंत्र का पता चल गया। एक दिन सवेरे जब लक्ष्मण जंगल की ओर प्रातःक्रिया करने जा रहा था तब उसने यादव के षड्यंत्र की सूचना दी और कहा कि तुम अब वापस मत आना। जितनी जल्दी हो सके, इस स्थान से दूर भाग जाओ।

लक्ष्मण को यह जानकर भय और कष्ट हुआ कि गुरुदेव उसकी हत्या करने-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाले हैं। जी-जान से वह भाग गया। दौड़ते-दौड़ते जब वह थक गया तब एक वृक्ष के नीचे बैठकर सोचने लगा कि अब कांचीपुर वापस जाना उचित है। उसे इतना ज्ञान था कि वह दक्षिण की ओर से आया है। इतना सोचते-सोचते सहसा वह बेहोश हो गया।

काफी देर के बाद आदमी की आवाज सुनने पर उसकी आँखें खुलीं। सामने एक बहेलिया दम्पती खड़े थे। इस सुनसान स्थान में आदमी को देखकर उसके हृदय में आशा का संचार हुआ। तभी उस पुरुष ने पूछा—"क्यों भाई, कौन हो तुम ? इस जंगल में अकेले क्यों हो ?"

लक्ष्मण ने कहा—"मैं विद्यार्थी हूँ। अपने गुरु के साथ गंगा-स्नान के लिए जा रहा था। मार्ग में ज्ञात हुआ कि वे मेरी हत्या करना चाहते हैं। इस बात को सुनते ही मैं भाग खड़ा हुआ। मेरा घर कांचीपुर है। वहीं जाना चाहता हूँ"

बहेलिये ने कहा—"घबराने की बात नहीं है। हम भी उधर ही जा रहे हैं। मेरे साथ आओ।"

बहेलिया दम्पती के साथ चलते-चलते अँधेरा हो गया। सभी नदी किनारे सो गये। सबेरे जागने पर बहेलिये ने कहा—"मुझे प्यास लगी है। कहीं से पानी ला दोगे ?"

बहेलिया से लोटा लेकर लक्ष्मण पानी की तलाश में चल पड़ा। पता नहीं, वह नदी कहाँ गायब हो गयी जिसे कल देखा था। थोड़ी दूर आने पर उसने देखा—एक कुएँ से लोग पानी भर रहे हैं। कुएँ के पास खड़े लोग तथा वह जगह कुछ परिचित-सी लगी। लेकिन ठीक से समझ नहीं सका। पानी लेकर जब वह लौटा तो देखा—बहेलिया दम्पती वहाँ मौजूद नहीं है। काफी देर तक इधर-उधर देखने पर वे दिखाई नहीं दिये।

पुनः कुएँ के पास आकर उसने पानी भरनेवालों से पूछा—"काँचीपुर यहाँ से कितनी दूर है ?"

उसकी बातें सुनकर सभी लोग हँस पड़े। एक व्यक्ति ने कहा—"क्या तुम इस स्थान को नहीं पहचान रहे हो ? वरदराज मंदिर का शिखर तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा है ?"

यह सुनकर वह अवाक् रह गया। आखिर रातभर में वह कांचीपुर कैसे पहुँच गया ? क्या बहेलिये के रूप में भगवान् उसे यहाँ तक लाकर छोड़ गये हैं ? तभी वे गायब हो गये। मैं उन्हें पानी तक नहीं पिला सका। यह सब सोचते-सोचते वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर तीन-चार परिचित लोग उसे उठाकर घर पहुँचा आये। पुत्र की यह हालत देखकर माँ व्याकुल हो उठी। देर तक हवा करने के बाद वह उठ बैठा और कहा—"अब ठीक हूँ, माँ। घबराने की बात नहीं है। मैं अकेला वापस आया हूँ। मेरे साथ कोई नहीं आया है।"

रात को माँ के बारम्बार आग्रह करने पर उसने विस्तार से सारी घटना सुनाई। पुत्र के इस संकट को सुनकर माँ भय से सिहर उठी और यादव को कोसने लगी।

दूसरे दिन कान्तिमती अपने साथ भोग की सामग्री लेकर वरदराज मंदिर गयी। साथ में लक्ष्मण, उसकी पत्नी और मौसी थी। मंदिर से वापस आने पर लक्ष्मण ने देखा कि दरवाजे के समीप कांचीपूर्ण उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कांचीपूर्ण को भीतर ले जाकर उन्हें भी अपनी सारी कहानी लक्ष्मण ने सुनाई।

कांचीपूर्ण ने कहा—"यह भगवान् वरदराज की कृपा थी जो जीवित वापस आ गये। सच तो यह है कि बहेलिये के रूप में भगवान् तुझे यहाँ तक पहुँचा गये थे। अब आगे से कुएँ के जल से उन्हें नहलाया करना। इससे तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जायगी।"

× × ×

एक अर्से के बाद यादव प्रकाश यात्रा से वापस लौटे तो उन्होंने लक्ष्मण के घर जाकर यह समाचार देना उचित समझा कि उसे जंगली जानवर खा गये हैं। छोटा भाई गोविन्द वापस आते समय कालहस्ती में रुक गया। वह अब कांचीपुर वापस नहीं आयेगा।

लक्ष्मण को जब उन्होंने जीवित देखा तब उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उन्हें इस बात की आशंका हुई कि कहीं इसे मेरे षड्यंत्र का पता न चल गया हो, पर दूसरे ही क्षण सोचा—भला इसे कैसे पता चला होगा? प्रकट रूप से उन्होंने कहा—"अरे वाह! तुम घर वापस आ गये हो? तुम्हें देखकर मुझे बेहद खुशी हो रही है। एकाएक तुम्हारे गायब हो जाने पर हम लोग काफी परेशान हुए थे। बाद में सोचा कि शायद जंगली जानवरों ने तुम्हें अपना शिकार बनाया हो। भगवान् करे तुम लाख वर्ष जीवित रहो।"

लक्ष्मण भी झूठ बोल गया—"उस दिन सवेरे प्रातःक्रिया से वापस आते समय रास्ता भूल गया। बाद में मुझे एक बहेलिया दम्पती यहाँ पहुँचा गया।"

लक्ष्मण की बातों से यादव को संतोष हो गया कि इसे मेरे षड्यंत्र का कुछ पता नहीं है। वे आशीर्वाद देकर चले गये।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन दिनों श्रीरंगम में यामुनाचार्य[1] नामक एक परम वैष्णव रहते थे। वे समग्र वैष्णव-सम्प्रदाय के गुरु और एकमात्र नेता थे। लक्ष्मण के मामा श्रीशैलपूर्ण इनके शिष्यों में थे। स्वयं लक्ष्मण यामुनाचार्य की पौत्री के पुत्र थे। गरीब परिवार में जन्म लेने पर भी अपनी प्रतिभा तथा ज्ञान के कारण राजदरबार से सम्मानित हो चुके थे। इधर वार्द्धक्य तथा निरन्तर अस्वस्थ रहने के कारण उन्हें इस बात की चिन्ता सताने लगी थी कि मेरे बाद इस मठ का कार्यभार कौन सम्हालेगा? अपने शिष्यों में कोई भी योग्य नहीं था। ठीक इन्हीं दिनों लक्ष्मण की विद्वत्ता और अलौकिक प्रतिभा का परिचय उन्हें प्राप्त हुआ। उसे परखने की तीव्र लालसा मन में उत्पन्न हुई। अपनी योजना किसीको न बताकर वे वरदराज का दर्शन करने जा रहा हूँ, कहकर यात्रा पर निकल पड़े।

एक दिन कांचीपूर्ण के साथ वे वरदराज का दर्शन कर वापस आ रहे थे तभी कांचीपूर्ण ने इशारे से बताया कि यही वह युवक है। यामुनाचार्य ने देखा कि लक्ष्मण के कन्धे पर हाथ रखे यादव प्रकाश आ रहा है। यादव प्रकाश के चरित्र से यामुनाचार्य भलीभाँति परिचित थे। इस समय लक्ष्मण से बात करना उन्होंने उचित नहीं समझा। लेकिन प्रथम दर्शन से ही वे लक्ष्मण के प्रति आकृष्ट हो गये। उन्होंने मन ही मन निश्चय किया कि इस युवक को यादव प्रकाश के चंगुल से छुड़ाकर वैष्णव-प्रभाव में लाऊँगा। यही सब सोचते हुए वे श्रीरंगम वापस लौट गये।

इस घटना के बाद लक्ष्मण के जीवन में दो घटनाएँ हुईं। एक ओर मातृ-वियोग हुआ, दूसरी ओर यादव प्रकाश से विवाद होने के कारण उनसे अलग हो गया। यह समाचार श्रीरंगम तक पहुँच गया।

यामुनाचार्य ने तुरन्त अपने शिष्य महापूर्ण को बुलाकर कहा—"जितनी जल्दी हो सके, तुम कांचीपुर जाकर लक्ष्मण को यहाँ ले आओ। लेकिन एक बात याद रखना कि दबाव डालकर या जबरन मत लाना।"

गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर उसी दिन महापूर्ण कांचीपुर के लिए रवाना हो गये। यहाँ आकर वे कांचीपूर्ण के घर ठहरे। लक्ष्मण के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि मंदिर से वापस आते समय मार्ग में लक्ष्मण से साक्षात्कार करूँगा।

इस योजना के अनुसार महापूर्ण मंदिर से निकलकर लक्ष्मण के पीछे-पीछे कुछ दूरी रखकर चलने लगे। जब बिलकुल पास आ गये तब वे यामुनाचार्य-रचित

१. वैष्णव-सिद्धान्तों को निश्चित रूप देनेवाले नाथमुनि के पुत्र। इनका असली नाम आलवंदार था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवद्भक्तिपूर्ण श्लोकों का पाठ करने लगे। इन श्लोकों को सुनते ही लक्ष्मण के कदम रुक गये। पलटकर उसने पूछा—"महाशय, आप जिन श्लोकों का पाठ कर रहे हैं, उसके रचयिता कौन हैं ?"

महापूर्ण की अभिलाषा पूर्ण हुई। वे बातचीत करने का मौका ढूँढ़ रहे थे। विनयपूर्वक उन्होंने उत्तर दिया—"ये श्लोक महामुनि यामुनाचार्य की रचनाएँ हैं। वे मेरे गुरु हैं।"

लक्ष्मण ने कहा—"काश, ऐसे महामानव का दर्शन पाता।"

महापूर्ण ने उत्साह के साथ कहा—"क्या आप उनका दर्शन करना चाहते हैं? वे स्वयं आपसे मिलने को उत्सुक हैं। अगर आप प्रस्तुत हों तो मैं उनके निकट आपको ले चल सकता हूँ"

लक्ष्मण ने तुरत कहा—"आप कुछ देर प्रतीक्षा कीजिए। मैं अभी आता हूँ।"

चार दिन पैदल चलने के बाद जब दोनों श्रीरंगम आये तो देखा—चारों ओर से अपार जनसमूह कावेरी-तट की ओर जा रहा है। पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि यामुनाचार्य परमपद प्राप्त कर चुके हैं। यह समाचार सुनते ही लक्ष्मण कटे वृक्ष की तरह गिर पड़ा। महापूर्ण फफककर रोने लगे। फिर भी अपने को संयत करते हुए वे लक्ष्मण की सेवा करने लगे।

कुछ देर बाद नदी किनारे आकर दोनों व्यक्तियों ने यामुनाचार्यजी के पार्थिव-शरीर के दर्शन किये। आसपास सहस्रों लोग अश्रुपात कर रहे थे। लक्ष्मण को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यामुनाचार्य के दाहिने हाथ की तीन उँगलियाँ मुड़ी हुई हैं। निर्जीव शरीर में यह स्थिति नहीं रहती।

पास खड़े एक व्यक्ति से उसने पूछा—"क्या मुनिवर की उँगलियाँ इस तरह मुड़ी रहीं ?"

एक शिष्य ने कहा—"जी नहीं। यह स्वाभाविक स्थिति नहीं है। शरीर छोड़ने के पहले गुरुवर अश्रुपात कर रहे थे। जब हम लोगों ने उनके रोने का कारण पूछा तब उन्होंने एक-एक कर तीन बातें बतायीं। उसी समय से ये उँगलियाँ मुड़ी हुई हैं। अन्त में यह जरूर कहा था कि वैष्णव-सम्प्रदाय के होनेवाले नेता लक्ष्मण को बिना देखे मुझे शरीर छोड़ना पड़ रहा है। इतना कहने के साथ ही उन्होंने शरीर त्याग दिया। उसी समय से ये उँगलियाँ मुड़ी हुई हैं।"

यामुनाचार्य ने अन्तिम समय उसे स्मरण किया था, इस बात को सुनकर लक्ष्मण का हृदय हाहाकार कर उठा। हे मुनिवर, आप एक दिन और जीवित रहते तो मैं आपका दर्शन तो कर लेता। अपने आँसुओं को पोंछते हुए लक्ष्मण ने पूछा—"मुनिवर की इच्छाएँ क्या थीं ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिष्य ने उन इच्छाओं का जिक्र किया। सारी बातें सुनने के बाद लक्ष्मण ने कहा—"मैं कांचीपुर-निवासी लक्ष्मण हूँ। मुनिवर ने जीवन के अंतिमकाल में जो इच्छाएँ प्रकट की थीं, उनको पूर्ण करूँगा। मुनिवर परमपद प्राप्त करने के पूर्व मुझे और मैं उन्हें देखना चाहता था, पर यह नहीं हो सका।"

सभी लोगों का ध्यान लक्ष्मण की ओर गया। उसने ऊँचे स्वर में कहा—"मैं आप सभी के सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं वैष्णव-मत का पालन करते हुए सर्व-साधारण के पंचसंस्कारयुक्त द्राविड़ वेद विशारद तथा नारायण का अनुग्रह प्राप्त करते हुए रक्षा करूँगा।"

इतना कहना था कि यामुनाचार्य के पार्थिव शरीर के हाथ की मुड़ी हुई उँगलियों में से एक खुल गयी। आगे लक्ष्मण ने कहा—"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जन-सुरक्षा के लिए मानव-कल्याण, तत्त्वज्ञानसम्पन्न ब्रह्मसूत्र का भाष्य लिखूँगा।"

दूसरी उँगली खुल गयी। पुनः लक्ष्मण ने कहा—"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मुनिश्रेष्ठ पराशर और शठकोप के नाम दो महापुरुषों का नामकरण करूँगा जिन्होंने पुराण तथा द्राविड़ वेद लिखा था।"

इस घोषणा के साथ ही तीसरी और अन्तिम उँगली खुल गयी। शिष्य और भक्तों को अपार विस्मय हुआ। तभी एक वरिष्ठ शिष्य ने कहा—"प्रभु, आपके प्रति गुरुदेव की बड़ी आस्था थी। इधर कई दिनों से बराबर आपको स्मरण कर रहे थे। उन्होंने हमें यह आदेश दिया है कि आपके शरण में हम लोग रहें। आप हमारे कर्ण-धार बनकर हमें मार्ग दिखायें।"

सभी लोगों को प्रणाम करते हुए लक्ष्मण ने कहा—"मैं आप लोगों की भर-पूर सेवा कर सकूँगा, ऐसा विश्वास नहीं है, पर प्रतिज्ञा करता हूँ कि पूरी शक्ति और निष्ठा के साथ मैं अपना कर्त्तव्य अवश्य करूँगा। शायद मैं बड़ा अभागा हूँ, इसीलिए महामुनि का दर्शन नहीं कर सका।"

कहते-कहते वह हृदयविदारक ढंग से रो पड़ा। थोड़ी देर बाद उसके चेहरे पर परिवर्तन हुआ और बिना कुछ कहे वह वापस चल पड़ा। उसके इस व्यवहार पर सभी चकित रह गये। कोई कुछ समझ नहीं सका। सहसा बीच रास्ते पर रुक-कर उसने कहा—"मैं दर्शन नहीं करूँगा। जिस निष्ठुर देवता ने महामुनि के दर्शन से मुझे वंचित कर दिया, उनके दरवाजे पर नहीं जाऊँगा।"

लक्ष्मण का यह क्रोध श्रीरंगनाथ के प्रति था। घर के पास आकर वे सीधे कांचीपूर्ण के यहाँ गये। उनसे सारा समाचार कहते-कहते वह रोने लगे और कांची-पूर्ण भी रोने लगे। बाद में कांचीपूर्ण ने यामुनाचार्य के बारे में अनेक चर्चाएँ कीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ दिनों वाद लक्ष्मण की इच्छा हुई कि यहाँ कांचीपूर्ण की तरह कोई श्रेष्ठ भक्त नहीं है। भगवान् वरदराज से वे वातें करते हैं। ऐसे योग्य व्यक्ति से दीक्षा लेनी चाहिए। लेकिन जव कभी इस वारे में वह चर्चा करता तव वे मृदु ढंग से टाल देते थे।

आखिर एक दिन वह वहुत उतावला होकर वोल उठा—"अव मैं कोई वहाना सुनना नहीं चाहता। आप ही मुझे भक्ति-मार्ग दिखा सकते हैं। आपसे उत्तम मेरा कोई गुरु नहीं हो सकता।"

कांचीपूर्ण ने कहा—"वेटा लक्ष्मण, मेरी वात मानो। मैं शूद्र हूँ। मैं अगर तुम्हें दीक्षा दूँगा तो यह धर्मविरुद्ध होगा। यह कार्य मुझसे नहीं हो सकता। मैं आज भगवान् वरदराज से इस वारे में वातचीत करूँगा। वे जैसी आज्ञा देंगे, वैसा किया जायगा।"

लक्ष्मण ने कहा—"ठीक है। आपके साथ मैं भी चलूँगा। वरदराज जो भी आदेश देंगे, उसका पालन करूँगा।"

इसके वाद दोनों मंदिर में आये। संध्या-आरती के वाद पुजारी अपने घर चला गया। धीरे-धीरे चारों ओर सन्नाटा छा गया। निर्जन मंदिर में दोनों चुपचाप वैठे रहे। काफी देर वाद सहसा कहीं से आवाज आयी—"वेटा कांचीपूर्ण, लगता है, आज तुम कुछ जानने आये हो। वोलो, क्या चाहते हो?"

कांचीपूर्ण ने कहा—"भगवन्, आप तो अन्तर्यामी हैं। सव कुछ जानते हैं। आपसे क्या छिपाऊँ? मैं इस वालक लक्ष्मण के लिए कृपा माँगने आया हूँ।"

वरदराज ने कहा—"मैं सव कुछ जानता हूँ। लक्ष्मण मेरा भक्त है। यह तो वास्तव में रामानुज है। इससे कह दो कि मैं ही जगत् का परमब्रह्म हूँ। जीव और ईश्वर का भेद सत्य है। मुमुक्षुओं के लिए संन्यास ही एकमात्र मार्ग है। भक्ति के लिए मेरी स्मृति की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे जो भक्त हैं, उनके शरीर त्यागने पर मैं उन्हें परमगति देता हूँ। यह महात्मा महापूर्ण से दीक्षा लेकर अपनी कामना पूर्ण कर ले।"

वरदराज की वाणी वन्द हो गयी। भगवान् के इस आशीर्वाद को सुनकर लक्ष्मण पुलकित हो उठा। उन्होंने उसके गुरु का नाम भी वता दिया।

कांचीपूर्ण ने उल्लसित होकर कहा—"वेटा, आज तुझे जो मिला, वह अव तक किसीको नहीं मिला है। भगवान् ने तेरा नाम 'रामानुज' रखा है। तुम धन्य हो। भगवान् ने तुम्हारे गुरु का नाम भी वता दिया। अव शीघ्र उनसे दीक्षा ले लो"

आज वहुत दिनों वाद लक्ष्मण की मनोकामना पूर्ण हुई।

× × ×

इधर यामुनाचार्य के निधन के वाद से श्रीरंगम-मठ की स्थिति खराब होने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगी थी। आलवारों का विश्वास था कि यामुनाचार्य द्वारा मनोनीत लक्ष्मणजी आचार्य-पद सम्हालेंगे, पर वे समाधिवाले दिन जो गायब हुए, सो गायब ही रहे।

एक दिन वरिष्ठ शिष्यों ने निश्चय किया कि चाहे जैसे भी हो, लक्ष्मणजी को यहाँ बुलाकर उन्हें आचार्य-पद पर अभिषिक्त किया जाय वरना वैष्णव-धर्म की बड़ी क्षति होगी। इस कार्य के लिए उन लोगों ने महापूर्ण से आग्रह किया। सभी इस बात को जानते थे कि यामुनाचार्य ने ही लक्ष्मणजी को लिवाने के लिए महापूर्ण को भेजा था।

गुरु-भाइयों के आग्रह पर महापूर्ण कांचीपुर के लिए रवाना हुए। मदुराकान्तम आकर वे विष्णु मंदिर के सामने स्थित तालाब के किनारे विश्राम कर रहे थे। ठीक इसी समय उन्होंने लक्ष्मण को अपनी ओर आते देखा। वह तेजी से आकर महापूर्ण के पैरों को पकड़कर बैठ गया।

हाँफते हुए लक्ष्मण ने कहा—"महात्मन्, आप मेरे गुरु हैं। मैं आपके पास आ रहा था। अब आप मुझे अपना लीजिए।"

महापूर्ण ने कहा—"इधर मैं तुम्हें अपने साथ श्रीरंगम ले जाने के लिए आ रहा था। तुम मेरे साथ श्रीरंगम चलो जो कुछ करना है, वहीं किया जायगा।"

लक्ष्मण ने कहा—"प्रभो, मैं उतने दिनों तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता। बिना विलम्ब किये मुझे तत्काल दीक्षा दीजिए।"

लक्ष्मण को गले से लगाते हुए महापूर्ण ने कहा—"जाओ वत्स, स्नान कर आओ। भगवान् रंगनाथ की कृपा से तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।"

लक्ष्मण जब स्नान करके आया तब वहीं महापूर्ण ने दीक्षा दी। इसके बाद दोनों कांचीपुर चले आये। यहाँ आकर महापूर्ण लक्ष्मण के घर रहने लगे। यामुनाचार्य के शिष्यों के परामर्श के अनुसार महापूर्ण लक्ष्मण को 'तमिल प्रबंध' पढ़ाने लगे। ज्ञान का रस मिलने के कारण लक्ष्मण अध्ययन में तल्लीन हो गये। फलतः घर की आर्थिक स्थिति खराब होती गयी।

कई बार पत्नी जमाम्बा[1] ने दबी जबान से शिकायत भी की, पर लक्ष्मण ने इधर ध्यान नहीं दिया। अपनी उपेक्षा होते देख जमाम्बा ने उग्र रूप धारण कर लिया। परिवार में बढ़ते कलह को देखकर एक दिन महापूर्ण चुपचाप श्रीरंगम चले गये।

घर वापस आने पर जब गुरुदेव दिखाई नहीं दिये तब लक्ष्मण ने सोचा—जमाम्बा के किसी अपराध के कारण गुरुदेव चले गये हैं। गुरु का अपमान लक्ष्मण को पीड़ा देने लगा। अन्त में एक दिन ससुराल-यात्रा करने का बहाना कर लक्ष्मण पत्नी को उसके पीहर में छोड़ आया। साधना-मार्ग में वह एक काँटा थी। इसके बाद

---

1. कुछ लोग रक्षाम्बा भी कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वरदराज मंदिर में जाकर साष्टांग प्रणाम करने के बाद उसने कहा—"भगवन्, अब मैं समस्त बन्धनों से मुक्त हो गया। आज से आपका सेवक बन गया।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद अपने मित्रों से परामर्श कर उसने संन्यास ग्रहण कर लिया। यह समाचार सम्पूर्ण कांचीपुर में फैल गया। कांचीपूर्ण इस समारोह में उपस्थित थे।

उन्होंने कहा—"अब आज से तुम भगवान् वरदराज द्वारा दिये गये नाम से जाने जाओगे। मैं तुम्हें अपनी ओर से 'यतिराज' की उपाधि देता हूँ। 'यतिराज रामानुज', तुम धन्य हो।"

× × ×

संन्यास-ग्रहण करते ही रामानुज श्रीरंगम आ गये। यहाँ आकर मंदिर की पूजा, मठ की व्यवस्था और शिष्यों को भागवत-धर्म का उपदेश देने लगे। इसी बीच उन्हें अपने भाई गोविन्द की याद आयी। उसे बुलाकर अपने मामा शैलपूर्ण से दीक्षा दिला दी।

मामा शैलपूर्ण ने एक दिन रामानुज से कहा—"वत्स, यहाँ तुमने द्वैतवाद का अध्ययन काफी कर लिया। गुरुदेव के सभी मूर्धन्य शिष्यों से भी ज्ञान प्राप्त कर लिया। मेरा अनुरोध है कि एक बार गुरुदेव (यामुनाचार्य) के प्रमुख शिष्य गोष्ठीपूर्ण से 'स-रहस्य' मंत्र की दीक्षा ले लो। उनके जैसा ज्ञानी पुरुष इस अंचल में कोई नहीं है।"

मामाजी की सलाह पर रामानुज तिरुकोट्टी गये। गोष्ठीपूर्ण इनके आने का आशय समझकर इन्हें वापस कर दिया। इससे वे निरुत्साहित नहीं हुए। वे थोड़े-थोड़े दिनों के अन्तर पर जाते रहे और गोष्ठीपूर्ण हर बार रामानुज को वापस कर देते रहे। इस प्रकार सत्रह बार वापस आने के बाद जब वे अठारहवीं बार गये तब गोष्ठीपूर्ण ने इन्हें 'स-रहस्य' मंत्र में दीक्षित किया। इस मंत्र को ग्रहण करते ही रामानुजम में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। सारा कष्ट, संशय, अज्ञान पलभर में दूर हो गया और उनमें अतीन्द्रिय-शक्ति जागृत हो गयी। इसके बाद वे गोष्ठीपूर्ण से विदा लेकर वापस चल पड़े।

मार्ग में नारायण मंदिर के पास आते ही उनमें सहसा नवचेतना जागृत हो गयी। मंदिर के पास खड़े होकर वे आने-जानेवालों से कहने लगे—"आप लोगों को आज मैं अमूल्य रत्न दूँगा। मेरा आग्रह है कि इस क्षेत्र में जितने लोग हैं, उन सभी को सूचना दें कि वे मंदिर के पास आ जायँ।"

अमूल्य रत्न पाने की आशा से अपार भीड़ इकट्ठी हो गयी। मंदिर के एक ऊँचे बुर्ज पर खड़े होकर रामानुज कहने लगे—"उपस्थित भाइयो तथा बहनो, अगर आप जीवन के सारे कष्टों से परित्राण पाना चाहते हैं, अपने भीतर आनन्द पाना चाहते हैं तो मेरे साथ इस मंत्र को दुहराएँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीड़ ने एक साथ कहा—"उस मंत्र को जल्द बताइये।"

रामानुज उच्चस्वर में कहने लगे—"ॐ नमो नारायणाय नमः। ॐ नमो नारायणाय नमः। ॐ नमो नारायणाय नमः।"

उपस्थित सभी लोगों ने तीन बार इसे दुहराया और तुरंत उन्होंने अनुभव किया कि उनके भाव में परिवर्तन हो गया।

यह समाचार तुरंत गोष्ठीपूर्ण के पास पहुँचा और वे आगबबूला हो उठे। रामानुज को बुलवाकर उन्होंने कहा—"अरे नराधम, तेरे जैसे व्यक्ति को महामंत्र देकर मैंने महापाप किया है। तुझे नरकवास होगा।"

रामानुज जरा भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने नम्र होकर कहा—"महात्मन्, आपने कहा था कि जो इस मंत्र को प्राप्त करेगा, उसे परमगति प्राप्त होगी। अगर मेरे नरकवास से इतने लोगों को मुक्ति मिल जाय तो मैं वैकुण्ठवास की अपेक्षा नरकवास अधिक पसन्द करूँगा।"

गोष्ठीपूर्ण इस उत्तर को सुनकर चौंक उठे। निस्सन्देह यह युवक मोह-मायाजाल से ऊपर उठ चुका है। तुरत रामानुज को गले लगाते हुए उन्होंने कहा—"सचमुच तुम महान् हो, धन्य हो। आज से तुम मेरे गुरु हुए। इतना बड़ा हृदयवाला व्यक्ति ईश्वर का अंश होता है।"

श्रद्धा के साथ गोष्ठीपूर्ण को प्रणाम करते हुए रामानुज ने कहा—"प्रभो, आप मेरे गुरु हैं। आपकी कृपा से ही सहस्र लोग धन्य हुए हैं।"

× × ×

श्रीरंगम में वापस आकर रामानुज पठन-पाठन में लग गये। इसी बीच उनका भाँजा आल्वान[1] और कुरेश भट्ट[2] ही नहीं, इनके गुरु यादव प्रकाश ने इनसे संन्यास ग्रहण किया। उन दिनों रामानुज जैसा विद्वान् और प्रतिभाशाली ज्ञानी भारत में अन्य कोई नहीं था।

एक दिन आल्वान ने गीता के चरम श्लोकों के बारे में अपनी जिज्ञासा प्रकट की। रामानुज ने कहा—"अभी नहीं, एक वर्ष बाद आना तब बताऊँगा। यदि इसके पूर्व जानना चाहते हो तो एक मास भिक्षान्न ग्रहण कर भोजन करो। इसके बाद आना।"

गुरु के आज्ञानुसार आल्वान ने एक मास तक भिक्षान्न संग्रह करके भोजन

---

१. अपर नाम दाशरथी था।

२. कुरेश भट्ट को कुरनाथ और मुड़ाली आंडाल भी कहा गया है। इसे एक भिखारी श्रीरंगम ले आया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। यह देखकर रामानुज ने उसे मंत्र दिया। आल्वान पर गुरुदेव की कृपा हुई है सुनकर कुरेश भट्ट भी गुरुदेव के निकट आया।

रामानुज यह जानते थे कि कुरेश को अपने ज्ञान तथा विद्वत्ता पर घमंड है। जब तक इसका घमण्ड दूर नहीं होगा तब तक मंत्र देना उचित नहीं है। कुरेश को टालने के लिए रामानुज ने कहा—"तुम्हें मेरे गुरु गोष्ठीपूर्ण के निकट जाना पड़ेगा। वे ही तुम्हें मंत्र देंगे।"

रामानुज की आज्ञा पाकर कुरेश लगातार छह मास तक गोष्ठीपूर्ण के यहाँ जाता रहा। जिस प्रकार वे रामानुज को टालते रहे, उसी प्रकार कुरेश को भी टालते रहे। उसकी लगन देखकर आखिर एक दिन गोष्ठीपूर्ण ने कहा—"वत्स कुरेश, तुम अपना सारा अभिमान त्याग दो और अपने गुरु की सेवा करो। वे ही तुम्हें मंत्र देंगे।"

इस राय को सुनकर कुरेश अपने गुरु के पास आकर उनकी सेवा करने लगा। कुछ दिनों के बाद वह मंत्र देने के लिए नये सिरे से प्रार्थना करने लगा, पर रामानुज बराबर टालते ही रहे। ठीक इन्हीं दिनों एक ऐसी घटना हो गयी जिसकी वजह से कुरेश से रामानुज को मुक्ति मिल गयी।

महापूर्ण की बेटी अत्तुला एक दिन रामानुज के पास आकर बोली—"भैया, मेरी ससुराल में काफी दूर से पानी लाना पड़ता है। मुझे रसोई बनाने में बड़ा कष्ट होता है। अपनी सास से जब अपनी परेशानी बतायी तो बोलीं कि पीहर से अपने साथ एक रसोइया लाती। यहाँ आकर मैंने पिताजी को अपनी मुसीबत सुनाई। उन्होंने मुझे आपके पास भेज दिया। अब बताइये, मैं क्या करूँ?"

कुछ देर सोचने के बाद रामानुज ने कुरेश को दिखाते हुए कहा—"इसे अपने यहाँ लेती जा। कुरेश तुम्हारे यहाँ भोजन बनाया करेगा।"

कुरेश बिना किसी आपत्ति के गुरुदेव के आदेश पर अत्तुला के साथ रवाना हो गया। अत्तुला उसे साथ लेकर अपनी ससुराल आ गयी।

छह-सात माह बाद की घटना है। अत्तुला की ससुराल में कई पंडित बैठे किसी श्लोक में उलझे हुए थे। कुरेश ने विनीत भाव से उस श्लोक का अर्थ बताया। अचानक एक पंडित नाराज होकर बोल उठा—"तू है रसोइया पंडित। तू शास्त्र की बात क्या जाने?"

कुरेश ने बिना क्रोध प्रकट किये कई श्लोकों की व्याख्या इस ढंग से की कि उपस्थित पंडित-मंडली चौंक उठी।

दूसरे पंडित ने विस्मय के साथ कहा—"जब आप इतने अच्छे जानकार हैं तब यहाँ रसोई क्यों बनाते हैं? आपको तो पठन-पाठन में लगे रहना चाहिए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुरेश ने कहा—"मैं यह कार्य अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि गुरुदेव की आज्ञा से कर रहा हूँ।"

वातचीत के सिलसिले में पंडितों को कुरेश के बारे में सारी जानकारी प्राप्त हो गयी। वे लोग रामानुज के पास आकर बोले—"प्रभो, आप कुरेश को ऐसी सजा क्यों दे रहे हैं? वह तो रत्न है"

पंडितों की सारी बातें सुनने के बाद रामानुज प्रसन्न हो गये। कुरेश को वहाँ से बुलाकर उन्होंने मंत्र दिया। इस प्रकार चिरप्रतीक्षित आशीर्वाद कुरेश को प्राप्त हो गया।

पंडित यामुनाचार्य के शिष्यों में गोष्ठीपूर्ण, महापूर्ण, मालाधर, कांचीपूर्ण और वररंग कुल पाँच प्रमुख शिष्य थे। इनमें से प्रत्येक अपने विषय के अलावा अन्य विषय से सम्पर्क नहीं रखता था। रामानुज ने इन सभी से उनके विषयों का अध्ययन किया। इस प्रकार वे संपूर्ण विषयों के एकमात्र आचार्य हुए।

जिस माया को शंकराचार्य ने सत्य-असत्य से परे अनिर्वचनीय बताया था, उसे रामानुज ने सत्य कहा और चित्-अचित् से विशिष्ट ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन किया। यही कारण है कि इनके वाद को 'विशिष्टाद्वैत' कहा गया है। इसी विषय पर एक बार रामानुज को शास्त्रार्थ करना पड़ा था।

श्री यज्ञमूर्ति से इसी विषय पर जब शास्त्रार्थ होने लगा तब रामानुज अपने को कमजोर महसूस करने लगे। यज्ञमूर्ति के तर्कों का समुचित उत्तर दे पाने में अपने को असमर्थ पाने लगे। उसी दिन वरदराज-विग्रह के सामने जाकर रामानुज रोते हुए बोले—"भगवन्, मेरे सभी मतों का खंडन होता जा रहा है। मैं निरुपाय होता जा रहा हूँ। मेरी रक्षा करते हुए वैष्णव-मत को बचाने की कृपा करें"

कहा जाता है कि उसी रात को स्वप्न में वरदराज भगवान् ने आकर कहा—"कल तुम्हारी विजय होगी।"

दूसरे दिन जब रामानुज सभा में आये तब इनके दमकते हुए चेहरे को देखकर यज्ञमूर्ति हतप्रभ रह गये। कल की पराजय की छाप का कहीं पता नहीं था। उसके स्थान पर अपूर्व ज्योति प्रस्फुटित हो रही थी। उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि आज इन्हें दैव-बल प्राप्त हो गया है। अब इन्हें पराजित करना कठिन है। थोड़ी ही देर के शास्त्रार्थ में यह स्पष्ट हो गया कि यज्ञमूर्ति के तर्क कमजोर पड़ रहे हैं। मन में यह भावना उत्पन्न होते ही वे रामानुज के चरणों पर गिर पड़े। बोले—"महाराज, मैं अपनी पराजय स्वीकार करता हूँ।"

✕ ✕ ✕

शिष्यों, भक्तों तथा गुरु-भाइयों से हुई बातचीत से रामानुज ने अनुभव किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि केवल शिष्य बनाने और लोगों को उपदेश देने से वैष्णव-धर्म में स्थायित्व नहीं आ सकता। इसके लिए आवश्यक है कि पूर्ववर्ती विद्वानों के ग्रंथों का पुनर्लेखन हो ताकि सारा दर्शन सुलभ हो सके। इस विचार को कार्यरूप देने के लिए रामानुज ने आल्वान को गणेश बनाया और 'ब्रह्मसूत्र' का भाष्य लिखवाने लगे।

एक दिन रामानुज ने कहा—"जीव नित्य और ज्ञाता है।"

सहसा आल्वान की लेखनी रुक गयी। यह देखकर रामानुज चिन्तित हो उठे। निश्चित रूप से कहीं गलती हो गयी है। लाख प्रयत्न करने पर भी वे अपनी भूल को समझ नहीं पाये। क्रोध के वशीभूत होकर उन्होंने आल्वान को पदाघात किया और आश्रम से बाहर निकल गये।

कावेरी-तट पर आकर वे चिन्तन करने लगे। धीरे-धीरे उनका क्रोध शान्त हो गया तभी उन्हें अपनी भूल ज्ञात हुई। तुरत आश्रम आकर उन्होंने आल्वान से क्षमा माँगी। गुरुदेव को इस कदर व्याकुल देख उसने उनके चरण पकड़कर रोते हुए कहा—"प्रभो, मैंने जान-बूझकर ऐसा नहीं किया, बल्कि स्वतः मेरी लेखनी रुक गयी।"

"नहीं वत्स। वह मेरी भूल थी। उसके स्थान पर मुझे कहना चाहिए था—'विष्णुकर्तृक अधिष्ठितत्व'।"

आल्वान की सहायता से आचार्य रामानुज ने क्रमशः वेदान्तदीप, वेदान्तसार-संग्रह, गीताभाष्य, नित्याराधन-विधि एवं गद्यत्रय नामक ग्रंथों की रचना की। इन ग्रंथों का लेखन-कार्य समाप्त होने के बाद वे भारत-भ्रमण के लिए चल पड़े।

विभिन्न प्रान्तों का भ्रमण करते हुए वे काश्मीर आये। यहाँ का 'शारदा-क्षेत्र' विद्या के लिए प्रसिद्ध था। कहा जाता था कि व्यक्तिविशेष के सामने सरस्वती देवी प्रकट होती हैं। स्वामी रामानुज राज्य में आये हैं सुनकर वहाँ के तत्कालीन राजा ने दरबार में उनका स्वागत किया।

रामानुज ने कहा—"राजन्, मेरा यहाँ आने का एक उद्देश्य है। सुना है कि आपके शारदा-सदन में 'बोधायन-वृत्ति' की मूल प्रति है। मैंने ब्रह्मसूत्र का भाष्य लिखा है, पर मैं उस प्रति को एक बार देखना चाहता हूँ ताकि मेरा संशय दूर हो जाय।"

राजा की आज्ञा से उन्हें मूल प्रति प्राप्त हो गयी। रामानुज और कुरेश दोनों व्यक्ति उसका विधिवत् अध्ययन करते रहे। उन्हें संतोष हो गया कि उनका भाष्य ठीक है। कहा जाता है कि जब रामानुज सरस्वती देवी के मंदिर में गये तब देवी इनके सामने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हुई थीं। रामानुज ने देवी के हाथों पर ब्रह्मसूत्र भाष्य की पाण्डुलिपि रख दी।

सरस्वती देवी ने उसका अवलोकन करने के बाद कहा—"वास्तव में तुम योग्य भाष्यकार हो। इसी नाम से ख्याति प्राप्त करोगे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामानुज की अपूर्व शक्ति, ज्ञान और विद्वत्ता को देखकर काश्मीर-नरेश इनका शिष्य बन गया। एक बाहरी संन्यासी के बढ़ते प्रभाव को देखकर काश्मीरी पंडित चिढ़ गये। एक परदेशी विद्वान् आकर अपने यहाँ अपना प्रभाव जमाये यह उनके लिए असह्य हो उठा। उन लोगों ने अभिचार-क्रिया की। इससे आचार्य को कष्ट होने लगा। कारण ज्ञात होते ही उन्होंने अपनी कार्यवाही की।

काश्मीर के नागरिकों ने एक दिन आश्चर्य के साथ देखा कि उनके यहाँ के अधिकांश पंडित दिगम्बर रूप में सड़कों पर दौड़ रहे हैं। सभी के लिए यह अद्भुत दृश्य था। घटना का विवरण राजा के पास पहुँचा। वे रामानुज के पास आकर इस आचरण के कारण पूछने लगे।

रामानुज ने कहा—"राजन्, मुझे मार डालने के लिए इन पंडितों ने अभिचार-क्रिया की। मैंने कुछ नहीं किया। मैंने इनकी क्रिया को हल्की करके इन्हें वापस कर दिया, इसलिए ये लोग नृत्य कर रहे हैं।"

राजा के रहस्य समझते देर नहीं लगी। उन्होंने कहा—"जो हो गया, सो हो गया। अब आप शीघ्र इसे रोकिये। यह राजा की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। मुझे इन्हीं लोगों को लेकर काम चलाना है। आप तो यहाँ से चले जायेंगे।"

अपना चरणोदक देते हुए रामानुज ने कहा—"इन पंडितों पर यह जल छिड़कवा दीजिए। सब ठीक हो जायगा।"

काश्मीर से रामानुज विभिन्न नगरों में वैष्णव-धर्म का प्रचार करते हुए, कई महीने बाद श्रीरंगम वापस आ गये।

× × ×

यहाँ कुछ दिनों विश्राम करने के बाद उन्होंने एक दिन निश्चय किया कि इस बार गरुड़ोत्सव धूमधाम से मनाया जाय। नगर के सभी लोग इस उत्सव में भाग लेंगे। यह समाचार पूरे नगर में फैल गया। निश्चित दिन लोगों की अपार भीड़ हुई। गलियों के सभी भवनों की छत, बरामदे और खिड़कियों पर दर्शकों की अपार भीड़ जमा हो गयी। आचार्य रामानुज इस शोभायात्रा का नेतृत्व स्वयं कर रहे थे, इसलिए भक्तजनों में अपार उत्साह था। दर्शक रथ के पास आकर भगवान् को साथ लाये नैवेद्य अर्पित करते रहे। वापस जाते समय आचार्य का चरण-रज लेते रहे। श्रीरंगम के लिए यह अपूर्व घटना थी।

चलते-चलते रथ एक चौराहे पर रुका। नागरिकों में नैवेद्य चढ़ाने के लिए होड़ लगी हुई थी। ठीक इसी समय आचार्य की दृष्टि एक बलिष्ठ युवक पर पड़ी। वह युवक एक विशाल छत्र लिए एक महिला के पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी दृष्टि रथ की ओर न होकर महिला के चरणों पर थी। लोग उसकी इस हरकत को देखकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हँस रहे थे, पर वह अपने भाव में मग्न था। युवक के इस मनोयोग को देखकर आचार्य ने एक शिष्य से कहा कि जाकर उसे बुला लाओ।

शिष्य ने वापस आकर कहा—"भगवन्, उसने कहा कि इस वक्त मैं बहुत व्यस्त हूँ। कल सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा।"

अगले दिन रामानुज अपने छात्रों को भाष्य पढ़ा रहे थे। ठीक इसी समय कल-वाला युवक आया और हाथ जोड़कर एक ओर खड़ा हो गया।

आचार्य ने पूछा—"वत्स, क्या नाम है तुम्हारा ?"

"सेवक का नाम धनुर्दास है, प्रभो।"

"तुम कौन हो, क्या करते हो ?"

"मैं जाति से शूद्र और पेशे से पहलवान हूँ।"

"कल रथोत्सव के समय किसके साथ जा रहे थे ?"

"कल रथोत्सव था ? इसकी जानकारी मुझे नहीं थी। मैं ····· मैं तो ····· ····" लज्जा से सिर झुकाते हुए उसने कहा—"अपनी प्रेयसी हेमाम्बा के साथ जा रहा था।"

"आखिर हेमाम्बा में ऐसी कौन-सी खूबी है जिसके कारण तुम्हें रथोत्सव का भी ध्यान नहीं रहा ?"

धनुर्दास ने कहा—"भगवन्, उसकी आँखों की कोई तुलना नहीं है।"

रामानुज ने कहा—' यदि मैं उससे भी सुन्दर आँखें दिखा दूँ तो ···· ···· ।"

"यह असंभव है।"

आचार्य ने कहा—"अच्छी बात है। आज शाम को आरती के समय मेरे साथ मंदिर चलना।"

"जो आज्ञा।" कहने के पश्चात् वह चला गया।

सायंकाल आरती के समय आचार्य के साथ वह रंगनाथजी के मंदिर में हाथ जोड़े खड़ा था। आरती के समय भगवान् की आँखें रत्न की तरह चमकने लगीं। इस दृश्य को देखकर धनुर्दास हक्का-बक्का रह गया। तुरन्त आचार्य के चरणों को पकड़कर बोल उठा—"भगवन् आज आपने मेरी आँखें खोल दीं।"

इसके पूर्व वह कई बार मंदिर आया था, पर विग्रह की ऐसी आँखें नहीं देख सका था। इस घटना का प्रभाव उस पर ऐसा पड़ा कि घर-द्वार सब कुछ छोड़कर आचार्य की सेवा में आ गया। धनुर्दास के इस परिवर्तन का प्रभाव हेमाम्बा पर भी पड़ा। प्रेयसी होते हुए भी वह धनुर्दास को अपना पति मानती थी। वह भी अपने पति के साथ आचार्य की शिष्या बन गयी।

अब आचार्य पहले की अपेक्षा वृद्ध हो गये थे। नित्य कावेरी में स्नान करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाते समय ब्राह्मण शिष्य का सहारा लेकर जाते थे, पर लौटते समय धनुर्दास के अलावा अन्य किसीका सहारा नहीं लेते थे। आचार्यजी का यह व्यवहार ब्राह्मण शिष्यों को खलने लगा।

आखिर एक दिन अपने असंतोष को उन लोगों ने आचार्य के निकट प्रकट कर दिया। सारी बातें सुनने के बाद आचार्य ने कहा—"यह ठीक है कि वह शूद्र है, पर वह कितना महान् है, इसे कभी तुम लोगों ने देखा है? शायद अभी तक उसे समझ नहीं सके हो।"

रामानुज ने देखा कि उनके उत्तर से शिष्य संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने इसके लिए उपाय सोच लिया था। एक दिन एक छात्र को बुलाकर उन्होंने कहा—'आज रात तुम्हें एक कार्य करना है। जब सभी शिष्य सो जायें तब सभी के कौपीनों से थोड़ा-थोड़ा कपड़ा काट लेना। इसके बाद क्या होता है, यह आकर मुझे बताना। लेकिन याद रखना कि सारा काम चुपचाप हो। यह बात हम दोनों के अलावा कोई जानने न पाये।"

दो दिन बाद यह घटना हुई। इस प्रकार कौपीन कट जाने पर सभी शिष्य आपस में लड़ने लगे और एक-दूसरे को अपशब्द कहने लगे। उसी दिन लड़नेवाले छात्रों में से कुछ लोगों को बुलाकर आचार्य ने कहा—"आज जब मैं रात के समय धनुर्दास से बातें करता रहूँगा, उस समय तुम लोग उसके घर चले जाना और उसकी पत्नी के सारे जेवर चुरा लाना।"

आचार्य ऐसा आदेश देंगे, इस बात पर किसीको विश्वास नहीं था। लेकिन गुरु के आदेश के विरुद्ध कोई कुछ बोल नहीं सका।

उधर ठीक समय पर ब्राह्मण शिष्य चोरी करने पहुँचे और इधर धनुर्दास आचार्य से उपदेश ग्रहण कर रहा था। चोरी करनेवालों ने उसके घर जाकर देखा—हेमाम्बा गहरी नींद में सोयी हुई है। वे सब शीघ्रतापूर्वक जेवर उतारने लगे। एक ओर के जेवर जब उतर चुके तब एकाएक हेमाम्बा ने करवट बदली। चोरों ने समझा कि हेमाम्बा जाग गयी है। वे तुरन्त भाग खड़े हुए।

उनके मठ में प्रवेश करते ही आचार्य ने समझ लिया कि वे लोग आ गये हैं तब उन्होंने धनुर्दास से कहा—"अब तुम अपने घर जा सकते हो।"

धनुर्दास के जाने के बाद आचार्य ने चोरी करनेवाले शिष्यों से कहा—"अब तुम लोग पुनः उसके घर जाओ। धनुर्दास तथा हेमाम्बा में क्या बातें होती हैं छिपकर सुनना और तब आकर बताना।"

गुरु के आदेश पर सभी पुनः धनुर्दास के भवन में आये और छिपकर पति-पत्नी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की वातें सुनने लगे। कमरे में प्रवेश करते ही धनुर्दास ने पूछा—'अरे, यह कैसी शक्ल वना रखी है तुमने ? यह कोई शृंगार है ?"

हेमाम्वा ने कहा—"अव क्या वताऊँ ? तुम जिस वक्त आचार्यजी के आश्रम में थे उस वक्त कुछ चोर आये। मैंने सोचा कि वेचारे अभावग्रस्त हैं, इसलिए यह कुकर्म करने आये हैं। जव वे एक ओर के आभूषण उतार चुके तव मैंने करवट वदली ताकि दूसरी ओर का भी उतार लें। लेकिन मेरा दुर्भाग्य, मैं जाग गयी हूँ, समझकर सव भाग गये।"

धनुर्दास ने कहा—"हाँ वास्तव में यह तुम्हारा दुर्भाग्य ही रहा। तुम अभी तक यही सोचती हो कि सारी सम्पदा तुम्हारी है। तुम पर आचार्यश्री के उपदेशों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। अरी पगली, यह सारी सम्पदा भगवान् की है। अगर तुम चुपचाप सोयी रहती तो वे अन्य सामान भी ले जाते।"

शिष्यों की जवानी सारी वातें सुनने के वाद उन्होंने कहा—'अरे मूर्खो' सोचो एक शूद्र का हृदय कितना विशाल है और एक तुम सव हो कि कौपीन से कुछ अंश गायव हो गया तो आपस में लड़ने लगे।"

आचार्य की फटकार सुनकर सभी लज्जित हो उठे। अव उनकी समझ में आया कि धनुर्दास के प्रति आचार्य की इतनी ममता क्यों है ?

एक दिन आचार्यजी के शिष्यों ने एक अद्‌भुत दृश्य देखा। उस दिन आचार्य ध्यानमग्न होकर वैठे थे। सहसा दादागुरु महापूर्णजी आये। उन्होंने आचार्यश्री को साष्टांग प्रणाम किया, फिर चुपचाप चले गये। शिष्यों को इस वात पर आश्चर्य हुआ कि दादागुरु ने हमारे गुरु को प्रणाम क्यों किया ?

कुछ देर वाद जव आचार्यजी का ध्यान भंग हुआ तव एक शिष्य के प्रश्न करने पर उन्होंने कहा—'गुरु के प्रति शिष्य का जो कर्त्तव्य है, वही उन्होंने किया।"

इस उत्तर से वे और उलझ गये। दादागुरु महापूर्णजी तो आचार्यजी के गुरु हैं। फिर यह कैसी वात ? वे इस समस्या को सुलझाने के लिए महापूर्ण के पास आये। शिष्यों की शंका को सुनकर उन्होंने कहा—"मैंने अपने गुरुदेव यामुनाचार्यजी को रामानुज के शरीर में देखकर प्रणाम किया था।"

दादागुरु की वातें सुनकर सभी शिष्य अवाक् रह गये। अव उन्हें समझते देर नहीं लगी कि उनके गुरु असाधारण हैं।

इसी प्रकार की एक और घटना कुरेश ने देखी थी। गुरुदेव एक व्यक्ति को इशारे से अपने पास वुला रहे थे। कुरेश को यह ज्ञात था कि यह व्यक्ति पूर्ण रूप से गूँगा और वहरा है। इसे गुरुदेव अपने कमरे में क्यों वुला रहे हैं। कुतूहलवश वह खिड़की के पास जाकर छिप गया और भीतर का दृश्य देखने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुदेव ने इशारे से कहा—"मेरे पैरों को स्पर्श कर।"

गूँगे ने ज्यों ही उनके चरण स्पर्श किये त्यों ही वह बोल उठा—"गुरुदेव, भगवन्।"

× × ×

श्रीरंगम चोल राज्य का अंग था। चोल का राजा शैव-धर्म का अनुयायी था। अपने राज्य में बढ़ते वैष्णव-धर्म के प्रभाव को देखकर वह चिढ़ गया। राज्य के सभी ब्राह्मणों को दरबार में बुलवाकर प्रत्येक से लिखवाने लगे—"मैं शैव-मत का हूँ।"

यहाँ तक कि एक बार कुरेश के एक शिष्य को लोग पकड़कर दरबार में ले गये। उससे जब हस्ताक्षर करने को कहा गया तब उसने इनकार कर दिया। राज-रोष बढ़ गया। सभा में उपस्थित पंडितों ने कहा—"महाराज, ये लोग रामानुज के शिष्य हैं। समग्र भारत में वैष्णव-धर्म की डंका बजा रहे हैं। आप जब तक इनके गुरु रामानुज को वशीभूत नहीं करेंगे तब तक कुछ नहीं होगा।"

राजा ने कहा—"ठीक है। रामानुज को पकड़कर लाया जाय।"

यह समाचार सैनिकों के पहुँचने के पहले ही श्रीरंगम पहुँच गया। उस समय आचार्य कावेरी में स्नान करने गये थे। कुरेश ने तड़ित-बुद्धि से काम लिया। उसने आचार्य के वस्त्रों को पहन लिया। सैनिक आचार्य को पहचानते नहीं थे। कुरेश को रामानुज समझकर पकड़कर ले गये। जब यह समाचार महापूर्ण को ज्ञात हुआ तब वे भी कुरेश के साथ चल दिये।

इधर नदी किनारे स्नान करते समय आचार्य को सारा समाचार तुरन्त मालूम हुआ। उन्होंने घोषणा की कि वे स्वयं चोलराज के दरबार में जायेंगे। आचार्य के निर्णय का शिष्यों ने घोर विरोध किया। शिष्यों ने सुझाव दिया कि इससे अच्छा होगा कि आप चोलराज के राज्य के बाहर जाकर कहीं आश्रय ग्रहण करें। आपके मृत्यु-दण्ड से वैष्णव-धर्म का विनाश हो जायगा। चोलराज को जब यह ज्ञात होगा कि उसके सैनिक आचार्य के बदले किसी और को पकड़ लाये हैं तब वह पुनः आपको पकड़ने के लिए सैनिक भेजेगा। अतएव आप यथाशीघ्र यहाँ से प्रस्थान करें। आगे जो होगा, उसे देखा जायगा।

शिष्यों के विरोध करने पर आचार्य ने अपना निश्चय बदल डाला। उन लोगों के अनुरोध पर वे चोल राज्य के बाहर रवाना हो गये।

उधर अपनी असफलता से क्रुद्ध होकर चोलराज ने कुरेश और महापूर्ण की आँखें निकाल देने की सजा दी।[1] महापूर्ण १०५ वर्ष के वृद्ध थे। वे इस आघात को

१. डॉ० के० ए० नीलकंठ शास्त्री अपनी पुस्तक 'दक्षिण भारत का इतिहास' में इस घटना को स्वीकार नहीं करते। पृ० ३७३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहन नहीं कर सके। उनका निधन हो गया। कुरेश कुछ लोगों की सहायता लेकर श्रीरंगम लौट आया।

× × ×

आचार्य श्रीरंगम से रवाना होकर यथाशीघ्र चोल राज्य के बाहर निकल आये। कुछ दिनों बाद वे नृसिंहपुर पहुँचे। वैष्णव-धर्म का प्रचार करते हुए दो बार यहाँ इसके पूर्व आचार्य आये थे। इस बार आने पर नृसिंहदेव के पुजारियों ने इनका हार्दिक स्वागत किया। उन्हें इस बात की कल्पना नहीं थी कि आचार्यजी पुनः दर्शन देंगे।

नृसिंहपुर के निवासियों को जब आचार्यजी के इस बार सहसा आने का कारण मालूम हुआ तो वे क्रोध से पागल हो उठे। उन लोगों ने चोलराज के विरुद्ध अभिचार-क्रिया करने का संकल्प किया। आचार्य के मना करने पर भी उन लोगों ने उनके अनुरोध को स्वीकार नहीं किया। इस क्रिया के कारण चोलराज के गले में घाव हो गया। कुछ दिनों तक तड़पने के बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

कुछ दिनों बाद श्रीरंगम ने आचार्य को कुरेश, महापूर्ण के साथ हुई घटनाओं की सूचना दी। चोलराज के निधन का समाचार दिया। यह सब सुनकर आचार्य बेहोश हो गये।

गुरुदेव की यह स्थिति देखकर सभी चिन्तित हो उठे। दिनभर सेवा करने के बाद वे स्वस्थ हुए। दूसरे दिन रामानुज ने अपने गुरु का श्राद्ध सम्पन्न किया। अभी यह घाव भरा नहीं था कि पूज्यपाद गोष्ठीपूर्ण के निधन का समाचार आया। इन सभी घटनाओं के कारण वे अत्यन्त मर्माहत हुए और देर तक रोते रहे।

कई रोज बाद जब उनका हृदय शान्त हुआ तब उन्होंने घोषणा की कि अब श्रीरंगम की यात्रा करूँगा। यहाँ एक अर्से तक निवास करने के कारण नृसिंहपुर के निवासियों के निकट आचार्य देवतुल्य हो गये थे। अब आचार्य यहाँ से चले जायेंगे, सुनकर सभी विद्रोही हो गये।

आचार्य ने उन्हें समझाते हुए कहा—"मैं हमेशा आप लोगों के बीच मौजूद रहूँगा। व्याकुल होने की आवश्यकता नहीं है।"

आचार्य ने अपनी एक प्रस्तर-मूर्ति बनवाकर उन्हें समर्पित की और कहा—'यही मेरा प्रतिनिधि है।"

'हमें प्रतिनिधि नहीं चाहिए। हम आपको चाहते हैं। आप यहाँ रहेंगे तो हम आपसे जो चाहेंगे, वह मिलेगा। प्रस्तर की मूर्ति क्या देगी ?"

यह सुनकर आचार्य क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने कहा—"आप लोग बड़े अविश्वासी हैं। इस प्रस्तर-मूर्ति से आपने कुछ माँगा जो आपको नहीं मिला ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस फटकार को सुनते ही भय के कारण लोग वहाँ से हट गये। दूर एक जगह प्रस्तर-मूर्ति को रखने के बाद उन लोगों ने मूर्ति से कहा—'आचार्यजी, हमारा प्रणाम स्वीकार करें।"

मूर्ति ने जवाब दिया—"आयुष्मान् भव। वैष्णव-मत के अनुयायी बनकर लक्ष्मीनारायण के प्रति भक्ति करो।"

× × ×

श्रीरंगम वापस आकर वे सबसे पहले कुरेश से मिले। भगवान् रंगनाथ की पूजा करने के पश्चात् वे वरदराज से लगातार एक-एक कर तीन बार प्रार्थना करते रहे। इसके बाद एक दिन कुरेश को सामने बैठाकर उसकी आँखों पर हाथ फेरने लगे। देखते ही देखते कुरेश को पुनः दृष्टि मिल गयी।

× × ×

मठ में एक दही बेचनेवाली नित्य आकर दही दे जाती थी। दही लेने के बाद उससे कहा जाता था कि जरा बैठो, अभी पैसे मिलते हैं।

एक दिन हराचार्य नामक एक शिष्य ने उसे प्रसाद खाने को दिया। प्रसाद खाते ही बालिका की सुप्त प्रवृत्ति जाग उठी। उसने दही के पैसों के बदले मोक्ष की माँग की।

उसकी बातें सुनकर उपस्थित लोग हँसने लगे। एक वृद्ध ने कहा—'मोक्ष कोई सरल वस्तु नहीं है बेटी। जाओ, घर चली जाओ।"

बालिका को उपदेश नहीं, मोक्ष चाहिए था। लगी वह जिद् करने। लोग उसे जितना समझाते, उतनी ही वह जिद् करती। शोरगुल सुनकर आचार्य रामानुज आये। उन्होंने कहा—"एक काम करो, बेटी। तुम यहाँ से वेंकटाचल चली जाओ। वे तुम्हें मोक्ष दे देंगे।"

बालिका ने कहा—"ठीक है, पर वे मुझे पहचानेंगे कैसे? आप उनके नाम एक पत्र लिखकर दीजिए।"

बालिका की सरल बातों का प्रभाव पड़ा। आचार्यजी सब समझ गये। उन्हें पत्र लिखते देख शिष्यों को आश्चर्य हुआ, पर किसीने कोई प्रश्न नहीं किया।

बालिका वह पत्र लेकर वेंकटाचल गयी। विग्रह के सामने पत्र रखती हुई बोली—"मुझे यह पत्र आचार्य रामानुज ने दिया है। कृपया मुझे मोक्ष दीजिए।"

इतना कहकर वह साष्टांग प्रणाम करने लगी तो फिर नहीं उठी। उसकी आत्मा वेंकटाचल-विग्रह में लीन हो गयी।

× × ×

इन सभी घटनाओं के साठ वर्ष बाद की बात है। रामानुज अब काफी जर्जर हो गये थे। इस बीच धनुर्दास हेमाम्बा, शैलपूर्ण, कुरेश आदि का निधन हो गया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आल्वान को मंदिर की पूजा का भार सौंप दिया गया था। एक दिन शिष्यों ने आचार्य से कहा—"भगवन्, अगर आप अनुमति दें तो आपकी दो प्रस्तर-मूर्तियाँ बनवायी जायें ताकि सम्प्रदाय के भक्त आपकी पूजा करते रहें।"

आचार्य ने अनुमति प्रदान की। मूर्तियाँ तैयार हो गयीं। एक दिन कावेरी में स्नान करने के बाद आचार्य अपनी प्रस्तर-मूर्तियों के सामने आकर खड़े हो गये। उन्होंने दोनों विग्रहों में अपनी शक्ति का संचार किया।

इसके बाद उन्होंने कहा—"आज मेरा काम पूरा हो गया। अब मैं विश्राम करना चाहता हूँ।"

शिष्य गोविन्द की गोद में सिर और शिष्य आंध्रपूर्ण की गोद में पैर रखकर वे समाधिस्थ हो गये। थोड़ी ही देर बाद गोविन्द ने देखा कि ब्रह्मरंध्र भेदकर आचार्यजी महाप्रयाण कर गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

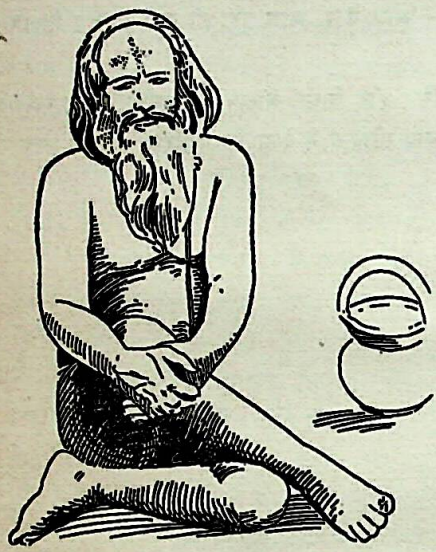

रामदास काठिया बाबा

जिला अमृतसर के एक गाँव का नाम है—लोना चमारी। इस गाँव में एक परमहंस बाबा एक अर्से से रहते थे। सिद्ध पुरुष थे। उनके आशीर्वाद से कुछ लोगों का कल्याण हुआ था, इसलिए सभी किसान बाबा के प्रति श्रद्धा रखते थे। घर में किसी प्रकार का शुभ कार्य प्रारंभ करने के पहले लोग उनके पास जाकर अनुमति लेते थे। स्नान करने के बाद या बाबा की कुटिया के पास से गुजरनेवाले लोग बाबा को दण्डवत् करते थे।

इसी गाँव का एक बालक जब कभी इधर आता तब लोगों को प्रणाम करते देखता तब उसे अपार आश्चर्य होता। आखिर सभी लोग इस बाबा को प्रणाम क्यों करते हैं? गाँव में और भी लोग हैं, किसीको हर कोई प्रणाम नहीं करता। लगता है, बाबा बहुत बड़े आदमी हैं। इस प्रश्न के निराकरण के लिए किसीसे कुछ पूछने का साहस नहीं होता था। उसने सोचा कि सबसे सरल उपाय है—बाबाजी से इस सवाल का जवाब पूछूंगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ दिनों बाद बाबाजी की कुटिया की ओर से जाते समय बालक ने देखा—बाबा अकेले बैठे हैं। अपनी आदत के अनुसार वह निर्द्वन्द्व होकर बाबा के पास पहुँच गया। उसके आने पर बाबा अक्सर उसे मिठाई या फल खाने को देते थे। इसी लालच से वह कभी-कभी घंटों बेकार बैठा फालतू बातें किया करता था।

उस दिन बिना किसी भूमिका के उसने पूछा—"बाबाजी, इस दुनिया में आप सबसे बड़े आदमी हैं।"

बाबा ने हँसकर पूछा—"वह कैसे ?"

बालक ने कहा—"आपके पास जो आता है, वही दण्डवत् करता है। अच्छा, यह बताइये कि आप कैसे इतने बड़े आदमी हो गये ?"

शिशु-सुलभ प्रश्न से बाबा आत्मविभोर हो उठे। स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा—"भूख लगी है। लो, खाओ।"

बाबा के हाथ से मिठाई लेकर खाते हुए उसने पुनः प्रश्न किया—'बताइये न ? मैं भी आपकी तरह बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ।"

बाबाजी हँस पड़े। बोले—"तो यह बात है। तू भी बड़ा आदमी बनना चाहता है ? देख बेटा, मैं हमेशा राम-राम कहता हूँ। राम-नाम के कारण बड़ा आदमी बना हूँ। तू भी हमेशा राम-राम कहना। इसके बाद मेरी तरह एक दिन बड़ा आदमी बन जायगा।"

बालक ने कहा—"राम-नाम कहने से अगर बड़ा आदमी बना जा सकता है तो मैं जरूर कहूँगा।"

यह घटना उस समय की है जब बालक की उम्र चार साल की थी। बचपन में जब कोई बात दिल में पैठ जाती है तब उसका व्यापक असर पड़ता है। बालक पर राम-नाम जपने का नशा सवार हो गया। बाबाजी के पास जाने पर वे उसे और उत्साहित करते थे।

कुछ दिनों बाद बालक रामदास के जीवन में एक अद्भुत घटना हुई। नित्य सवेरे जलपान करने के बाद वह घर की भैंसों को लेकर दूर चराने ले जाता था। कुल चार भैंसें थीं। एक दिन वह उन भैंसों को मैदान में छोड़कर पीपल की छाँह में बैठा राम-नाम जप रहा था। ठीक इसी समय एक बाबाजी न जाने किधर से आये और उससे कहा—'बच्चा, कुछ खिलाओगे, बड़ी भूख लगी है।"

रामदास ने कहा—"जरूर खिलाऊँगा, बाबा। आप एक काम कीजिए। यहाँ बैठकर मेरी भैंसों पर नजर रखिये तब तक मैं आपके लिए घर से खाने का सामान ले आता हूँ।"

साधु ने कहा—"ठीक है, बेटा। मैं तुम्हारी भैंसों की रखवाली करता हूँ। तुम मेरे लिए भोजन ले आओ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदास दौड़ता हुआ घर पहुँचा तो देखा कि सभी लोग खा-पीकर सो गये हैं। वह भंडारघर से आटा-दाल लेकर आया। सारी सामग्री देते हुए कहा--'इसे बनाकर आप खा लीजिए। मैं पानी ला देता हूँ।"

भोजन करने के बाद साधु ने कहा—"बेटा, तुम योगिराज बनोगे।"

रामदास ने कुतूहलवश पूछा—"यह कैसे होगा, बाबा? मेरे माता-पिता हैं, भाई हैं, भैंस हैं। मैं नित्य पाँच सेर दूध पीता हूँ। मैं योगिराज कैसे बन सकता हूँ?"

साधु ने कहा – बच्चा, जब मेरे मुँह से यह आशीर्वाद निकल गया तब होकर ही रहेगा। तुम योगिराज अवश्य बनोगे।"

इतना कहकर साधु महाराज चल पड़े और कुछ दूर आगे जाते ही हवा में गायब हो गये। दूर-दूर तक देखने पर भी वे दिखाई नहीं दिये। रामदास को लगा जैसे उसके मन में कुछ परिवर्तन हुआ है। क्या हुआ है, समझ नहीं पाया।

समयानुसार उसका उपनयन हुआ और फिर उसे पाठशाला में पढ़ने के लिए भेज दिया गया। उसकी धी-शक्ति देखकर गुरुजी दंग रह गये। एक बार जिस पुस्तक को वह पढ़ लेता मानो वह कंठस्थ हो जाता था। इसी गुण के कारण गुरुजी अन्य छात्रों की अपेक्षा उसे अधिक स्नेह देते थे। यह देखकर पाठशाला के अन्य छात्र जलने लगे। सभी छात्रों ने मिलकर षड्यंत्र किया।

एक दिन छात्रों ने गुरुजी से शिकायत की कि रामदास पाठ्य-पुस्तक पढ़ता नहीं। जब देखो तब माला फेरता रहता है। आप चाहे तो किसीसे पूछ लीजिए। सभी छात्रों के स्वीकार करने पर गुरुजी ने रामदास को बुलाकर पूछा— क्यों रे, यहाँ माला फेरने आता है कि पढ़ने आता है?"

रामदास ने कहा—"गुरुजी, मैं अपना पाठ बराबर पढ़ता हूँ। आज्ञा हो तो सुनाऊँ।"

पाठ्य-पुस्तक मँगवाकर गुरुजी ने प्रश्न पूछा। रामदास ने ठीक उत्तर दिया। शिकायत करनेवाले छात्रों को डाँटते हुए उन्होंने कहा—"रामदास अगर अपना पाठ याद करके माला फेरता है तो इससे तुम लोग चिढ़ते क्यों हो? दूर हो जाओ मेरे सामने से।"

कहाँ तो लड़के शिकायत करने गये थे और कहाँ उन्हें डाँट खानी पड़ी। इस घटना के बाद से फिर किसीको कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। गुरुजी के यहाँ लगातार दस वर्षों तक वह व्याकरण, ज्योतिष, विष्णुसहस्रनाम, श्रीमद्भागवत आदि ग्रंथों का अध्ययन करता रहा।

शिक्षा समाप्त होने पर पिता ने उसके विवाह के लिए तैयारी आरंभ की। इस समाचार को सुनते ही रामदास ने कहा कि मैं विवाह नहीं करूँगा। पिता ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहा—' घर के बड़े लड़के हो, जब तुम विवाह नहीं करोगे तो तुम्हारे छोटे भाइयों का कैसे होगा ?"

रामदास ने कहा—"मुझे छोड़ दीजिए। उन लोगों का विवाह कर दीजिए।"

प्रत्युत्तर में पिता ने पुनः कुछ नहीं कहा। रामदास के गुरु ने एक बार बात-चीत के सिलसिले में कहा था कि सवा लाख गायत्री मंत्र पाठ करने पर सिद्धि प्राप्त होती है। रामदास के घर के पास एक बरगद का पेड़ था। उसने सोचा कि वहीं सुनसान स्थान में वह सवा लाख गायत्री मंत्र जप करेगा। दिन गुजरते गये। धीरे-धीरे एक लाख गायत्री मंत्र एक दिन संपूर्ण हुआ। अभी पचीस हजार बाकी है। उसी दिन घर जाते समय वृक्ष पर से किसी अदृश्य वाणी ने कहा—"वत्स, शेष पचीस हजार जप तुम ज्वालामुखी में जाकर करो तभी मैं सिद्ध हो जाऊँगी।"

इस वाणी को सुनकर रामदास चौंका। यह बात किसी दूसरे को कैसे मालूम हो गयी कि मैं गायत्री मंत्र सिद्ध कर रहा हूँ, पर अंतिम बात सुनने के बाद उसने समझ लिया कि यह गायत्री देवी स्वयं कह रही थीं। इस आदेश को सुनकर उसका हृदय प्रसन्नता से भर उठा।

दूसरे दिन अपने भतीजे को लेकर वह ज्वालामुखी की ओर रवाना हो गया। रामदास के गाँव से ८० मील दूर ज्वालामुखी का मंदिर है। मार्ग में एक जगह सहसा एक साधु को देखते ही उसके पैर अपने-आप रुक गये। साधु के पास आकर उसने साष्टांग दंडवत् किया। उन्होंने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

साधु महाराज के स्पर्श से ही उसके समस्त शरीर में एक प्रकार की झनझनाहट-सी हुई। वह काँप उठा। वह यह भूल गया कि पचीस हजार गायत्री मंत्र पाठ करने के लिए उसे ज्वालामुखी जाना है। स्वयं देवी ने उसे आज्ञा दी है।

साधु महाराज की ओर एकटक देखते हुए उसने कहा—"मैं ब्राह्मण हूँ, महाराज। मुझे अपनी सेवा में रख लीजिए। मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ।"

रामदास के विनयपूर्ण संभाषण से प्रसन्न होकर साधु ने कहा—' वत्स, यह कठिन मार्ग है। शिष्य बन जाना सरल है, पर साधना और त्याग दुरूह होता है। कुछ दिन ठहरकर देख लो।"

रामदास के श्रम, लगन और निष्ठा देखकर साधु ने उसे अपना शिष्य बना लिया। सिर मुड़वाकर उसे 'वैराग्य आश्रम' की उपाधि दी गयी। बचपन से वह जिस चीज को पाना चाहता था, आज उसका श्रीगणेश हो गया। रामदास के लिए मुश्किल उस समय हुई जब उसके इस कार्य का विरोध साथ आये भतीजे ने किया। समझाने पर भी जब रामदास ने नहीं माना तब सीधे घर आकर उसने रामदास के पिता को सारा विवरण सुनाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदास साधु बन गया है, यह समाचार सुनते ही पिता क्रोध से बौखला उठे। तुरत साधु के आश्रम में आकर बिगड़ उठे—"अगर तुम सीधे से नहीं चलोगे तो लाचारी में मुझे पुलिस की सहायता लेनी पड़ेगी।"

प्रत्युत्तर में रामदास ने कहा—"पिताजी, अब मैं बालिग हो गया हूँ। पुलिस के सामने यह स्पष्ट कर दूँगा कि मैंने किसी दबाव, भय या नाराजगी के कारण नहीं, बल्कि स्वेच्छा से संन्यास ग्रहण किया है।"

ज्येष्ठ पुत्र की बातों से पिता की ममता को बड़ा धक्का लगा। उन्होंने रोते हुए उसके गुरुदेव से कहा—"जो होना था, वह हो गया। कृपया इस बालक को एक बार छोड़ दीजिए वरना इसकी माँ रोते-रोते मर जायगी। माँ इसे एक बार देख ले, फिर यह वापस आपके पास आ जायगा।"

गुरु ने कहा—"ठीक है। साधु को संन्यास लेने के पश्चात् एक बार जन्मभूमि जाना पड़ता है। सब ठौर एक ही है। इसमें कोई दोष नहीं। तुम इनके साथ जाकर अपनी जन्मभूमि को चेताओ।"

चलते-चलते रामदास ने कहा—"पिताजी, मेरे साथ कोई छल मत करियेगा। अब मैं तन-मन से संन्यासी हूँ।"

गाँव में प्रवेश करते ही रामदास ने कहा—"मैं संन्यासी हो गया हूँ अतएव घर पर नहीं रह सकता। इसी पेड़ के नीचे रहूँगा।"

जिस वृक्ष के नीचे कभी वह गायत्री मंत्र जपता रहा, उसीके नीचे बैठ गया। बेटा वापस आया है, सुनकर माँ दौड़ी हुई आयी और घर चलने के लिए जिद्द करने लगी। माँ को सांत्वना देते हुए रामदास ने कहा—"माँ, मेरा निश्चय अटल है। अगर इस तरह रोओगी तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

बेटा वापस चला जायगा, सुनकर माँ चुप हो गयी। कम-से-कम यहाँ रहने पर आँखों के सामने तो रहेगा। गाँव के लोगों ने प्रस्ताव किया कि रामदास नित्य एक घर जाकर अन्न ग्रहण करेगा। खाली समय में वह गायत्री मंत्र का जप करता था। एक दिन रात्रि के समय देवी ने आकर कहा—"वत्स, अब जप करने की जरूरत नहीं। मैं प्रसन्न हूँ। बोलो, कौन-सा वर दूँ?"

रामदास ने कहा—"मुझे कुछ नहीं चाहिए माँ। आप केवल मुझ पर प्रसन्न रहा करें।"

'तथास्तु' कहने के बाद देवी अन्तर्धान हो गयीं। कई दिनों के बाद रामदास अपने घर में अन्न ग्रहण करने गया तो लड़के की स्थिति देखकर माँ का दर्द उमड़ पड़ा। रामदास ने कहा—"अगर इस तरह तुम रोओगी तो क्या मुझसे खाना खाया जायगा? इसीलिए मैं यहाँ नहीं रहना चाहता था।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माँ ने कलेजे पर पत्थर रखकर अपने आवेग को रोक लिया। लेकिन उसकी आँखें बरसती रहीं। रामदास ने कहा—"रोने से कोई लाभ नहीं होगा, माँ। मैंने जो मार्ग अपनाया है, उससे हम दोनों का कल्याण होगा।"

माँ ने एक लम्बी साँस लेने के बाद कहा—"ठीक है बेटा। जिससे सभी का कल्याण हो, वही करो। अपने नियमानुसार यहाँ आकर भोजन कर लेना। अब कभी नहीं रोऊँगी।"

इसी प्रकार दिन गुजरते गये। रामदास ने कुछ दिनों बाद अनुभव किया कि गाँव के रिश्ते से भाभी लगनेवाली एक युवती शाम ढले नित्य आती है। परिहास करती है। उसकी आदत से तंग आकर रामदास ने कहा—"भाभी, अब मैं संन्यासी हो गया हूँ। शाम ढले मेरे यहाँ न आया करें।"

भाभी ने पूछा—"इससे क्या हुआ?"

रामदास ने कहा—"हुआ तो कुछ नहीं, पर परस्त्री को संन्यासी के पास नहीं आना चाहिए।"

उस दिन भाभी चुपचाप चली गयीं। दूसरे दिन पुनः उसी समय आयीं। यह देखकर रामदास ने फटकारा। वह बेहया की तरह बोली—"इससे क्या नुकसान होता है?"

रामदास को समझते देर नहीं लगी कि इस पापिष्ठा की नीयत ठीक नहीं है। उन्होंने एक ढेला उठाकर उसे मारा। वह नाराज होकर चली गयी। रामदास को शंका हुई कि आज भाभी आयी, कल कोई और आ सकती है। इससे अच्छा है कि यह स्थान छोड़ दूँ।

इसी प्रकार की एक घटना रामदास के साथ और हुई थी। पंजाब स्थित एक छोटी रियासत की विधवा रानी इन पर आसक्त हो गयी थीं। बहुत ही सुन्दर और नवयौवना थीं। उसने प्रस्ताव रखा—"आप मेरी काम-वासना की पूर्ति करते हुए मेरे राज्य में ऐश करिये।"

कहा जाता है कि गदराया हुआ यौवन देखकर रामदास इस रानी पर आसक्त हो गये थे, पर दूसरे ही क्षण इन्हें अपने वैराग्य-जीवन की याद आ गयी। अपने को संयत करते हुए राज्य से भाग गये। उन्हें लगा कि गुरु-कृपा से वे बच गये।

गाँव से सीधे गुरुजी की सेवा में आ गये। गुरु ने निश्चय किया कि शिष्य कितना योग्य है, इसकी जाँच करनी चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि रामदास को बड़ी कड़ी परीक्षा देनी पड़ी थी।

रामदास के गुरुदेव का जन्म अयोध्या जिले के किसी गाँव में हुआ था। संन्यास लेने के बाद उनका नाम हुआ—स्वामी देवदास। अपनी कठोर साधना के माध्यम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे सिद्ध हो गये थे। कहा जाता है कि वे छह माह तक समाधि में लीन रहते थे। जब समाधि में नहीं रहते थे तब गाँजा-चरस पीना, उपदेश देना आदि कार्य करते थे। उन्हें नींद नहीं आती थी। भोजन के नाम पर धुनी की विभूति कपड़छान कर पानी में घोलते और उसे पी जाते थे। कुछ देर बाद कै के द्वारा उसे उगल देते थे। फिर रामदास से कहते—"इसे तौलकर देख, जितना मुझे पिलाया था, उतना है या नहीं ?"

एक बार रामदास गुरुजी के विनोद के कारण काफी परेशान हुआ था। उस दिन उन्होंने रामदास से कहा—"बेटा, मेरा कोठा बड़ा गरम हो गया है। कहीं से दूध लाकर पिलाओ तो यह गरमी दूर हो जाय।"

रामदास गुरुजी के लिए चारों ओर से माँगकर लगभग २० सेर दूध लाये। डेगची में गरम करने के पश्चात् उसे गुरुजी के सामने रख दिया। गुरुजी डेगची उठाकर सारा दूध एक बार में पी गये। बाद में उन्होंने कहा—"बेटा, अभी कोठा कुछ गरम है। मुझे थोड़ा दूध और चाहिए तब जरा ठंढा होगा।"

यह दृश्य देखकर रामदास का पसीना छूटने लगा। वे बचपन में पाँच सेर दूध अवश्य पीते थे, पर कई बार में। लेकिन गुरुजी एक साँस में २० सेर पीने के बाद कह रहे हैं कि थोड़ा और चाहिए। भयभीत होकर उसने गुरुजी की प्रदक्षिणा करने के बाद उनके चरणों पर माथा रखते हुए कहा—"महाराज, आप भगवान् हैं। आपके कोठे की गर्मी मैं कैसे दूर कर सकता हूँ ? आप २० सेर दूध डकार गये और अभी तक आपकी गर्मी दूर नहीं हुई। अब कहाँ से दूध ले आऊँ ? अब मुझे क्षमा कर दें।"

गुरुदेव उसकी मजबूरी को समझते हुए बोले—"बेटा, कहीं से भी थोड़ा दूध ला दो। इस बार जो भी लाओगे, उससे तृप्त हो जाऊँगा।"

लाचारी में रामदास को जाना पड़ा। इस बार वह ५-७ सेर दूध लाया। उसे पीने के बाद गुरुजी ने कहा—"अब मेरी गरमी दूर हो गयी।"

इसी प्रकार एक बार अपने कुछ शिष्यों के साथ एक जंगल के किनारे गुरुजी आसन लगाये बैठे थे। अचानक बोल उठे—"बेटा, तलब लगी है। तुममें से कोई शहर जाकर दो रुपये का गाँजा ले आओ।"

अँधेरी रात, घना जंगल, चारों ओर हिंस्रक जानवर चहलकदमी कर रहे थे। इस जंगल को पार करने का साहस किसीको नहीं हो रहा था। कुछ देर के बाद रामदास ने कहा—"गुरुदेव, अगर आप मुझे आदेश दें तो मैं ले आऊँ ?"

गुरुदेव ने कहा—"ठीक है। तुम्हीं चले जाओ। शहर पहुँचने पर तुम्हें रुपये अपने-आप मिल जायेंगे। उन रुपयों से गाँजा लेकर चले आना।"

रामदास को यह ज्ञात था कि गुरुदेव असाधारण योगी हैं। इनके लिए कुछ भी अकरणीय नहीं है। अगर मैं इस भयानक जंगल और हिंस्र पशुओं के बीच से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाऊँगा तो वे मेरी बराबर रक्षा करते रहेंगे। जंगल पारकर रामदास शहर के भीतर आया। चारों ओर सुनसान था। सड़क पर एक-दो व्यक्ति आ-जा रहे थे। घरों की रोशनियाँ बुझी हुई थीं।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक घर से रोशनी बाहर आती दिखाई देने लगी। वहाँ पहुँचते ही उस घर से एक आदमी बाहर निकला और कहा—"बाबाजी, आज मैंने संकल्प किया था कि किसी साधु को दो रुपये दूँगा। काफी देर से प्रतीक्षा कर रहा था। सौभाग्य से आप मिल गये। लीजिए।"

इतना कहकर उसने दो रुपये दिये और अपने घर का दरवाजा बन्द कर लिया। रामदास ने अनुभव किया कि यह गुरुदेव की महिमा है। अब गाँजे की दुकान कहाँ है? कुछ दूर आगे बढ़ने पर देखा—गाँजा-भाँग का दुकानदार सो रहा है। उससे गाँजा खरीदने के बाद रामदास की इच्छा हुई कि जरा दम लगा लें। साधुओं की संगत में रहने के कारण उसे गाँजा पीने का शौक हो गया था।

इसके बाद वहाँ से चलकर सीधे गुरुजी के पास आया। ज्योंही उसने प्रणाम किया त्यों ही गुरुजी बोल उठे—"क्यों बेटा, गुरु का कार्य इसी तरह किया जाता है? पहले स्वयं भोग लगाकर अवशिष्ट पदार्थ गुरुजी को दोगे? क्या मुझसे यही शिक्षा मिली है?"

गुरुदेव की अन्तर्दृष्टि यहाँ तक पहुँच जायगी, इसकी कल्पना रामदास को नहीं थी। सारा नशा हिरन हो गया। भय से पैर थरथराने लगे। जीभ तालु से सट गयी। तुरन्त घुटने टेकते हुए उसने कहा—"भगवन्, मुझसे भयंकर अपराध हो गया। मैं आपका अबोध पुत्र हूँ। भविष्य में ऐसी भूल नहीं होगी—प्रभो।"

गुरुदेव ने कहा—"निस्सन्देह तुम बालक हो और यह तुम्हारी पहली भूल है। अतएव तुम्हें क्षमा करता हूँ। भविष्य में सावधान रहना।"

रामदास के गुरुदेव असाधारण योगी थे। उनकी अनेक योग-विभूतियों को उसने प्रत्यक्ष रूप से देखा और अनुभव किया है। लाहौर की घटना उसे याद है। उन दिनों अपने कतिपय शिष्यों के साथ लाहौर में डेरा डालकर विश्राम कर रहे थे। नगर के लोग सुबह-शाम प्रवचन सुनने आते थे। इनमें से एक दुशाले का व्यापारी भी था।

इस व्यापारी से एक दिन स्वामीजी ने कहा—"सेठ, तुम अपनी ओर से इन आगत साधुओं को एक दिन भंडारा दो।"

स्वामीजी के प्रस्ताव को सुनकर व्यापारी घबरा गया। उन दिनों कुल मिलाकर एक हजार के लगभग साधु थे। उसने साफ इनकार कर दिया। पुनः अनुरोध करने पर अपमानजनक शब्द कहता हुआ चला गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसके इस व्यवहार से शिष्य तथा साधु-मंडली क्षुब्ध हो उठी। देवदास स्वामी ने कहा—"सेठ को अपने धन का बहुत घमंड हो गया है। आज इसे तोड़ना है वरना यह निरन्तर साधुओं का अपमान करता रहेगा।"

इतना कहकर देवदास स्वामी ने कमण्डल से जल निकालकर अपने सामने की धूनी पर छिड़का और कह उठे—"सेठ, तेरी दुकान में आग लग गयी।"

थोड़ी देर बाद रामदास ने देखा—सामने से वही सेठ दौड़ता हुआ आ रहा है। बाबा के पास आकर धड़ाम से गिर पड़ा। बदहवास होकर बोला—"महाराज, मुझे बचा लीजिए। मैं बड़ा पापी हूँ। मैं एक दिन नहीं, सात दिनों तक भंडारा दूँगा। मुझे बरबाद होने से बचा लें।"

सदाशय बाबा प्रसन्न हो उठे। उन्होंने अभय मुद्रा में हाथ उठाकर कहा—"अच्छी बात है। जाओ, सब ठीक हो गया। दण्ड के रूप में एक दुशाला नष्ट हुआ है। लेकिन एक बात याद रखना कि आगे कभी किसी साधु का अपमान मत करना।"

सेठ को विश्वास नहीं हो रहा था, फिर भी वह चरण-स्पर्श कर ज्यों ही उठा त्यों ही दुकान के नौकर ने आकर सूचित किया—"आग बुझा दी गयी है। एक दुशाले के अलावा और कुछ नुकसान नहीं हुआ है।"

नौकर की जवानी यह समाचार सुनकर सेठ ने पुनः चरण-स्पर्श किया और चला गया। उसके जाने के बाद चकित भाव से रामदास ने पूछा—"भगवन्, यह सब कैसे हो गया? कृपया बताने का कष्ट करें।"

देवदास स्वामी ने कहा—"इस सेठ को अपने धन का घमंड बहुत अधिक हो गया था। देव-द्विज, साधु-महात्माओं के प्रति अवज्ञा की भावना इसके घर भर गई थी। फलतः यह दण्ड देना पड़ा जिससे विनम्र बना रहे और ईश्वर के प्रति आस्थावान् रहे। जिस विद्या के जरिये मैंने यह कार्य किया है, उसे तुम्हें बता दूंगा। परन्तु इस बात पर ध्यान रखना कि उसे किसी कुपात्र को मत देना वरना तुम्हारी हानि होगी।"

लाहौर से चलकर स्वामीजी भोपाल आये। भोपाल का ताल विश्व-प्रसिद्ध है। इस ताल के किनारे आसन बिछाकर स्वामीजी बैठ गये और शंख बजाने लगे। भोपाल के नवाब का सख्त हुक्म था कि कोई भी व्यक्ति ताल के समीप शंख, घंटा, घड़ियाल आदि नहीं बजायेगा वरना उसका सिर कलम कर दिया जायगा।

इधर शंख बजना था कि उधर नवाब का पारा गरम हो गया। प्यादों का दल दौड़ा। किनारे पर आकर उन लोगों ने देखा—स्वामीजी का सिर कहीं, पैर कहीं, हाथ कहीं और धड़ कहीं पड़ा है। बेचारे किसे पकड़कर ले जाते। लौटकर यही समाचार सुनाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभी प्यादे पूर्ण विवरण सुना नहीं पाये थे कि पुनः शंख-ध्वनि हुई। पुनः पहरेदार आये। इस बार उन्हें सब कुछ गायब मिला। पहरेदार यह विवरण सुनाते ही रहे कि पुनः शंख-ध्वनि हुई। अब नवाब साहब भीतर ही भीतर डर गये। यह भूतों की लीला है या कोई उच्चकोटि का सन्त आया है? अपने पार्षदों को लेकर वे ताल के किनारे आये।

बाबा सामने बैठे थे। नवाब ने आगे बढ़कर उनकी अभ्यर्थना की। बाबा ने कहा—"घंटा-घड़ियाल बजाने पर रोक लगाकर तुमने गलत आदेश दिया है। जिस प्रकार तुम्हें अपने खुदा की इबादत करने का हक है, उसी प्रकार हिंदुओं को भी है। आइन्दा किसीकी इबादत में दखल मत देना।"

"जो हुक्म महात्माजी। आगे ऐसा ही होगा।"

× × ×

ज्यों-ज्यों अपने गुरु की अलौकिक शक्ति को रामदास देखता त्यों-त्यों उसके आश्चर्य की सीमा बढ़ती जाती थी। लेकिन उसे इस बात की कल्पना नहीं थी कि आगे उसकी कड़ी परीक्षा ली जायगी।

साधु का ढोंग रचना सरल है, पर साधना के माध्यम से यौगिक शक्ति प्राप्त करने में कड़े संघर्ष से गुजरना पड़ता है। पूर्वकाल के योगी शिष्य की कड़ी परीक्षा लेकर ही उन्हें अपने योग्य बनाते थे। मंत्र प्राप्त करके साधना करनेवाले सामान्य संत होते हैं। गुरु की कसौटी पर खरे उतरनेवाले योगी बनते हैं।

रामदास के लिए बाबा का सख्त आदेश था कि शाम के बाद धूनी को जगाये रखना। धूनी के पास आसन बिछाकर भजन करते रहना। शाम के बाद बाहर कहीं मत जाना। जाड़े के दिन थे। कपड़े के नाम पर उनके पास एक उत्तरीय था। उसकी हालत यह थी कि मुँह ढाँकने पर पैर और पैर ढाँकने पर मुँह खुल जाता था। फलतः शीत-निवारण के लिए धूनी के पास बैठा रहना पड़ता था। सबसे अधिक परेशानी लकड़ी की लँगोटी की थी। इस लँगोटी के कारण रात को सोते समय काफी परेशानी होती थी। दिन को बालू पर आराम मिलता था, पर रात को धूनी के पास बड़ा कष्ट होता था। भोजन भी एक वक्त मिलता था।

धूनी से कुछ दूर फूस की झोपड़ी में गुरुदेव रहते थे। गुरुदेव के कठोर अनुशासन के कारण अन्य शिष्य भाग गये। ले-देकर रामदास रह गये। उस दिन रात को कड़ाके की सर्दी थी। धूनी की गर्मी के कारण आराम मिला और नींद आ गयी। थोड़ी ही देर बाद बर्फ गिरने लगी और धूनी ठंढी हो गयी। सहसा शीत का प्रकोप अनुभव होते ही रामदास की नींद उचट गयी। धूनी को ठंढी देखकर वह डर गया। अगर धूनी न जगायी तो ठंड के कारण मौत आ जायेगी। इसके अलावा गुरु महाराज फटकारेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात को आसन छोड़कर कैसे जाये और गुरु महाराज के पास जाने की आज्ञा नहीं है। अगर उनके पास आग माँगने गया तो वे समझ जायेंगे कि मैं भजन छोड़कर सो गया था। मुमकिन है तब कठोर दंड दें। इस ऊहापोह में काफी समय गुजर गया। अन्त में उसने सोचा—असावधानी के कारण यह घटना हुई है। जाकर गुरुजी से आग माँग लूं। जो दंड देंगे, उसे भोग लूंगा। यह सोचकर वह हल्के कदमों से गुरुदेव की कुटिया के पास आकर खड़ा हो गया।

गुरुदेव ने पूछा—"बाहर कौन खड़ा है?"

"भगवन्, मैं रामदास हूँ।"

"रात को आसन छोड़कर क्यों आये हो?"

"महाराज, मेरी धूनी बुझ गयी है, इसलिए आपकी सेवा में आग माँगने आया हूँ।"

गुरुदेव ने कहा—"लगता है, सो गये थे वरना धूनी न बुझती। अपने माता-पिता को दुःख देकर यहाँ सोने आये हो? इस तरह सोना ही था तो यहाँ आने की क्या जरूरत थी? घर पर आराम करते।"

इस प्रकार देर तक वे फटकारते रहे। जब वे चुप हो गये तब रामदास ने काँपते हुए कहा—"महाराज, भूल हो गयी। क्षमा कर दें। अचानक नींद आ जाने के कारण ऐसी घटना हो गयी। भविष्य में सावधान रहूँगा।"

"जहाँ खड़े हो, वहीं एक घंटा खड़े रहो। अभी आग नहीं दूँगा।"

गुरुदेव के क्रोध से रामदास अच्छी तरह परिचित था, फलतः वह आज्ञानुसार भयंकर सर्दी में बाहर खड़ा काँपता रहा। कुछ देर बाद एक टुकड़ा कोयला बाहर फेंकते हुए गुरुदेव ने कहा—"ले जाओ। आइन्दा गफलत न होने पाये।"

इसी प्रकार रामदास के धैर्य की परीक्षा लेने के लिए एक बार उन्होंने कहा—"मैं कुछ दिनों के लिए एक विशेष कार्य से बाहर जा रहा हूँ। जब तक वापस न आऊँ तब तक यहीं बैठे रहना। किसी काम से कहीं मत जाना।"

"जो आज्ञा गुरुदेव।"

एक स्थान दिखाते हुए गुरुदेव ने कहा—"बस इसी जगह यहीं चुपचाप बैठे रहो।" इतना कहकर गुरुदेव चले गये।

दिन गुजरते गये। रामदास प्रस्तर की भाँति गुरुदेव द्वारा बताये स्थान पर बैठे रहे। आठवें दिन गुरुदेव आये। रामदास ने खड़े होकर प्रणाम किया।

गुरुदेव ने पूछा—"क्यों वत्स, इसी जगह मौजूद थे?"

रामदास ने कहा—"जी महाराज। आपके जाने से लेकर अभी तक यहीं आज्ञानुसार उपस्थित था।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मल-मूत्र त्याग के लिए भी नहीं उठे ?"

"आपकी कृपा से मल-मूत्र का वेग नहीं हुआ।"

"भोजन की क्या व्यवस्था थी ?"

रामदास ने कहा—"कुछ भी नहीं।"

"ठीक है। गुरु के आदेशों का पालन इसी प्रकार करना चाहिए। माँ-बाप को कष्ट देकर जब इस मार्ग पर आये हो तब तन, मन, वचन से गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। तभी भगवान् की कृपा होगी।"

इसी प्रकार की परीक्षाएँ बराबर रामदास को देनी पड़ती थीं। प्रत्येक परीक्षा में संयम के साथ सफलतापूर्वक वे उत्तीर्ण होते रहे। रामदास कभी-कभी सोचता था कि आखिर कब इसका अंत होगा। आखिर एक दिन वह भी आ गया।

कई वर्ष बाद अकारण न जाने क्यों गुरुदेव का पारा गर्म हो गया। लाठी लेकर रामदास की पिटाई करने लगे। बोले—"भाग यहाँ से। सभी तो भाग गये। तू यहाँ क्यों मर रहा है ? भाग जा। अब मैं किसीकी सेवा लेना नहीं चाहता।"

अत्यधिक मार खाने की वजह से रामदास लहूलुहान हो गया। बदन भी कई जगह से फूल गया। दर्द से कराहते हुए रामदास ने दर्दीले स्वर में कहा—"महाराज, यह बात आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं अपने माँ-बाप का कितना दुलारा था। घर में खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। अपनी इच्छा से सब कुछ छोड़कर आपकी शरण में आया। अब तो इस दुनिया में आपको छोड़ दूसरे किसीको नहीं जानता। अगर आप मुझसे विमुख हो जायेंगे तो मैं किसके पास जाऊँगा ? इससे अच्छा है कि मेरी गर्दन काट दीजिए, सारा झंझट समाप्त। जीवित रहते मैं कहीं नहीं जा सकता।"

गुरुदेव ने अट्टहास करते हुए कहा—"वत्स, तुम धन्य हो। तुम्हारी गुरु-भक्ति से प्रसन्न हो गया। यही तुम्हारी अंतिम परीक्षा थी। अब आगे कोई परीक्षा नहीं होगी। मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होगा। तुम अपने उपास्य देवता का दर्शन कर सकोगे। तुम जो कुछ कहोगे, वह सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जायगा। तुम्हारा वाक्य कभी निष्फल नहीं होगा।"

गुरु का आशीर्वाद पाते ही रामदास ने उनकी प्रदक्षिणा की और उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। बदन की सारी पीड़ा क्षणभर में दूर हो गयी।

इस घटना के बाद दोनों व्यक्ति एक समृद्ध नगर में आये। नगर के एक किनारे दोनों आसन लगाकर बैठे। गुरु और चेले के आसनों में कुछ दूरी थी। श्रद्धालुओं का आगमन होने लगा। लोग पहले स्वामी देवदास को प्रणाम करने के बाद रामदास के पास आते थे। इसी बीच एक आदमी आया। रामदास को प्रणाम करने के बाद उसके पास चार रुपये रखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदास ने कहा—"हरे-हरे। मेरे गुरुदेव वहाँ बैठे हैं। कृपया यह भेंट उन्हें देने का कष्ट करें। उनके रहते मैं नहीं ले सकता।"

उस व्यक्ति ने कहा—"महाराज, आपके प्रति आकृष्ट होकर मैंने आपकी पूजा की है।"

रामदास ने कहा—"आपका कथन सत्य है, भगत। लेकिन अपने पूजनीय गुरु की उपस्थिति में यह भेंट मैं स्वीकार नहीं कर सकता। कृपया उन्हें जाकर दे दें।"

उस व्यक्ति को यह सुझाव स्वीकार नहीं हुआ। वह उन रुपयों को छोड़कर चला गया। रामदास अपने गुरु के पास जाकर बोले—"प्रभो, एक भगत चार रुपये भेंट में दे गया, कृपया इसे ग्रहण करें।"

देवदासजी ने कहा—"क्यों रे, तू कैसा चेला है जो गुरु के रहते स्वयं पूजा ग्रहण करने लगा है?"

रामदास ने सारी बातें कहने के बाद कहा—"जब वह रुपये छोड़कर चला गया तब आपको देने आ गया।"

गुरु ने कहा—"अब तू वास्तव में सिद्ध हो गया है। गोया तू भी शेर हो गया। दो शेर एक जगह नहीं रहते।"

इस घटना के तीन दिन बाद गुरुदेव ने कहा—"वत्स, द्वारिका में हम लोगों के सम्प्रदाय का मुख्य धाम है। इस धाम का दर्शन करना तुम्हारे लिए आवश्यक है।"

रामदास ने कहा—"मैं तो आपको ही भगवान् समझता हूँ। शास्त्रों में भी लिखा है कि गुरु-चरणों में सभी तीर्थ रहते हैं। जब आपके चरणों का दर्शन करता हूँ तब मुझे तीर्थस्थान जाने की क्या जरूरत?"

"बड़ा ज्ञान बखान रहा है। लगता है जैसे तुझसे बढ़कर कोई ज्ञानी नहीं है। तेरे गुरु, दादा गुरु, परदादा गुरु, लकड़दादा गुरु, सभी द्वारिका गये थे और एक तू इतना बड़ा ज्ञानी हो गया है कि तीर्थ-दर्शन करना नहीं चाहता? जब मैं कह रहा हूँ तब तुझे जाना पड़ेगा।"

रामदास ने कहा—"पता नहीं, यह द्वारिका है कहाँ? कहीं इधर-उधर चला गया तो परेशानी होगी। आप अपने पास ही रखिये गुरुदेव।"

इस बात का उत्तर गुरुदेव ने नहीं दिया और न रामदास समझ सके कि आखिर गुरुदेव क्यों उसे दूर हटा रहे हैं। अगर वह समझ पाता तो शायद विद्रोह करता।

इस घटना के दूसरे ही दिन दो साधु आये। बातचीत के सिलसिले में गुरुदेव ने उनसे पूछा—"महात्मन्, यहाँ से आप लोग कहाँ के लिए प्रस्थान करेंगे?"

उन लोगों ने कहा—"द्वारिका।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

तभी गुरुदेव ने रामदास की ओर देखते हुए कहा—"तू कह रहा था कि द्वारिका कहाँ है। दोनों महात्मा जा रहे हैं, इनके साथ चला जा।"

अब रामदास लाचार हो गया। उसके उदास चेहरे को देखकर देवदास स्वामी ने कहा—"अपने सम्प्रदाय के लोगों को द्वारिका-दर्शन करना चाहिए। मेरा आशीर्वाद है, तुझे मार्ग में कोई कष्ट नहीं होगा। सब अपने-आप प्राप्त हो जायेंगे।"

आखिर उसे द्वारिका जाना पड़ा। गुरुदेव के आशीर्वाद से मार्ग में उसे गाँजा, भोजन, बैलगाड़ी और आश्रय का कोई कष्ट नहीं हुआ। वहाँ से सकुशल आश्रम में आने पर देखा कि यहाँ अनेक ज्येष्ठ गुरुभाई एकत्रित हैं। सभी उदास हैं। गुरुदेव कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं। शंकित भाव से उसने एक गुरुभाई से पूछा तो पता लगा कि गुरुदेव परलोकवासी हो गये हैं।

यह एक ऐसा समाचार था जिसे सुनते ही रामदास का सिर चकराने लगा और तुरंत बेहोश होकर गिर पड़ा। होश आने पर उसने अनुभव किया कि शायद इसीलिए गुरुदेव ने मुझे जबरन द्वारिका भेजा था। कुछ देर बाद रामदास इतना बौखला गया कि वह अपनी जटाओं को नोचने लगा, पागलों की तरह जमीन पर लोटने लगा। उसके रोदन तथा क्रियाकलाप को देखकर कई गुरुभाइयों ने मिलकर उसे शांत करने की कोशिश की। बाद में उनका मुंडन कराया गया।

इस घटना के एक सप्ताह बाद एक निर्जन स्थान पर गुरुदेव के दर्शन हुए। उन्होंने रामदास से कहा—"बेटा, अब शोक मत करो। मेरी मृत्यु नहीं हुई है। आवश्यक समझकर अन्तर्धान हो गया हूँ। आवश्यकता होने पर तुम मेरा बराबर दर्शन कर सकते हो। अलक्ष्य रूप में आजकल मैं नर्मदा किनारे रह रहा हूँ। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी होंगी।"

गुरु-दर्शन तथा उनके आश्वासन से उसकी उद्विग्नता शांत हो गयी। गुरु-भाइयों ने भंडारा किया। इसके बाद सभी यथास्थान चले गये।

× × ×

अब रामदास स्वामी स्वतंत्र रूप से तीर्थ-भ्रमण के लिए चल दिये। उनके मन में यह दृढ़ विश्वास था कि आगे आनेवाली कठिनाइयों को गुरुदेव दूर कर देंगे। हिमालय स्थित गंगोत्री में आये। यहाँ अचानक एक दुर्घटना हो गयी। वे एक ऊँचे पर्वत पर चढ़कर चारों ओर का दृश्य देख रहे थे। शुचानक पैर के समीप का एक पत्थर खिसका। उन्हें भीतर गुफा-सी दिखाई दी।

कुतूहलवश बड़ा-सा पत्थर हटाने पर उनका अनुमान सही निकला। भीतर सुरंग-सी गुफा थी। भीतर प्रवेश करने पर सामने एक जटाधारी संन्यासी दिखाई पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहट पाकर उनकी आँखें खुल गयीं। रामदास ने विनीत भाव से प्रणाम किया। तुरत संन्यासी ने पूछा— "कौन हो तुम ?"

उनकी आँखों से ज्वाला निकल रही थी। लगता था जैसे भस्म कर देंगे। हाथ जोड़ते हुए उन्होंने कहा—"प्रभो, आपका अनुचर-सेवक।"

"सेवक को जो आज्ञा दी जाती है, वह उसका पालन करता है। क्या तुम करोगे ?"

रामदास ने भय से सिहरकर कहा —"आज्ञा कीजिए।"

"इस गुफा के मुहाने से छलाँग लगाकर नीचे कूद जाओ। जाओ।"

रामदास ने बाहर आकर देखा—लगभग पचास फुट गहरी खाई है। कूदने पर मौत निश्चित है और न कूदने पर स्वामीजी के क्रोध का शिकार होना पड़ेगा। 'जय गुरुदेव' कहते हुए वे नीचे कूद गये। गुरु-कृपा से उन्हें चोट नहीं आयी। तभी उन्हें लगा जैसे स्वामीजी ऊपर से उनकी जटा पकड़कर खींच रहे हैं। ऊपर आते ही वे बाबा के चरणों पर गिर पड़े।

बाबा ने कहा—"निस्सन्देह तुम योग्य अनुचर हो। अब यहाँ से चले आओ। यह स्थान ऋषियों की तपोभूमि है। यहाँ तुम्हें नहीं आना चाहिए था।"

बाबा को प्रणाम कर रामदासजी नीचे उतर आये। उपयुक्त स्थान देखकर वे तपस्या में लीन हो गये। एक अर्से बाद गुरुदेव ने दर्शन देकर कहा—"वत्स, अब तुम परमार्थ के लिए सभी तीर्थों का दर्शन करो।"

हिमालय से रामदास स्वामी चल पड़े। मार्ग में कुछ अन्य संत मिल गये। सभी पैदल चल रहे थे। काफी दूर जंगल में प्रवेश करने के बाद शेर की आवाज सुनाई दी। जो साधु सबसे आगे चल रहा था, वह ठिठककर खड़ा हो गया। उसने कहा—"मैं अब आगे नहीं चलूँगा।"

प्रत्युत्तर में किसीने यह नहीं कहा कि तब मैं आगे चलूँगा। रामदास स्वामी ने आगे बढ़कर कहा—"मैं सबसे आगे चलता हूँ। आप सभी मेरे पीछे आइये।"

इतना कहने के बाद वे आगे बढ़ गये। उनके पीछे सभी रवाना हुए। कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद वह शेर न जाने किधर से आया और उसी बाबा को पकड़-कर जंगल में गायब हो गया जो आगे चलने में भयवश पीछे हो गया था। इसके बाद फिर कोई घटना नहीं हुई।

स्वामी रामदासजी ने सर्वप्रथम शिष्य बनाया गरीबदास को। उन दिनों रामदासजी भरतपुर में ठहरे हुए थे। एक कुलीन ब्राह्मण ने अपने पुत्र को स्वामीजी के पास लाकर निवेदन किया—"महाराज, आप इसे अपनी सेवा में रख लीजिए।"

बाबा ने उसे तीक्ष्ण दृष्टि से देखा और कहा कि ठीक है। बचपन से स्वामीजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के जीवन के अंतिमकाल तक वह बड़ी निष्ठा के साथ उनकी सेवा करता रहा। कई वार स्वामीजी का कोपभाजन हुआ, पर कभी अपना धैर्य नहीं खोया। बाद में स्वामीजी को कहना पड़ा—"गरीबदास, सचमुच तू मेरा असली चेला है। मेरी तरह तू भी सिद्ध हो गया है।"

स्वामीजी के दूसरे शिष्य का नाम भगवानदास था। वे स्वामीजी के निकट कुछ दिनों तक रहने के बाद बम्बई चले गये। तीसरे शिष्य का नाम ठाकुरदास था। आप विद्वान् व्यक्ति थे। तीव्र वैराग्य उत्पन्न होने के कारण हिमालय में आकर तप करने लगे। स्वामीजी का चौथा शिष्य भरतपुर का था। इसके बाद जितने शिष्य बने, वे बंगाल के निवासी थे।

स्वामीजी भरतपुर से हाथरस आये। यहाँ एक धनी बनिया रहता था जो अपुत्रक था। वह संतान-प्राप्ति की आशा से सभी साधु-संतों की सेवा करता था। स्वामी रामदासजी की सेवा इसी उद्देश्य से करने लगा और एक दिन उसने अपनी कामना प्रकट की।

रामदास स्वामी ने कहा—"तुम्हें संतान की प्राप्ति होगी, पर मेरे लिए वृन्दावन में तुम्हें अपने व्यय से एक मंदिर बनवाना पड़ेगा।"

सेठ ने कहा—"अगर मुझे लड़का हुआ तो मैं वचन देता हूँ कि वृन्दावन में मंदिर बनवा दूँगा।"

स्वामीजी ने कहा—"अब तुम निश्चिन्त हो जाओ। ठीक एक वर्ष बाद तुम्हें पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी। लेकिन यह बात याद रखना कि अगर तुम अपने वायदे से मुकर गये तो लड़का नहीं बचेगा। अब मैं यहाँ एक वर्ष बाद आऊँगा।"

एक वर्ष के भीतर बनिये को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई और ठीक समय पर स्वामीजी आये। इन्हें देखकर उसने कहा—"मैं वृन्दावन में मंदिर नहीं बनवा सकता। उसके बदले यहाँ अपने बाग में बनवा दूँगा।"

स्वामीजी ने कहा—"तुमने वृन्दावन में मंदिर बनवा देने का वायदा किया था। अब पुत्र की प्राप्ति के बाद इनकार कर रहे हो। आज से तीसरे दिन यह लड़का नहीं बचेगा।"

इतना कहने के बाद स्वामीजी बनिये के घर से अपने डेरे पर चले आये। तीसरे दिन बनिये का लड़का चल बसा। बनिये की पत्नी व्याकुल होकर स्वामीजी के पास आकर अपना सिर पटकने लगी—"आपके आशीर्वाद से मेरा बाँझपन दूर हुआ। मेरे पति की नीचता की सजा मुझे मत दीजिए। मैं निरपराधी हूँ। मुझ पर कृपा कीजिए। आप जो आज्ञा देंगे, वह सब मैं करने को तैयार हूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस महिला की करुण पुकार से योगिराज द्रवित हो उठे। उन्होंने कहा—"बेटी, तुम्हारा एक पुत्र पति की निर्लज्जता के कारण गया। अब मैं आशीर्वाद देता हूँ कि भविष्य में तुम दो सन्तानों की जननी होगी। दोनों ही जीवित रहेंगे। मुझे अब तुम लोगों से कुछ नहीं चाहिए। केवल इस बात को हमेशा याद रखना कि साधुओं के सामने जो वचन देना, उसे अवश्य पूरा करना।"

वृन्दावन में मंदिर न बनने पर स्वामीजी खिन्न मन से कुछ दिनों के लिए वहाँ चले गये। यमुना-तट पर कुंजगली के सामने स्थित एक पेड़ के नीचे उन्होंने अपना आसन लगाया। साथ में कई शिष्य और गरीबदास भी था। इस घाट पर पुरुषों के अलावा अनेक महिलाएँ स्नान करने आती थीं। स्थानीय लोगों को बाबा के चरित्र पर सन्देह हुआ। प्रत्यक्ष रूप से कहने पर विवाद हो सकता है अतएव उन्होंने जाँच करना उचित समझा।

षड्यंत्रकारियों ने एक बदचलन औरत को अर्थ का प्रलोभन देकर उसे राजी किया। एक रात वह बाबा के पास आयी और उनसे लिपटकर सो गयी। बाबा तुरत चीख उठे—"गरीबदास, देख तो मेरे आसन पर कौन आ गया है ?"

गरीबदास ने रोशनी जलाकर देखा और पूछा—"तुम कौन हो और बाबा के पास क्यों आयी हो ?"

औरत ने कहा—"मैं कामातुर हूँ। मेरा कोई नहीं है, मैं विधवा हूँ, इसलिए आपके पास आयी हूँ। आपके ऊपर मेरा मन चल गया है।"

बाबा का रौद्र रूप प्रकट हुआ। बोले—"गरीबदास, जरा सामने से हट जा। इस राँड़ की सारी कामातुरता अभी निकाले देता हूँ। साधु के पास उसका सत्त्व लेने आयी है ? आज मैं इसकी जान खींच लेता हूँ।"

बाबा का यह रूप देखकर वह पीपल के पत्ते की तरह काँपने लगी। उनके पैरों को पकड़ती हुई बोली—"मेरी कोई गलती नहीं है, बाबा। मुझे क्षमा कर दें। अमुक-अमुक व्यक्तियों ने मिलकर आपके चरित्र की जाँच करने के लिए मुझे यहाँ भेजा है, वरना मैं यहाँ क्यों मरने आती ? आप तो मेरे पितातुल्य हैं।"

बाबा स्थिति समझ गये। बिगड़कर बोले—"अच्छा, अब भाग जा। आइन्दा कभी किसी साधु के पास मत जाना। सभी साधु एक जैसे नहीं होते।"

इसी वृन्दावन में एक और विचित्र घटना स्वामीजी के साथ हुई थी। गोसइयाँ नामक एक शातिर डाकू वृन्दावन में रहता था। डकैती, लूटपाट, खून करना, उसके लिए सामान्य बात थी। कभी-कभी वह स्वामी रामदास के पास गाँजा पीने के लिए आता था। गोसइयाँ कितना खतरनाक था, इसका अन्दाजा एक घटना से लगाया जा सकता है। एक बार ब्रिटिश सरकार को इसे पकड़ने के लिए फौज की सहायता लेनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

पड़ गयी। चारों ओर से घिर जाने पर वह पकड़ा गया और उसे चौदह साल की सजा हुई। विश्वास था कि इतनी लम्बी सजा काटने के बाद उसमें कुछ सुधार हो जायगा, पर कुत्ते की दुम की तरह उसकी आदत टेढ़ी बनी रही।

बाबा के पास गोसइयाँ को निरन्तर आते देख छन्नूसिंह नामक एक भक्त ने कहा—"बाबा, आप इस डाकू को ठीक कर दीजिए तो बड़ा कल्याण हो। यह ब्राह्मण-वंश का कलंक है। इसके अत्याचारों से सभी त्रस्त है। आप सिद्ध महात्मा हैं, कम-से-कम इससे हमें मुक्ति दिलायें।"

इस निवेदन को सुनने के पश्चात् एक दिन जब गोसइयाँ बाबा के पास आया तब उन्होंने पूछा—"क्यों रे गोसइयाँ, तू भगत बनेगा? अब डकैती वगैरह छोड़कर मेरा चेला बन जा।"

बाबा की बातों से उसके अन्तर के तार झनझना उठे। उसने कहा—"बाबा, मैंने जीवनभर कुकर्म किये हैं, क्या इस पर भी आप मुझ पर कृपा करेंगे?"

रामदास स्वामी ने कहा—"दिनभर का भूला अगर शाम को घर आ जाय तो खुशी होती है। जा, अभी बाजार चला जा और वहाँ से तुलसी की एक कंठी लेता आ। मैं तुझे कंठी पहनाकर आज ही अपना चेला बनाऊँगा।"

बाबा के आज्ञानुसार वह सारी सामग्री बाजार से खरीदकर ले आया। बाबा ने उसे दीक्षा दी। उसी दिन से उसके स्वभाव में परिवर्तन होता गया। संतों को अपनी अतीन्द्रिय-शक्ति से यह ज्ञान हो जाता है कि किस व्यक्ति का सुधार हो सकता है और किसका नहीं। किसे दीक्षा देनी चाहिए और किसे नहीं।

नदी किनारे सुनसान स्थान में बाबा का डेरा था। इधर अधिकतर जरायम पेशावाले यदाकदा आया करते थे। तीर्थस्थानों में चोर-उचक्के अधिक रहते हैं। यहाँ के उचक्कों ने देखा कि इस बाबा के पास अनेक लोग आते हैं। फल-मिष्टान्न के अलावा रकम चढ़ाते हैं। बाबा के खजाने में गहरी रकम होगी। एक दिन चोरों का एक गिरोह आया। बातचीत के सिलसिले में एक चोर ने कहा—"बाबा आप बड़े बेफिक्र होकर दहाड़ते हैं। सावधान रहियेगा वरना किसी दिन धोखा खा जाइयेगा।"

बाबा ने कहा—"तुम लोग कौन हो, क्या करते हो, क्यों यहाँ आये हो, यह सब मुझसे छिपा नहीं है। अब तुम लोगों का साहस इतना बढ़ गया है कि साधुओं को धमकी देने लगे। मुझे धोखा जब मिलेगा तब मिलेगा, पर तुम लोग तो आज ही थाने के भीतर नजर आओगे।"

एक चोर ने कहा—"आप जैसे बाबा हमने बहुत देखे हैं। अपनी सिद्धई अपने पास रखिये। हम इतने बेवकूफ नहीं हैं। हमें गिरफ्तार करनेवाला आज तक कोई पैदा नहीं हुआ है, समझे बाबाजी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतनी बातें कहकर तीनों चोर बड़ी शान से चले गये। उसी रात को तीनों पकड़े गये। दो जमानत पर छूटते ही बाबा के पास आकर रोने लगे।

बाबा ने कहा—"अब रोने से क्या होगा? जैसी करनी वैसी भरनी। पाप करने पर सजा मिलती है।"

"बाबा, हमें बचा लीजिए। अब ऐसी गलती हम नहीं करेंगे। क्षमा करें महाराज। हम आपको पहचान नहीं सके।"

रामदास स्वामी ने कहा—"अगर यह वायदा करो कि आगे से चोरी नहीं करोगे और साधु-महात्माओं को तंग नहीं करोगे तो बच सकते हो।"

चोरों ने हाथ जोड़कर प्रतिज्ञा की। बाबा ने कहा—"अच्छी बात है। तुम दोनों बेदाग छूट जाओगे।"

तीसरा चोर छूट नहीं सका। उसे सजा हो गयी। जेल की ओर से वह मथुरा-वृन्दावन-मार्ग पर मिट्टी ढोने लगा। एक दिन बाबा उधर से पैदल आ रहे थे। इन्हें देखते ही वह दौड़ा हुआ आया और बाबा के पैरों से लिपटता हुआ बोला—"प्रभो, मैं तो बिलकुल निर्दोष था। आपके अभिशाप के कारण फँस गया। बदमाश तो छूट गये। मुझे बचा लीजिए, बाबा।"

बाबा ने पूछा—"ठीक कह रहे हो?"

"हाँ बाबा।"

"तब तुम तीसरे दिन जरूर छूट जाओगे।"

चोर ने चकित होकर पूछा—"ऐसा कैसे हो सकता है, बाबा? मैंने अपील की तो वह भी नामंजूर हो गयी है।"

रामदास स्वामी ने कहा—"जब मेरी जबान से बात निकल गयी तो वह होकर ही रहेगी। तीन दिन बाद चौथे दिन तुम छूट जाओगे।"

उसी दिन न जाने किस खुशियाली में ब्रिटिश शासन के आदेश से प्रत्येक जेल से तीन-तीन कैदी छोड़े गये जिनमें यह चोर भी था।

बाबा के एक गुरुभाई अपने साथ एक दिन एक बालक को लेकर आये और स्वामी रामदास से कहा—"इसे अपनी सेवा में रख लो। चेले की तरह रखना। यहीं दाऊजी मंदिर के पासवाले गाँव का रहनेवाला है।"

प्रेमदास स्वभाव से नम्र और व्यवहारकुशल प्रमाणित हुआ। उन दिनों वृन्दावन में कुछ आर्य-समाजी विद्वान् रहते थे। प्रेमदास उनके यहाँ भी जाता था। उनके उपदेशों का इस पर असर पड़ा। उसने अपनी कंठी-माला फेंक दी। प्रत्येक जाति के यहाँ भोजन करने लगा। एक प्रकार से अपने को परमहंस समझने लगा। बाबा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पास आनेवाले लोग उसकी बातें सुनते तो चकित रह जाते। बाबा का प्रिय शिष्य और ऐसी बातें।

प्रेमदास की शिकायत बाबा के पास पहुँची तो उन्होंने कहा—"अरे, वह तो पागल है। उसकी बात पर ध्यान मत दो।"

इधर बाबा के श्रीमुख से यह बातें निकलीं और उधर वह पागलों की तरह उछल-कूद करने लगा। यहाँ तक कि एक चिमटा लेकर बाहर चला गया। अब उसकी यह हालत हो गयी कि जिधर उसकी दृष्टि जाती, उधर ही उसे बाबा दिखाई देने लगे। भूख, प्यास, नींद, सब गायब। चारों ओर उछल-कूद करने के कारण लहूलुहान हो गया था। एक दिन अपने-आप आश्रम में आ गया। उसकी हालत देखकर सभी सहानुभूति प्रकट करने लगे।

कई लोग उसे पकड़कर बाबा के पास ले आये। उन लोगों ने निवेदन किया—"बाबा, यह आपका बालक है। अब इस पर दया कीजिए।"

बाबा चुप रहे। यह देखकर पुनः लोगों ने निवेदन किया—"गरीबदास मर जायगा, बाबा। अब इसे अधिक दण्ड मत दीजिए।"

बाबा ने कहा—"इसे ठाकुरजी का प्रसाद खिला दो।"

प्रसाद खाने के कुछ देर बाद वह शान्त हो गया। धीरे-धीरे वह अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ गया। जब स्वामीजी को उसने प्रणाम किया तब बाबा ने कहा—"क्यों रे, तू तो कहता था कि सभी वस्तु बराबर है। प्रसाद का महत्त्व देखा। यही वजह है कि वैष्णवजन शुद्ध भाव से ठाकुरजी को भोग चढ़ाते हैं। इसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता।"

× × ×

बाबा निरन्तर लोगों को एक बात कहा करते थे। उनका कहना था कि साधक को चौथे पहर नहीं सोना चाहिए—

१. पहले पहर में सब कोई जागे,
दूसरे पहर में भोगी।
तीसरे पहर में तस्कर जागे,
चौथे पहर में योगी॥

२. अन्तर से काम करते रहना चाहिए। निन्दा या स्तुति पर ध्यान मत दो।

इसका अर्थ यह है कि अच्छे-बुरे कार्यों पर विचार करते हुए काम करना चाहिए। बाहरी लोगों की निन्दा-स्तुति पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

३. सदा शुक्ल रहना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात् हमेशा शुद्ध सात्त्विक रहना। साधक को इन तीन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

बाबा का कहना था कि आलस्य त्यागकर निष्ठापूर्वक भगवत्-विग्रह और महात्माओं की सेवा करने का व्रत लेना चाहिए। शाम को और रात के अंतिम प्रहर में दो-दो घंटे नाम जपना चाहिए। सेवा करते-करते मन एकाग्र होता है तब भजन पर अधिकार होता है। सेवा से चित्त निर्मल होता है, आलस्य दूर होता है और निष्ठा बढ़ती है।

बाबा केवल उपदेश देकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं समझते थे, बल्कि शिष्यों को भजन करने का आदेश देकर वे यह अनुभव कर लेते थे कि कौन, कितना और कैसे कर रहा है। अन्यमनस्क रहनेवालों से कहते—"अब तुझसे भजन नहीं होगा। जा, काम कर।"

बाबा के एक शिष्य ताराशंकर चौधुरी[1] थे। उनका मन भजन में नहीं लग रहा था। श्री चौधुरी ने अपनी समस्या बाबा के सामने प्रकट की। बाबा ने प्रत्युत्तर में कहा—"तेरा मन भजन में नहीं लग रहा है, इसका अनुभव मुझे हो रहा है, इसीलिए तेरा भजन मुझे करना पड़ रहा है।"

इसी प्रकार एक दिन चौधुरी की कुण्डली जागृत होने की स्थिति आयी। उन्होंने बाबा से कहा—"बाबा महाराज, मेरे भीतर की शक्ति न जाने क्यों रुक जा रही है?"

"हाँ, वह कमल है। वही रोक रहा है।"

चौधुरी ने कहा—"तब इसे खोल दीजिए। बड़ा कष्ट हो रहा है।"

बाबा बिगड़ उठे—"चुप। मैं नहीं खोलूँगा।" पुनः कुछ देर बाद बोल उठे—"अगर इस वक्त उस गाँठ को खोल दूँ तो भविष्य में तू कुछ नहीं कर सकेगा। तुझे इस संसार में बहुत कुछ करना है। समय आने पर उन गाँठों को खोल दूँगा। क्रिया करता चल। एक बात याद रखना कि गृहस्थाश्रम और संन्यासाश्रम में कोई भेद नहीं है। संन्यासाश्रम में ठीक से साधना करने पर अलौकिक शक्ति प्राप्त होती है। इससे संसार के आप्तजनों का उपकार किया जा सकता है। गृहस्थाश्रम में यह शक्ति नहीं आती। बस, इतना ही अन्तर है। गुरु की कृपा से ही भगवत्-साक्षात्कार होता है। इस दृष्टि से दोनों आश्रम बराबर हैं। विधिविहित कार्यों को करते हुए हमेशा भगवान् से डरते रहना चाहिए। इसे कभी मत भूलना कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर सर्वदा तेरे साथ हैं। इसे ध्यान में रखने पर सभी कार्य सिद्ध होते हैं और जीव का कल्याण होता है।"

---

१. बाबा का शिष्य बनने के बाद सन्तदास बाबा कहलाये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे आपने कहा—"चित्त निर्मल होने पर सात सिद्ध भूमियों को एक के बाद एक करके पार किया जाता है। इनमें से पाँच भूमियों के बारे में ग्रंथों में उल्लेख है, पर बहुत कम साधक इन पाँचों को पार कर सके हैं।"

सहसा चौधुरी ने पूछा—"मैं इन भूमियों के बारे में कुछ नहीं जानता। क्या आप बताने की कृपा करेंगे ?"

बाबा ने कहा—"जब तू कुछ नहीं जानता तब बताने से क्या समझेगा ? फिर भी संक्षेप में बता रहा हूँ—

गुरु तीरथ अनुराग, विषय विष कर मान।
इसीको जान प्रथम भूमि का प्रमाण॥
हममें कौन जगत में कौन इसका ध्यान।
दूसरा भूमि का प्रमाण॥
एक ब्रह्म जगत में जीव में बसता है।
और सब कारण,
यह है तीसरा भूमि का प्रमाण॥
सर्वत्र समदर्शन और अखण्ड सन्तोष,
चौथा भूमि का प्रमाण।
नारद-भक्ति प्रेम पंचम भूमि का प्रमाण॥

इन पाँचों भूमियों को पार कर लेने पर शेष दो भूमियाँ अपने-आप प्राप्त हो जाती है।"

एक दिन पुनः चौधुरीजी के प्रश्न करने पर बाबा ने कहा—"सद्गुरु की कृपा से मुक्ति मिलती है। जो लोग पुस्तकों के अध्ययन से साधना करते हैं, उन्हें कोई लाभ नहीं होता। यह बात ठीक है कि निष्ठापूर्वक अध्ययन करने पर अनेक सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, पर मुक्ति के साधन प्राप्त नहीं होते। इसके लिए तो सद्गुरु के पास जाना ही पड़ेगा। इधर सद्गुरु को सर्वदा अपने शिष्यों का ख्याल रखना पड़ता है।"

श्री ताराशंकर चौधुरी ने अपनी पुस्तक में एक घटना का उल्लेख करते हुए यह बताया है कि सद्गुरु कैसे अपने शिष्यों का ध्यान रखते हैं। उन्होंने लिखा है—"एक बार जब मैं कलकत्ता में था तब तेज बुखार से पीड़ित हो गया। काफी दवा की गयी, पर रोग दूर नहीं हो रहा था। अचानक मुझे गुरुजी की याद आयी। वे हमेशा गाँजा पीते हैं। अगर एक चिलम गाँजा उनके नाम पर भोग लगा दूँ और शेष भाग को प्रसादरूप में ग्रहण कर लूँ तो मेरा रोग दूर हो जायगा। यह सोचकर चिलम-गाँजा मँगवाया। गुरुदेव को स्मरण कर गाँजा रख दिया। चिलम की आग भभक उठी। मैं समझ गया कि बाबा ने इसे ग्रहण कर लिया है। इसके बाद उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीने लगा। मैंने कभी गाँजा पिया नहीं था। आश्चर्य की बात यह रही कि न मैं खाँसा और न मेरा सिर चकराया। मेरा रोग छू-मंतर हो गया।

"इस घटना के कुछ दिनों बाद बाबा का दर्शन करने वृन्दावन गया। एक दिन बाबा ने अचानक मुझे अपने कमरे में बुलाया। जाने पर देखा कि बाबा के आसपास कई लोग बैठे हैं। बाबा ने मुझसे कहा—'तुम भी जरा प्रसाद ले लो।'

वहाँ मौजूद भक्तों में किसीने कहा—'क्या बंगाली बाबू गाँजा पीते हैं?'

बाबा ने कहा—'नहीं, बाबू गाँजा नहीं पीते। मगर बुखार आने पर मुझे स्मरण करते हुए गाँजे का भोग लगाते हैं और फिर प्रसाद ग्रहण करते हैं।'

यह बात सुनकर मैं आनन्द से विभोर हो उठा। अर्थात् कलकत्ते में जो भोग लगाया था, उसे बाबा ने ग्रहण किया था।

दूसरी ओर इसी गाँजे के कारण एक शिष्य को बारह वर्ष की सजा मिली थी। प्रेमदास जिसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है, बाबा के यहाँ भोजन बनाता था। आश्रम में व्यवहारकुशल होने के कारण सभी उसका आदर करते थे। जो आता, वही उसे गाँजा पिलाने लगता और वह पी लेता था। अत्यधिक गाँजा पीने के कारण उसका माथा गरम रहने लगा। जब देखो तब किसी न किसी पर बरस पड़ता था।

एक दिन स्वामीजी ने कहा—"आजकल तू बड़ा क्रोधी हो गया है। अकारण लोगों से झगड़ता है। आज से बारह साल तक तुझे मौन रहना पड़ेगा।"

बाबा का इतना कहना था कि प्रेमदास की जबान बन्द हो गयी। लाख कोशिश करने पर भी वह बोल नहीं पाया।

इसी बीच एक दूसरे शिष्य पुष्करदास को भोजन बनाने की जिम्मेदारी दी गयी। वस्तुतः यह शिष्य साधन-भजन करने नहीं बल्कि बाबा से रकम ऐंठने के चक्कर में था। उसे मौका नहीं मिल पा रहा था। वह देखता, बाबा के पास बड़े-बड़े राजा, धनी सेठ, सरकारी कर्मचारी आते हैं, काफी भेंट चढ़ाते हैं। आखिर वह सब रकम बाबा कहाँ रखते हैं? काफी खोज करने पर भी उसे नहीं मिला। एकाएक उसके ख्याल में आया—हो न हो बाबा अपनी लकड़ीवाली लँगोटी के भीतर छिपाकर रखते हैं।

यहाँ एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि आखिर स्वामीजी का नाम रामदास काठिया बाबा क्यों पड़ा। आप निम्बार्क-सम्प्रदाय की गुरु-परम्परा में ५४वें आचार्य थे।

इस सम्प्रदाय के बारे में महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज ने लिखा है—"सनकादि महर्षियों को निगूढ़ ब्रह्मज्ञान की शिक्षा देने के लिए भगवान् हंस के रूप में अवतीर्ण हुए थे। नारद हंसरूपी भगवान् के अनुचर हैं। निम्बार्क नारद के शिष्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और भगवान् के सुदर्शन-चक्र के अवतार थे। वे जयन्ती देवी के गर्भ से उत्पन्न अरुणि मुनि के औरस पुत्र थे। उनके शिष्य श्रीनिवास भगवान् के शंख के अवतार थे, ऐसी प्रसिद्धि है। उन्होंने निम्बार्क के 'वेदान्त-पारिजात सौरभ' नामक ब्रह्मसूत्र-भाष्य पर वेदान्तकौस्तुभ नाम से उत्कृष्ट टीका की रचना की थी। गुरु-परम्परा क्रम में देवाचार्य श्रीनिवास के नीचे हैं। वे भगवान् के पद्म के अवतार एवं सिद्धान्तजाह्नवी नामक ब्रह्मसूत्र-व्याख्या के रचयिता थे, जिस पर सुन्दर भट्ट ने 'सेतु' नामक टीका लिखी। इस सम्प्रदाय का मूल प्रामाणिक ग्रंथ वेदान्त-पारिजात सौरभ है।"

इस सम्प्रदाय के ५०वें आचार्य थे—श्री इन्द्रदासजी महाराज, जिन्होंने सर्वप्रथम लकड़ी का लँगोट पहनना शुरू किया। उन्हीं दिनों से इस सम्प्रदाय के आचार्य काठिया बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए। निम्बार्क-सम्प्रदाय की विशेष ख्याति नहीं है, क्योंकि अपने आदर्शों के अनुसार इस सम्प्रदाय के साधुओं को कठोर तपस्या करनी पड़ती थी।

पुष्करदास की धन-पिपासा बढ़ती गयी। उसने सोचा—बाबा तो कभी सोते नहीं। आखिर कैसे लँगोट की तलाशी ली जाय। एक दिन आश्रम में भाँग पीने का कार्यक्रम बना। पुष्करदास ने भाँग में संखिया मिलाकर बाबा तथा अन्य तीन साधुओं को पिला दिया। बाबा पर संखिया का असर नहीं हुआ। शेष तीनों व्यक्ति बेहोश हो गये। रामदास स्वामी ने सोचा—आश्रम में दुर्घटना होने पर पुलिस परेशान करेगी। तुरंत उन्होंने कमंडल से जल निकालकर बेहोश व्यक्तियों पर छिड़का। तीनों होश में आ गये। कारण ज्ञात होते ही उन लोगों ने कहा—"यह आदमी हत्यारा है। इसे पुलिस के हवाले कर देना चाहिए।"

बाबा ने कहा—"यह व्यक्ति अपने कर्म का फल स्वयं ही भोगेगा। आप लोग होश में आ गये हैं, काफी है। बेकार बखेड़ा करने से क्या लाभ? साधु होकर पुलिस के निकट नहीं जाना चाहिए। फिर भी अगर आप जायेंगे तो मैं कहूँगा कि आप लोगों से अधिक भाँग मैंने पी है, मुझे तो कुछ नहीं हुआ। अब आप लोग जो उचित समझें—करें।"

इस घटना से भी पुष्करदास को अक्ल नहीं आयी। आगे चलकर उसने स्थानीय चोरों से समझौता किया। एक बार रात को बाबा सो रहे थे। चोरों ने उनके ऊपर पत्थर फेंका ताकि उसके आघात से बाबा मर जायँ। इससे उनका केवल बायाँ हाथ घायल हो गया। इस हालत में भी वे दाहिने हाथ में लाठी लेकर मारने दौड़े। अपनी असफलता देखकर चोर भाग खड़े हुए। बाबा सारा रहस्य समझ गये, पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। इधर बाबा को कुछ न कहते देख, वह भी अनजान बनकर अपना कार्य करता रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरी बार उसने रोटी में काफी मात्रा में संखिया मिलाया। हालत खराब देखकर भक्तों ने डॉक्टर को बुलाया। बाबा का पेट काफी फूल गया था, इसलिए डॉक्टर की राय के अनुसार उनका लँगोट काट दिया गया। बाबा के इस संकट का समाचार तार से कई जगह भेजा गया।

श्री ताराशंकर चौधुरी तार पाते ही वृन्दावन आये। यही चौधुरी आगे चलकर इस आश्रम के महन्त बने, जिनकी रचनाओं का विद्वत्जन उद्धरण देते हैं। आप उच्चकोटि के सन्त और विद्वान् थे। बाद में आपने अपना पूर्वनाम बदलकर सन्तदास बाबाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए थे।

आश्रम में आते ही आप सीधे बाबा के पास गये और कहा—"यहाँ के लिए रवाना होने के पूर्व मैं प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी के पास गया था। बातचीत के सिलसिले में आपके बारे में बातें हुईं। उन्होंने कहा कि आपका शरीर सिद्ध है। आपको कोई रोग नहीं हो सकता। लगता है किसी साधु ने जहर दिया है। हो सकता है कि और कोई कारण हो।"

बाबा ने कहा—"महात्माजी कितने अलौकिक शक्तिवाले हैं, सोचो। कलकत्ता में रहते हुए उन्होंने मेरे बारे में जान लिया। बाबा पुष्करदास ने दो तोला संखिया खिला दिया। अब बूढ़ा हो गया हूँ, इसलिए कष्ट हुआ।"

चौधुरी ने कहा—"बाबाजी, निस्सन्देह आप महान् हैं। इतना बड़ा काण्ड होने पर भी आपने अभी तक रसोइए को निकाला नहीं। उसे आज ही भगा दीजिए।"

बाबा ने कहा—"उसका भ्रम मिट गया है। उसका ख्याल था कि बाबा लँगोट के भीतर अशर्फियाँ रखते हैं। लँगोट कट गया और खाली निकला तब उसका भ्रम दूर हुआ। उसे तुम निकाल दो।"

चौधुरीजी पशोपेश में पड़ गये। उनकी कठिनाई समझते ही बाबा ने कहा—"जाने दो। मैं ही उसे जाने को कह देता हूँ।"

तुरत पुष्करदास को बुलाया गया। उसके आने पर बाबा ने कहा—"पुष्करदास, तुम ठीक से रसोई नहीं बनाते। कभी रामरस अधिक दे देते हो और कभी मुझे जहर खिला देते हो। अब तुम यहाँ मत रहो। अपना काला मुँह लेकर कहीं चले जाओ।"

इस समय तक प्रेमदास का मौनव्रत समाप्त हो चला था। मौन रहने के कारण आश्रम में वे 'मौनी बाबा' के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। समय पूरा होते ही घोषणा हुई कि कल मौनी बाबा का मौन-भंग होगा। इस खुशी में कल भंडारा होगा।

दूसरे दिन भंडारे के समय बाबा ने कहा—"मौनी, अब तुम बोल सकते हो। बोलो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: KS-MoE-Grant-2

प्रेमदास ने प्रयत्न करके कहा—"श्रीजी।" इसके बाद वह स्वाभाविक रूप से बोलने लगा। पुष्करदास के जाने के बाद पुनः मौनी बाबा को रसोई की जिम्मेदारी दी गयी।

इसका यह अर्थ नहीं कि स्वामी रामदास बहुत उदार या क्षमाशील थे, पर जिसके चरित्र में परिवर्तन नहीं हो सकता, उसके लिए प्रयत्न क्यों किया जाय? ऐसे लोगों पर कृपा करना भी कृपा का अपमान होता है।

स्वामीजी एक ओर कितने क्षमाशील थे, इसका उदाहरण पुष्करदास की घटनाओं से मिलता है, वहीं कितने कठोर थे इसका प्रमाण प्रेमदास के जीवन से मिलता है जो बारह वर्ष तक गूँगा बना रहा। इसी प्रकार की कसौटी पर गरीबदास को भी रगड़ा गया था। गरीबदास का उल्लेख इसके पूर्व किया जा चुका है।

स्वयं स्वामी रामदास ने कहा है—"गरीबदास को जानने के लिए मैं उसके साथ कठोर व्यवहार करता था। मेरे अत्याचारों को सहन करते हुए वह निरन्तर मेरी सेवा करता था। मैं चोरी-छिपे रसोईघर में जाकर उसकी बनाई चीजों को उलट-पुलट देता था और जब वह आता तब अन्य लोगों के सामने फटकारा करता था। लेकिन गरीबदास कभी संयमच्युत नहीं हुआ। बिना कोई जवाब दिये पुनः सुधार-कार्य में लग जाता था। एक बार तो उसने अपने धैर्य का अपूर्व परिचय दिया। ब्रज-परिक्रमा करते समय वह काफी सामान लादकर चलता था। गन्तव्य स्थान पर पहुँचकर उसे ४०-५० आदमियों का भोजन बनाना पड़ता था। सभी को खिलाने के बाद सबसे आखिर में भोजन करता था। एक दिन मैंने सोचा कि आज इसके धैर्य की आखिरी परीक्षा लूँगा। मुझे यह मालूम था कि कड़ी धूप में इतनी दूर पैदल बोझा लेकर आया है। तुरत वह ४०-५० व्यक्तियों के भोजन बनाने में जुट गया है। आज उसका वायु-पित्त जरूर खराब हुआ होगा। मेरे बिगड़ने पर निस्सन्देह क्रुद्ध होगा। यही सब सोचता रहा। भोजन तैयार हो जाने पर मुझे बुलाया गया। सभी साधुओं के लिए वह मोटी-मोटी रोटियाँ बनाता था। केवल मेरे लिए पतली-पतली बनाता था। बाहर प्रचण्ड गर्मी और भीतर चूल्हे की गर्मी से उसका मिजाज जरूर गर्म होगा।

"आसन पर बैठने के बाद मैंने रोटी हाथ में ली और उसे दूर फेंक दिया। कहा—"मेरे लिए कच्ची रोटियाँ बनाता है?" केवल इतना कहकर मैं चुप नहीं रहा। लाठी से उसके सिर पर मारा। तुरत रक्त बहने लगा और दर्द से वह कराहने लगा। कुछ ही पल बाद वह उठा और मेरे चरणों पर सिर रखते हुए बोला—"भगवन्, मुझसे अपराध हो गया है। क्षमा करें।"

उसके इस विनय से मुझे अपार पीड़ा हुई। रोटी ठीक बनी थी। गरीबदास को अकारण मारने की वजह से बड़ी ग्लानि हुई। लगातार कई दिनों तक मैं ठीक से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजन नहीं कर सका। गरीबदास के धैर्य को देखकर मेरा मन प्रसन्न हो गया। इस घटना के बाद से सर्वाधिक प्रेम मेरा गरीबदास पर बना रहा।

× × ×

वस्तुतः रामदास काठिया बाबा एक ऐसे योगी पुरुष थे जिनकी तुलना शिशुओं से की जा सकती है। बच्चों की तरह नटखटपन करना और दूसरे ही क्षण चिरशत्रु को क्षमा कर देना उनकी विशेषता थी। उनकी दृष्टि में राजा-रंक समान थे। यहाँ तक कि चोर-डाकू भी बाबा के पास आते थे जिन्हें दूसरे ढंग से उपदेश देते थे ताकि अपराधों के प्रति उनके मन में घृणा उत्पन्न हो।

स्वामीजी दूर-दूर तक निवास करनेवाले भक्तों का भी ख्याल रखते थे। उनका कहना था कि सत्य और निष्ठा के साथ कार्य करो। असत्य से लाभ उठाने का प्रयत्न मत करो।

बाबा के एक बंगाली शिष्य थे—श्री अभयचरण। एक बार अभयचरणजी अपने एक मित्र के अनुरोध पर उनके यहाँ गये। गर्मी का मौसम। सूखी पहाड़ियाँ दिन-भर में तप गयी थीं। मित्र महोदय रेलवे स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर थे। रेलवे क्वार्टर में असह्य गर्मी थी। अभयचरण एक पेड़ के नीचे खटिया बिछाकर सो गये। दूर-दूर तक कहीं भी आदमी नजर नहीं आ रहे थे। अचानक अभयचरण ने महसूस किया कि सिरहाने कोई पंखा झल रहा है। चौंककर उधर देखा तो गुरुदेव को देखा। झट उठकर प्रणाम करने गये तो वे गायब हो गये। रातभर में तीन बार ऐसी घटनाएँ हुईं।

यही अभयबाबू कलकत्ता में कागज का व्यवसाय करते थे। इनके कई साझेदार थे। एक बार व्यवसाय में काफी घाटा हो गया। कर्ज के बोझ से तंग आकर कलकत्ता से चल दिये। कई जगह घूमते हुए वे अयोध्या आये। कर्ज के बोझ के कारण मन अशान्त था। दिन-रात भगवान् से मनाते थे कि कर्ज से मुक्ति मिल जाय। लेकिन कहीं से कुछ हो नहीं रहा था। अचानक उनके मन में आया—पूजा-पाठ, दर्शन-भक्ति सब बेकार है। कल सरयू नदी में डूबकर आत्महत्या कर लूँगा। सारा झंझट समाप्त हो जायगा।

इसी चिन्ता में खोये हुए थे कि सहसा आपके सामने गुरुदेव प्रकट हुए और बोले—"इस तरह सोते रहने पर भगवान् मिलेंगे? तुम्हें नाम-मंत्र दिया है, उसका जप क्यों नहीं करते? क्या भगवान् यों ही चले आयेंगे?"

इस फटकार को सुनते ही अभयबाबू को होश आया। वे बिछौने पर बैठकर मंत्र जपने लगे। कुछ देर बाद उन्हें दर्शन हुआ। देर तक उस ज्योति का दर्शन करते रहे। फिर धीरे-धीरे वह ज्योति गायब हो गयी तब वे स्वाभाविक रूप में आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

अयोध्या से अभयचरण वृन्दावन आये। यहाँ गुरुदेव के दर्शन हुए। उन्होंने कहा—"भगवान् हैं अब विश्वास हुआ ? अब तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं। चाहे घर पर रहो या अन्यत्र, आज से कर्ज के लिए तुम्हें कोई तंग नहीं करेगा। अब तुम निश्चिन्त होकर अपने घर जा सकते हो। तुम्हारे साझेदार अब सहयोग देंगे।"

अक्सर काठिया बाबा कहा करते थे कि परोपकार करने के लिए ही संत शरीर धारण करते हैं। लेकिन यह परोपकार जागतिक न होकर पारमार्थिक होना आवश्यक है, तभी जीवन सार्थक होता है। इसके लिए साधन-भजन और गुरु-कृपा अनिवार्य है। मोह-बन्धन से मुक्त होने पर ही मुक्ति मिलती है।

× × ×

जनवरी, सन् १९०९ ई०। एक दिन अर्द्ध रात्रि के समय बाबा सोते हुए उठ गये और रामफल नामक सेवक को बुलाकर कहा—"प्यास लगी है, जरा पानी दे।"

पानी पीने के बाद काठिया बाबा ने कहा—"तेरे हाथ का पानी पी लिया रामलाल। अब तू सो जा। मैं भी जाऊँगा।"

रामलाल उनींदी स्थिति में था। बाबा के कहने का आशय वह समझ नहीं सका। वह अपनी जगह पर जाकर सो गया।

भोर के समय काशीदास नामक एक साधु की नींद खुली तो उसने देखा—एक अपूर्व ज्योति से सारा आश्रम जगमगा रहा था। यह क्या था जानने के लिए बाबा की कुटिया के पास गया तो देखा—बाबा चिर निद्रा में लीन थे। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

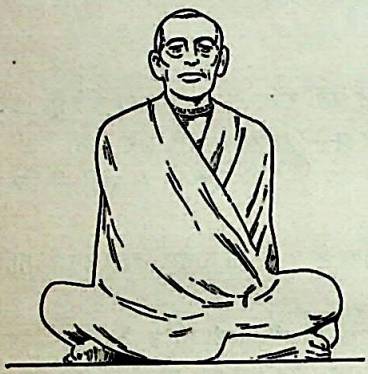

राम ठाकुर

अविभक्त बंगाल ने अनेक संतों को जन्म दिया है। तंत्राचार्य सर्वानन्द, लोकनाथ ब्रह्मचारी, प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी और राम ठाकुर इसी मिट्टी की देन हैं। बांगला देश के एक जिले का नाम है—फरीदपुर। इसी जिले में डिंगामानिक गाँव में श्री राधामाधव चक्रवर्ती सपत्नीक रहते थे। चक्रवर्ती महाशय अपने युग के श्रेष्ठ तांत्रिक थे। आपके गुरु थे—तंत्राचार्य मृत्युंजय।

प्रातःक्रिया से निवृत्त होकर चक्रवर्ती महाशय अपने नित्य के नियमानुसार साधना के लिए जब पंचवटी की ओर रवाना होने लगे तब पत्नी कमलादेवी ने कहा—"आज अभी न जाओ तो अच्छा होगा। लगता है कि कुछ देर बाद प्रसव होगा।"

चक्रवर्ती महाशय ने एक बार प्रसव-पीड़ा से कातर पत्नी की ओर देखते हुए न जाने क्या सोचा और फिर कहा—"चिन्ता की बात नहीं है। भगवत्-कृपा से मंगल ही होगा। मुझे रोको मत। मैं पोखर-स्थित चमारिन को खबर कर देता हूँ।"

इतना कहकर राधामाधव घर से बाहर निकल पड़े। गाँव के तालाब के किनारे चमारों की बस्ती में आकर उन्होंने एक परिचित चमारिन से सारी बातें कहने के बाद कहा—"तुम मेरे यहाँ जल्द चली जाओ। जो उचित व्यवस्था हो करो। मैं पंचवटी पूजा करने जा रहा हूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: KS-MoE-Grant-2

इसके बाद राधामाधव बिना एक क्षण देर किये पंचवटी चले गये। समयानुसार कमलादेवी को प्रसव हुआ। चमारिन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि संतान के स्थान पर जच्चा ने एक थैली को प्रसव किया। नाल काटने की जरूरत नहीं पड़ी। थैली को इधर-उधर देखने के बाद उसने घर के पिछवाड़े बकुल वृक्ष के नीचे कूड़े में फेंक आयी।

थोड़ी ही देर में कई शृगाल आकर वहाँ शोर मचाने लगे। अचानक न जाने क्या हुआ कि एक शृगाल उस थैली को मुँह में दबाकर तेजी से पंचवटी की ओर चल पड़ा। उसके सभी साथी भी साथ-साथ दौड़ने लगे। वह शृगाल उस स्थान पर आकर रुक गया जहाँ राधामाधव ध्यानस्थ थे। शृगालों का कोलाहल सुनते ही उनका ध्यान भंग हुआ। आगे बढ़कर उन्होंने उस थैली को स्पर्श किया। अचानक शिशु के रोदन-स्वर को सुनकर वे चौंक उठे।

राम ठाकुर ने अपने भक्तों से अपनी जन्म-कहानी सुनाते हुए कहा था—"मेरे जन्म के समय किसी पुरुष या नारी द्वारा नाल नहीं काटा गया था। मातृरूपिणी शिवा (शृगाल) द्वारा पंचवटी जैसे सिद्धस्थान में मैं भूमिष्ठ हुआ था। संतान जब रोने लगती है तब वही लगन का समय माना जाता है।"

राम ठाकुर के कथनानुसार उनका जन्म १ फरवरी, सन् १८६० ई० में हुआ था। उस थैली में जुड़वाँ बच्चे थे। एक का नाम राम और दूसरे का लक्ष्मण रखा गया।

राम और लक्ष्मण अपनी माँ की ममता और पिता की छत्रछाया में पलते रहे। लेकिन यह सौभाग्य अधिक दिनों तक उन्हें प्राप्त नहीं हो सका। अभी जीवन के आठ वसन्त वे देख पाये थे कि सहसा पिताजी का निधन हो गया। दोनों अनाथ बच्चों को लेकर माँ किसी तरह चार वर्ष तक गृहस्थी की नौका खेती रही। ठीक इन्हीं दिनों दो घटनाएँ हुईं।

पति के निधन के बाद घर में अभाव बढ़ता गया। दिन-प्रतिदिन स्थिति खराब होती जा रही थी। माँ ने सोचा—अगर अब ये बच्चे कुछ नहीं करेंगे तो सभी को अनाहार रहना पड़ेगा। दूसरी ओर इन दुधमुँहे बच्चों को नौकरी करने को कहने में कलेजा मुँह को आने लगा था। काफी ऊहापोह करने के बाद माँ ने अपने बेटों से सारी समस्या कहने के बाद कहा—"शीघ्र कोई प्रबंध करो।"

दोनों बच्चे अभी पाठशाला में पहली पोथी समाप्त नहीं कर पाये थे कि उन्हें माँ के आदेश पर जीविका की खोज में घर से बाहर निकलने के लिए मजबूर होना पड़ा। आसपास काफी दौड़-धूप करने पर भी राम अपने लिए कोई नौकरी जुटा नहीं सका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन थका-माँदा घर पर आकर सो गया। स्वप्न में उसने देखा कि एक महात्मा उसके पास आये। उसके कानों में एक नाम बताते हुए कहा—"इस नाम का जप करते रहो। तुम्हारा सारा संकट दूर हो जायगा। जीवन सुखी होगा।" और भी न जाने क्या-क्या कहते रहे। अपनी बातें कहने के पश्चात् महात्माजी जब वापस जाने लगे तब राम उनके पीछे-पीछे दौड़ा और गिर पड़ा। तभी उसकी नींद उचट गयी।

राम ठाकुर ने उठकर देखा—कहीं कोई नहीं, पर मंत्र-नाम याद है। पिता पंचवटी में पूजा और ध्यान किया करते थे, इतना वह माँ से जान-सुन चुका था। न जाने क्यों उसे इस स्वप्न पर विश्वास हो गया। उसने निश्चय किया कि आज से इस मंत्र का जप करूँगा। संभव है, परिवार का संकट दूर हो जाय। अगर दूर नहीं होता तो अपना क्या जाता है। ब्राह्मण का पुत्र हूँ, भगवान् का नाम लेने से कल्याण ही होगा। बालक राम की इसी आस्था ने उसे बचपन में ऐसी शक्ति दी।

चारों ओर से निराश होने के बाद एक दिन राम ठाकुर नौकरी की तलाश में भटकता हुआ नोआखाली शहर आया। दो दिन से कुछ खाने को नहीं मिला था। शरीर लस्त हो गया था। अपरिचित स्थान होने के कारण और भी भयभीत-सा था। ठीक इसी समय एक राह-चलते भद्र पुरुष को देखकर उसने पूछा—"क्या यहाँ कोई छोटा-मोटा कार्य मिल सकता है, जहाँ रहने और भोजन की सुविधा प्राप्त हो।"

उक्त सज्जन ने गौर से राम ठाकुर की ओर देखा और तब पूछा—"तुम्हारी जाति क्या है?"

"मैं ब्राह्मण हूँ।"

उक्त सज्जन ने कहा—"मैं तुम्हें कोई नौकरी वगैरह नहीं दिला सकता। रहने और भोजन की सुविधा जरूर दे सकता हूँ। इसके बदले तुम्हें मेरे यहाँ भोजन बनाना पड़ेगा। अगर यह शर्त मंजूर हो तो मेरे साथ चलो।"

डॉ० गोपीनाथ कविराजजी ने लिखा है—"राम ठाकुर उस समय स्थानविशेष में पाचक ब्राह्मण का कार्य करते थे। बंगला में पाचक ब्राह्मण को 'ठाकुर' कहा जाता है। यह पदवी इनके वास्तविक नाम रामचन्द्र चक्रवर्ती के साथ जुड़ गयी थी।"

'मरता क्या न करता' कहावत के अनुसार इस समय राम ठाकुर को आश्रय की आवश्यकता थी। यहाँ कार्य करते हुए वे शेष समय स्वप्न में प्राप्त मंत्र-जप करते रहे। अचानक यहाँ एक ऐसी दुर्घटना हो गयी जिसके कारण ठाकुर को यहाँ से भी भागना पड़ा। एक प्रकार से उसके लिए यह अच्छा ही हुआ। उसके सौभाग्य का द्वार खुल गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घूमते हुए वे कामाख्या मंदिर में आये। यहीं उन्होंने सर्वप्रथम प्रत्यक्ष रूप में अपने गुरुदेव का दर्शन किया। कविराजजी ने लिखा है—"ठाकुर महाशय को सिद्ध-मंत्र का लाभ बाल्यावस्था में ही हो गया था। जब ये बारह वर्ष के थे तब कामाख्या में गुरु अनंगदेव से भेंट हुई। गुरुदेव विदेही थे। रक्त-मांस का शरीर नहीं था। उनके साथ अन्तर्धान हो गये।

ठाकुर महाशय के गुरुदेव एक दिव्य अलौकिक पुरुष थे। उनकी अवस्था के बारे में कोई कुछ बता नहीं सकता था। अन्तरंग शिष्यों के अनुसार उनका नाम अनंग-देव था। अपनी भक्त-मंडली के साथ वे आकाश-मंडल में संचरण करते थे। यदाकदा वे इनके पास भी किसी विशेष प्रयोजनवश मंडली-सहित आते थे। यह विशेष प्रयोजन जहाँ तक मैंने सुना है, किसी साधक को दीक्षा देना होता था। इनकी गुरु-परम्परा में 'दीक्षा' शब्द का कुछ विलक्षण तात्पर्य था। सामान्यतया साधन-मार्ग में चलने के लिए इनके यहाँ 'नाम' का उपदेश होता था। दीक्षा विरलों को मिलती थी। सहस्र-सहस्र शिष्यों में से दो-चार ही दीक्षा प्राप्त कर पाते थे। मैंने सुना था कि इनके यहाँ दीक्षा-प्राप्ति के साथ ही देह का परिवर्तन हो जाता था। केवल इतना ही नहीं, शिष्य इस अभिनव देह को लेकर गुरु की मुक्त-मंडली में सम्मिलित हो जाता था। अनंगदेव स्वयं दीक्षा नहीं देते थे, उनके आदेश से ठाकुर महाशय को अपने भक्त-मंडल से तिरोहित होना पड़ता था। किन्तु इनका जाना और लौट आना किसीके देखने में नहीं आता था।"

राम ठाकुर कामाख्या से अपने गुरु के साथ अज्ञात स्थान की ओर रवाना हुए। यह सन् १८७२ ई० की घटना है। हिमालय स्थित अनेक आश्रमों में उन्होंने संतों के दर्शन किये कौशिक आश्रम में आने पर उन्होंने गुफा के भीतर अनेक संतों को देखा। उनके बारे में प्रोफेसर दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य ने लिखा है—'इन संतों के हाथ-पैर तथा शरीर के अन्य अंगों के मांस जगह-जगह फटे थे। कुछ लोगों की जटाएँ सिर से खिसककर नीचे गिर गयी थीं। वे लोग इतने लम्बे थे कि सभी आसन पर बैठे थे और राम ठाकुर खड़े थे, पर उनकी लम्बाई के बराबर नहीं थे। उन संतों का चेहरा काफ़ी बड़ा था। आँखें मांस से ढँकी हुई थीं। पुतलियाँ शेर की आँखों की तरह चमक रही थीं। ये लोग कितने युगों से यहाँ विराजमान हैं, इसका अन्दाजा लगाना कठिन है। राम ठाकुर के कथनानुसार इन लोगों ने कायाकल्प नहीं किया है। अगर वे लोग ऐसा करते तो उनके शरीर का रंग-रूप अन्य प्रकार का होता। वस्तुतः तपोबल से उनका शरीर चैतन्यमय हो गया है। उनका कभी देहपात नहीं होगा।"

इस सम्बन्ध में एक बार एक शिष्य ने अपनी शंका प्रकट करते हुए पूछा था—"हिमालय की चप्पे-चप्पे भूमि पर जब मानव के चरण पड़ चुके हैं तब ऐसा अद्भुत आश्रम और ऐसे लोग कहाँ छिपे बैठे हैं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम ठाकुर ने कहा—"मैंने अपनी आँखों से ऐसे संतों को देखा है, ऐसी हालत में कैसे मैं अविश्वास करूँ ? संपूर्ण हिमालय रहस्यमय भूमि है। केवल उच्च साधक ही ऐसे स्थानों पर पहुँच सकते हैं और वे ही ऐसे महान् संतों के दर्शन पा सकते हैं। हिमालय में मानसरोवर से काफी आगे उत्तर दिशा में योगाश्रम है। यहाँ कोई मंदिर नहीं है। पत्थर के चार खम्भों से घिरे स्थान पर स्फटिक का एक शिवलिंग है जिसमें से अनवरत प्रकाश निकलता है। आश्चर्य की बात यह है कि इस शिवलिंग की पूजा एक महिला करती है।"

इस स्थान के बारे में कविराजजी ने भी उल्लेख किया है—"शिवलिंग के समीप थोड़ा ऊपर एक आसन था जिस पर ध्यानस्थ मुनि बैठे थे। उज्ज्वल शांत मूर्ति। उनकी ओर अनिमेष रूप में एक देवी मूर्ति देख रही थी। मुनि का मुख-मंडल जटा से आच्छादित था अपूर्व सौन्दर्य था। कुमारी साक्षात् गौरी थी। ठाकुर महाशय वहाँ पाँच दिन थे। आश्रम से थोड़ी दूर नीचे एक पहाड़ी सोता था वहीं से जल लाते थे। आश्रम में प्रतिदिन पुष्पाभूषणयुक्त एक द्वादश वर्षीया बालिका आकर नृत्यगान करती हुई शिवगौरी को एक पुष्पमाला पहनाती थी। उस दिव्य कुमारी का ये नित्य दर्शन करते थे। शाम हो जाने के बाद वह गान करते-करते लौट जाती थी। उसके गीत की भाषा पहाड़ी थी, इसलिए इनकी समझ में नहीं आती थी। ठाकुर महाशय का कहना था कि इस आश्रम जैसा रमणीक वातावरण इस संसार में कहीं देखने में नहीं आया। यहाँ से आगे बढ़ने पर चार व्यक्तियों के साथ एक सुदीर्घ एवं अंधकारपूर्ण पहाड़ी सुरंग पार करके कई दिनों तक यात्रा करते हुए एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ न दिन मालूम पड़ता था, न रात। गोधूलि के समान एक मृदु आलोक निरन्तर छाया रहता था। कुछ समय तक वहाँ ठहरने के पश्चात् इन्हें अनुभव हुआ कि वह प्रकाश कहीं बाहर से नहीं आ रहा है। कुछ आगे बढ़ने पर इन्होंने एक घोर अंधकारपूर्ण स्थान में एक दीर्घकाय महापुरुष को बैठे देखा। वह मंद प्रकाश उन्हींके शरीर से विकीर्ण हो रहा था।

वस्तुतः उस प्रकाश के अतिरिक्त वह स्थान पूर्णतया तिमिराच्छन्न था उस खोह से बाहर निकलने पर इन्हें सूर्य का प्रकाश मिल गया। इनका अनुमान था कि उक्त सुरंग दक्षिण से पर्वत भेदकर उत्तर की ओर गयी थी। सुरंग पार करके इन्होंने एक ऊँचे शृंग पर आरोहण किया, जिसके नीचे कौशिकी पर्वतमाला थी।

अन्तर की आवाज से वे वहाँ से उतरकर कौशिकी आश्रम आये। यह अत्यन्त रमणीक स्थान था। तमाल के आकार का काफी विस्तृत था। इसके चारों ओर वर्फ ही वर्फ दिखाई दे रही थी। आश्चर्य की बात यह थी कि आश्रम के भीतर वर्फ नहीं थी। वहाँ की भूमि शिलामय थी। उसके नीचे एक नदी बड़े वेग से वह रही थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसका नाम मंदाकिनी था। इसे पार करना कठिन था। शिलाखंडों पर सम्हलकर पैर रखते हुए पार होना पड़ता था। आश्रम में नाना प्रकार के फूलों और फलों के वृक्ष थे। उस प्रकार के फल भारत में कहीं नहीं मिलते। इस आश्रम में तेरह आसन लगे हुए थे। इन तेरह आसनों में से दस आसन इस प्रकार विन्यस्त थे कि व्यवधान के कारण उन पर बैठे व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे को देख नहीं सकते थे। शेष तीन आसन उनके सम्मुख थे और ऐसे लगे थे कि दसों आसनों पर बैठे व्यक्तियों को देख सकते थे। ठाकुर महाशय ने पहले दस आसनों पर बैठे व्यक्तियों को देखा था। वे सभी निस्पंद पत्थर की मूर्ति की भाँति निश्चेष्ट एवं प्रसन्न मुद्रा में थे। उनके दोनों हाथ नीचे थे। उनकी त्वचा पत्थर की भाँति कर्कश और कहीं-कहीं फटी थी। किसी-किसीकी जटा खुलकर कंधे पर लटक रही थी। वे लोग इतने दीर्घकाय थे कि उनके बैठे होने की स्थिति में भी ठाकुर महाशय को माला पहनाने के लिए पत्थर रखकर खड़ा होना पड़ा था। उनकी आँखें पलकों के लटकते हुए चमड़े से ढँकी थीं। नेत्रगोलक के भीतर छह इंच से अधिक की गहराई में पुतलियाँ चमकती हुई दिखाई देती थीं। उनके मुख-मण्डल पर लाली थी। वे कितने युगों से यहाँ बैठे थे, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता।

मैंने ठाकुर महाशय से पूछा—"क्या इन्होंने अपना कायाकल्प कराया था?"

उन्होंने कहा—"नहीं, कायाकल्प करने से शरीर नवीन हो सकता है, स्थायी नहीं। तपस्या के प्रभाव से इनका शरीर चिन्मय हो गया था।"

शेष तीन आसन खाली थे। वे महापुरुष प्रयोजन के अनुरोध से जगत्-कल्याण के लिए निम्न भूमि में चले गये थे। इस आश्रम में राम ठाकुर पन्द्रह दिन रहे। नियमित रूप से उन महात्माओं की सेवा फल-मूल-नैवेद्य से करते थे। संध्या को फलाहार रख जाते थे। दूसरे दिन प्रातःकाल सेवा में उपस्थित होने पर इन्हें छिलके पड़े मिलते थे। सोलहवें दिन प्रत्येक महापुरुष को साष्टांग दण्डवत् करते हुए इन्होंने विदा ली। प्रणाम करने पर उन प्रस्तरवत् तपस्वियों ने हाथ उठाकर अभय मुद्रा प्रदर्शित कर आशीर्वाद दिया। ठाकुर महाशय को अपने इस पन्द्रह दिवस के सम्पर्क-काल में इन महापुरुषों के शरीर में यही एकमात्र स्पंदन दिखाई दिया। इस आश्रम की स्थिति के बारे में उन्होंने कहा था कि यहाँ से मानसरोवर बहुत दूर है। मैंने जिज्ञासा की—"संसार के अनेक प्रसिद्ध यात्रियों ने मानसरोवर के आसपास का सारा प्रदेश छान डाला, किंतु उनमें से किसीने भी अपने यात्रा-विवरण में आपके द्वारा निर्दिष्ट इन दोनों आश्रमों तथा उनमें रहनेवाले तपस्वियों का उल्लेख नहीं किया है। इसका कारण क्या हो सकता है?"

ठाकुर महाशय ने कहा—"ये दिव्य आश्रम सहज ही गोचर नहीं हैं। योगसिद्ध देहधारी ही इनका संधान पा सकते हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठाकुर महाशय की प्रकृति अत्यन्त नम्र और विनयशील थी। गले में तुलसी की माला, हरिनामी ऊर्ध्व वस्त्र तथा प्रसन्नता से मंडित आकृति, दर्शकों के हृदय में आध्यात्मिक ज्योति विकीर्ण करती थी। ये विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे। अक्षर-ज्ञान अत्यन्त साधारण था किसी तरह बंगला की सामान्य पुस्तकें पढ़ लेते थे और पत्र-व्यवहार कर लेते थे। विनीत तो इतने थे कि आगन्तुक का हाथ उठने के पहले ही उसे प्रणाम करते थे। इतने विनम्र और कम पढ़े-लिखे होने पर भी इनका ज्ञान अपरिसीम था और साधन-मार्ग में प्राप्त वैशिष्ट्य अनन्यसाधारण। भोजन तो करते ही नहीं थे। सामान्य दो-एक फल से इनकी क्षुधा तृप्त हो जाती थी।"

राम ठाकुर को १२ वर्ष की अवस्था में गुरुदेव मिले और वे अपने साथ पूरे ३५ वर्ष तक रखे रहे अर्थात् सन् १८७२ ई० से सन् १९०७ तक। इसके बाद गुरुदेव ने उन्हें वापस भेज दिया। मार्ग में उन्होंने देखा कि एक कोढ़ी एक वृक्ष के नीचे लेटा जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रहा है। उसके सड़े अंग से दुर्गन्ध निकल रही है। दयामय राम ठाकुर उसके पास बैठकर उसके वदन से कीड़े निकालने लगे।

कुछ देर तक वे इस तरह कीड़े निकालते रहे। सहसा गुरुदेव की आवाज आयी—"इस तरह कब तक कीड़े निकालते रहोगे?"

"फिर?"

गुरुदेव ने किसी वृक्ष की पत्तियों का रस शरीर पर पोतने का आदेश देते हुए कहा—"इससे ठीक हो जायगा।"

थोड़ी देर में रोगी के शरीर के सभी घाव ठीक होने लगे। इसके बाद पुनः गुरुदेव ने किसी अन्य वृक्ष की पत्तियाँ देते हुए कहा—"इन पत्तियों को इसके वदन पर फेरते रहो।"

देखते ही देखते गुरु-कृपा से रोगी पूर्ण स्वस्थ हो गया। कोढ़ के सभी दाग मिट गये। गुरुदेव ने राम ठाकुर से कहा कि अब सीधे घर चले जाओ। इतना कहकर वे अन्तर्धान हो गये।

एक अर्से के बाद बेटे को वापस आते देख माँ हर्ष से विभोर हो उठी। पूरे पैंतीस वर्ष बाद लौटा है। जब नौकरी के सिलसिले में गया था तब नन्हा-सा था और अब तो प्रौढ़ हो गया है।

राम ठाकुर ने देखा कि घर की वही स्थिति है जो यहाँ से नौकरी की तलाश में जाने के समय थी। कुछ देर के लिए उन्हें कष्ट हुआ। एकाएक उन्होंने निर्णय किया कि माँ को बुढ़ापे में कष्ट न हो, इसके लिए उन्हें पुनः नौकरी की तलाश करनी होगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस निश्चय के बाद वे पुनः नोआखाली शहर में आये और एक इंजीनियर के यहाँ पाचक का कार्य करने लगे। खाली समय में गुरुदेव के आज्ञानुसार साधना करते रहे। सहसा इनके मालिक इंजीनियर को जब मालूम हुआ कि राम-ठाकुर साधारण पाचक नहीं, बल्कि उच्च स्तर के साधक पुरुष हैं तब उन्होंने पाचक-कार्य से उन्हें हटाकर अपने विभाग में नौकरी दिला दी।

कुछ दिनों बाद राम ठाकुर की बदली (तबादला) फेनी में हो गयी। उन दिनों बंकिमचन्द्र चटर्जी के घनिष्ठ मित्र बंगाल के सुप्रसिद्ध कवि नवीनचन्द्र सेन डिप्टी मजिस्ट्रेट थे। आपने राम ठाकुर के बारे में 'आमार जीवन' में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र किया है। लोगों की जबानी उन्होंने सुना कि राम ठाकुर कमरे में पूजा करते-करते अचानक गायब हो जाते हैं। किसीने बताया कि उन्हें लाल चन्दन लगाये पेड़ से उतरते देखा है।

राम ठाकुर चन्द्रनाथ दर्शन करने के लिए चतुर्दशी को जाना चाहते थे। उन्होंने ओवरसियर के पास छुट्टी के लिए आवेदन-पत्र भेजा। उसने यह लिखकर कि इंजीनियर साहब निरीक्षण के लिए आनेवाले हैं। इसलिए छुट्टी नहीं दी जायगी—आवेदन-पत्र वापस कर दिया। चतुर्दशी के दिन बड़े दुःखी मन से काम पर जाने की तैयारी करने लगे। राम ठाकुर ने गुरुदेव से कहा था कि चतुर्दशी के दिन चन्द्रनाथ में आपके श्रीचरणों का दर्शन करूँगा, पर इस बाधा से मुक्ति कैसे मिलेगी। इन्हीं बातों का चिन्तन कर रहे थे कि अचानक तार आया जिसमें इंजीनियर के न आने की सूचना थी। राम ठाकुर की छुट्टी मंजूर हो गयी।

तुरत वे चन्द्रनाथ की ओर रवाना हो गये। यह चमत्कार गुरु-कृपा से हुआ है, यह समझते उन्हें देर नहीं लगी। इस प्रसन्नता में वे उल्टी दिशा की ओर रवाना हुए। काफी दूर आने के बाद उन्हें होश आया कि वे उल्टी दिशा में चले आये हैं। अब आज चन्द्रनाथ पहुँचना संभव नहीं।

बड़े सन्तप्त हृदय से एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। ठीक इसी समय एक संन्यासी ने आकर पूछा—"क्या आप चन्द्रनाथ दर्शन करने जा रहे हैं ?"

राम ठाकुर ने कहा—"जी हाँ, पर आज अब कैसे पहुँच सकता हूँ। भ्रमवश उल्टी दिशा की ओर आ गया।"

संन्यासी ने कहा—"चिन्ता की बात नहीं है। सामने की पहाड़ी के भीतर से चलने पर हम शाम के पहले ही चन्द्रनाथ पहुँच जायेंगे।"

इतना कहकर उन्हें साथ ले संन्यासी महाराज चल पड़े। फेनी से ३० मील और यहाँ से ४० मील दूर चन्द्रनाथ था। रात को वहाँ दर्शन आदि करने के बाद सवेरे संन्यासीजी पुनः फेनी के पास एक जंगल में इन्हें छोड़ गये। यहीं पर उनकी मुलाकात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्यालय के एक चपरासी से हुई। इस चपरासी के माध्यम से इस घटना का प्रचार हुआ।

कवि नवीनचन्द्र ने स्वयं एक बार एक अद्भुत दृश्य देखा। वे अपने कमरे में बैठे थे। सहसा उन्होंने देखा कि उनके सामने राम ठाकुर मुँह लटकाये बैठे हैं। किधर से कब आये, यह बात उनकी समझ में नहीं आयी। अगर दरवाजे से आते तो सामने वे जरूर दिखाई देते। पर ऐसी घटना नहीं हुई। उन्होंने उस समय राम ठाकुर से कुछ नहीं कहा। बाद में नवीनचन्द्र के सामने एक सज्जन ने इसी तरह का प्रश्न किया था—"क्या कोई मनुष्य शून्य मार्ग से यात्रा कर सकता है ?"

ठाकुर महाशय ने कहा—"हाँ, जिस मार्ग से विद्युत् चल सकती है, मनुष्य उसी मार्ग से सभी वस्तुएँ साथ लेकर उसी प्रकार चल सकता है। इतना ही नहीं, एक ही समय में वह विभिन्न स्थानों में उपस्थित हो सकता है।"

गुरु के आदेश पर इस प्रकार की योग-विभूतियों का प्रदर्शन उन्हें कभी-कभी करना पड़ता था। राम ठाकुर के एक प्रिय भक्त थे—श्री इन्दुभूषण बनर्जी। आपने अपने गुरु की कई योग-विभूतियों का उल्लेख किया है।

एक बार आपका एक छोटा बच्चा शाम को कहीं खो गया। घर के लोग परेशान होकर चारों ओर दौड़-धूप करने लगे। उन दिनों पास ही अन्य भक्त के यहाँ राम ठाकुर ठहरे हुए थे। उन्हें समाचार दिया गया। उन्होंने कहा—"चिन्ता करने की जरूरत नहीं। लड़का मिल जायगा।"

माँ-बाप को इस आश्वासन पर संतोष नहीं हुआ। अखबारों में विज्ञापन दिया गया। थाने में रिपोर्ट की गयी। दूसरे दिन एक सज्जन ने आकर कहा—"अखबार में विज्ञापन पढ़कर आया हूँ। आपका बालक अमुक थाने में है। दरअसल कल शाम को वह बालक मुझे खोया-खोया-सा दीखा। पूछने पर पता चला कि घर भूल गया है। पता बता नहीं सका। आखिर कहाँ ले जाता ?"

लोग तुरत उस बालक को थाने जाकर ले आये। जब उससे पूछा गया कि तू इतनी चौड़ी सड़कें कैसे पार करता था तब उसने कहा—"रास्ते में ठाकुर तो बराबर मेरे साथ थे। वही इधर से उधर सड़क पार कराते थे। उनके साथ रहने पर मुझे जरा भी डर नहीं लगा।"

इसी प्रकार एक बार अपने कई भक्तों के साथ राम ठाकुर ढाका से ग्वालन्दो आये। यहाँ से उन्हें रेल द्वारा आगे कलकत्ता जाना था। स्टीमर से उतरकर भक्तों ने गुरुदेव के लिए डिब्बे में बिस्तर लगा दिया। इसके बाद उन्हें वहीं बैठाकर सभी भक्त स्टेशन के होटल में भोजन करने चले गये। लौटकर वे लोग जब आये तब देखा कि गुरुदेव गायब हैं। गाड़ी छूटने का वक्त हो गया, पर गुरुदेव आते नहीं दिखाई दिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फलस्वरूप झटपट सारा सामान उतारकर लोग प्लेटफार्म पर ठहर गये। सारी रात लोग गुरुदेव की प्रतीक्षा करते रहे।

भोर के वक्त गुरुजी आते दिखाई दिये। उनके साथ एक दस-बारह वर्ष का बालक था। पास आते ही राम ठाकुर ने कहा—"राह-खर्च रखकर बाकी फालतू रकम आप लोगों के पास जितनी हो, कृपया इस बालक को दे दें।"

रुपये पाकर लड़का चला गया। राम ठाकुर ने कहा—"इस बालक का पिता मेरा पुराना भक्त है। कल शाम को अचानक उसकी तबीयत बहुत खराब हो गयी। अन्तिम दर्शन करने के लिए मुझे याद करने लगा। घर के लोगों से कहा कि तुम लोग जल्दी से भोजन कर लो। वे लोग भोजन करने गये और तभी मैं वहाँ पहुँच गया। मुझे देखते ही मेरे पैर पकड़कर रोते-रोते सुरधाम चला गया। दो अनाथ बच्चे, विधवा औरत घर पर हैं। खाने का ठिकाना नहीं। कैसे मृतक का कार्य करेंगे? आगे क्या होगा, भगवान् जाने।"

राम ठाकुर कितने बड़े साधक थे, इसका उदाहरण निम्न घटनाओं से पता चल जाता है। कैवल्यधाम के महन्त श्री श्यामाचरण चटर्जी एक बार राम ठाकुर से मिलने के लिए उनके यहाँ गये। दरवाजे के पास जाते ही उन्होंने देखा कि राम ठाकुर सामने बैठे हैं और एक बड़ा साँप उनके शरीर से लिपटा हुआ है।

जब तक चटर्जी महाशय चकित होकर कुछ पूछें, उसके पहले ही राम ठाकुर ने कहा—"आप यहाँ क्यों आये हैं? जल्दी चले जाइये।"

चटर्जी महाशय से रहा नहीं गया। पूछ बैठे—"आखिर यह क्या है?"

राम ठाकुर ने कहा—"मुझे बुखार आ गया है। पास में कोई नहीं है, इसलिए यह साँप सेवा करने आया है।"

यह बात सुनकर चटर्जी महाशय तुरत प्रणाम करने के बाद चले गये।

इसी प्रकार की एक घटना कलकत्ता के बीडन स्ट्रीट स्थित एक भवन में हुई थी। उस दिन वहाँ डॉ० इन्दुभूषण बनर्जी, जानकीदास गुप्त कविराज आदि लोग राम ठाकुर के सामने बैठे थे। एक दृश्य देखकर सभी लोग चौंक उठे। धीरे-धीरे राम ठाकुर के बदन में चेचक के दाने उभर आये। कविराजजी ने जाँचने के बाद कहा—"यह तो चेचक के दाने हैं। सभी लोग सावधानी से काम लें। मैं घर जाकर अभी दवा भेजता हूँ।"

कविराजजी के जाने के बाद राम ठाकुर ने कहा—"उनका कहना ठीक था। ये दाने चेचक के हैं। वे बेकार डर गये। मुझे दवा की जरूरत नहीं है।"

इतना कहने के बाद राम ठाकुर उँगलियों से उन दानों को दबाने लगे। एक घण्टे बाद सभी दाने गायब हो गये। बाद में उन्होंने कहा—"एक मरणासन्न चेचक रोगी को ठीक करने के कारण वही रोग अक्सर मुझ पर आक्रमण करता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्ध महापुरुष सूक्ष्म रूप में आकाश-मार्ग से यात्रा करते हैं। एक स्थान पर उपस्थित रहते हुए वे भक्तों की पुकार पर उन्हें संकट से बचाने के लिए बहुत दूर दूसरे स्थान पर तुरत पहुँच जाते हैं। स्वामी विशुद्धानन्द, श्यामाचरण लाहिड़ी, रामकृष्ण देव आदि इस प्रकार अपने भक्तों की सहायता के लिए उपस्थित हुए थे। स्वयं राम ठाकुर भी अपने एक भक्त डॉ० प्रभात चक्रवर्ती के घर गये थे।

कहा जाता है कि उन दिनों डॉ० चक्रवर्ती के यहाँ तीन व्यक्ति चेचक रोग से पीड़ित थे। बैठक में अपने मित्रों से इसी समस्या पर डॉ० चक्रवर्ती बातें कर रहे थे। तभी उन्हें महसूस हुआ कि राम ठाकुर सदर दरवाजे से भीतर आकर सीधे आँगन की ओर चले गये।

भीतर जनानखाने में चक्रवर्ती की पत्नी तीनों रोगियों की सेवा में व्यस्त थीं। अचानक सामने दीवार में टँगे आईने में राम ठाकुर को आते देख, वे एक आसन लाने गयीं ताकि उस पर गुरुदेव को बैठा सकें। आसन लेकर जब वे आयीं तब देखा कि राम ठाकुर अन्तर्धान हो चुके हैं। तभी तेजी से डॉ० चक्रवर्ती भीतर आये। गुरुदेव के स्वागत में कोई त्रुटि न हो, इस बात के लिए उन्हें चिन्ता थी। लेकिन गुरुदेव कहाँ गायब हो गये? पत्नी से पूछने के बाद वे घर में चारों ओर उन्हें खोजने लगे। लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कहीं भी गुरुदेव नहीं मिले। चक्रवर्ती महोदय सोचने लगे कि मुमकिन है कि मुझे भ्रम हुआ हो, पर पत्नी और मित्रों ने भी उन्हें आते देखा था। क्या सभी भ्रम के शिकार हुए थे।

राम ठाकुर उन दिनों हरिद्वार में थे। चक्रवर्ती ने गुरुदेव को पत्र लिखते हुए इस घटना का वर्णन किया। बाद में पता चला कि चक्रवर्ती की पत्नी छूत-रोगियों की सेवा करने में घबरा रही थी। उनके भय को दूर करने के लिए वे आये थे।

सन्तों की दृष्टि में न कोई हिन्दू होता है और न ईसाई या मुसलमान ही। जिस प्रकार किसी धर्म के सन्त को देखकर मस्तक अपने-आप झुक जाता है, ठीक उसी प्रकार सन्त भी भक्तजनों को अपना लेते हैं। राम ठाकुर की जन्मभूमि डिंगामानिक में उनका जन्म-दिवस मनाया जा रहा था। उनके बारे में गाँव में यह प्रसिद्ध हो गया था कि राम ठाकुर असाधारण सन्त हैं। हजारों भक्त दूर-दूर से आये थे।

अचानक इन्दु बनर्जी नामक एक भक्त ने देखा कि कुछ दूरी पर एक वृक्ष के नीचे एक मुसलमान बैठा है। अपनी गोद में एक गठरी रखे हुए है। डॉ० बनर्जी कुतूहलवश उसके पास जाकर बोले—"बड़े मियाँ, यहाँ बैठे क्यों हैं? क्या किसीकी प्रतीक्षा कर रहे हैं?"

मुसलमान किसान ने कहा—"नहीं, मालिक। मैं तो अपने राम दादा के भोग के लिए थोड़ा फल ले आया हूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तब यहाँ क्यों बैठे हैं ? भीतर जाकर दे आइये ।"

"इतनी भीड़ में जाने की हिम्मत नहीं हुई, साहब । ठाकुर की कृपा होगी तो स्वयं ही बुला लेंगे ।"

मुसलमान किसान की श्रद्धा देखकर डॉ० बनर्जी स्वतः उसकी पोटली से केला, अमरूद, चावल आदि लेकर भीतर दे आये । बाहर आकर उन्होंने किसान से पूछा— "आपने तो हिन्दुओं की तरह नैवेद्य चढ़ाया । कहीं आपके मौलवी साहब ने सुन लिया तो इसे गुनाह करार देंगे ।"

किसान ने कहा—"गुनाह क्यों करार देंगे ? खुदा के फरिश्ते सब बराबर होते हैं । वे एक ऊँचे टीले पर बैठे हर किसीको देखते हैं । हमारे राम ठाकुर भी ऐसे टीले पर बैठे हैं ।"

डॉ० बनर्जी समझ गये कि इस किसान की अन्तरात्मा को ठाकुर ने स्पर्श किया है तभी इतनी ऊँची बात कह गया । मन ही मन उन्होंने राम ठाकुर को स्मरण करते हुए प्रणाम किया ।

राम ठाकुर की अलौकिक लीला देखकर भक्तों को महान् आश्चर्य होता था । पटना के एक गाँव में राम ठाकुर की एक भक्त महिला रहती थीं । उनके यहाँ पहली बार आम फला तो उन्होंने अमावट बनायी । महिला ने सोचा कि इस बार जब गुरुदेव आयेंगे तब उन्हें भोग में दूँगी । अमावट को सूखने के लिए धूप में रखती रहीं । एक दिन एक कौआ उसे चोंच में दबाकर उड़ गया । बेचारी मन ही मन कौए को गाली देने लगी । इतने श्रम से गुरुदेव के नाम पर बनाई अमावट भी गायब हो गयी ।

उन दिनों राम ठाकुर मुजफ्फरपुर में एक भक्त के यहाँ थे । इस भक्त का नाम रोहिणी मजुमदार था । नीचे बैठक में राम ठाकुर को घेरकर उनका प्रवचन सुन रहे थे । ठीक इसी समय श्रीमती मजुमदार बैठक में अमावट का टुकड़ा लेकर आयीं ।

उन्होंने कहा—"अभी-अभी एक कौआ अमावट के इस टुकड़े को लेकर छत पर आया और इसे मेरे पास रखकर उड़ गया । आश्चर्य की बात यह है कि इस टुकड़े पर उसके चोंच के निशान कहीं नहीं हैं । मैं यह पता लगाने आयी हूँ कि इस अमावट का क्या करूँ ?"

राम ठाकुर ने कहा—"चिन्ता की कोई बात नहीं है । यह महाप्रसाद है । उपस्थित सभी लोगों को थोड़ा-थोड़ा बाँट दो ।"

उपस्थित लोगों ने प्रसाद के रूप में अमावट को ग्रहण किया । कौए का उच्छिष्ट है, इस बारे में किसीको घृणा नहीं हुई । इस घटना के कुछ दिनों बाद राम ठाकुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पटना जिला स्थित उक्त गाँव में आये। सभी प्रसन्न थे। केवल वह महिला जरा खिन्न थी। राम ठाकुर को समझते देर नहीं लगी।

उन्होंने कहा—"आपने मेरे लिए जो अमावट बनायी थी, उसे एक कौआ ले गया था। मुजफ्फरपुर के सभी भक्तों ने प्रसाद के रूप में ग्रहण किया था। कौए के प्रति अब नाराज होने की जरूरत नहीं। मेरी सामग्री मुझ तक पहुँच गयी थी।"

गुरुदेव के इस चमत्कार से वह महिला आनन्द से पुलकित हो उठी। बाद में उपस्थित लोगों को राम ठाकुर ने अमावटवाली सारी घटना सुनायी।

महामहोपाध्याय डॉ० गोपीनाथ कविराज ने राम ठाकुर की एक अलौकिक कहानी का वर्णन किया है—"उस समय राँची में एक साधु महाराज आये थे जिनकी ख्याति फैल रही थी। उनका कहना था कि मैं स्पर्शमात्र से किसीकी कुंडलिनी जाग्रत कर सकता हूँ। जो लोग इनके सम्पर्क में आये, वे इनसे काफी प्रभावित हुए। एक व्यक्ति को महात्माजी की कृपा से ग्रह, नक्षत्र-मंडल के दर्शन हुए थे। उसे विराट् ज्योति का समुद्र जैसा दिखायी पड़ा था। फलतः उसे अपने गुरु की शक्ति पर अभिमान हो गया।

बातचीत के सिलसिले में उसने एक दिन राम ठाकुर के एक शिष्य से अपने गुरु की काफी प्रशंसा की। सारी बातें सुनने के पश्चात् राम ठाकुर के शिष्य ने सोचा—मेरे गुरु ने मुझे यह सब क्यों नहीं बताया? उन्होंने मुझे क्यों नहीं बताया?

मन में यह विचार उत्पन्न होते ही ठाकुर का शिष्य इस बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए तुरत गुरु के निकट चल पड़े। ठाकुर उन दिनों नोआखाली में निवास कर रहे थे। ठाकुर अपनी अतीन्द्रिय-शक्ति के जरिये शिष्य के आने का कारण समझ गये। उन्होंने कुशल-मंगल पूछने के बाद शिष्य से कहा—"जाओ, स्नान कर लो।"

शिष्य तो आक्रोश में था। उसने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा—"स्नान नहीं करूँगा। मैं आपके निकट एक प्रश्न को लेकर आया हूँ। आपने मंत्रोपदेश दिया, मार्ग बताया, किन्तु उससे मुझे मिला कुछ भी नहीं। राँची में एक महात्मा स्पर्शमात्र से कुंडलिनी जगा देते हैं। आपके श्रीचरणों का सम्पर्क प्राप्त करते हुए भी मैं इस प्रकार के अनुभव से शून्य ही रह गया। आपने मुझे कुछ भी नहीं दिया।"

ठाकुर महाशय ने कहा—"वह सब भूतों का खेल है। उस ओर ध्यान देने की जरूरत नहीं है।"

शिष्य को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा कि गुरुदेव मुझे बहला रहे हैं। ठाकुर के काफी समझाने-बुझाने पर भी वह स्नान-भोजन के लिए तैयार नहीं हुआ। यह देखकर ठाकुर ने कहा—"ठीक है। मेरे सामने आसन लगाकर बैठ जा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज्ञानुसार भक्त ने आसन लगाया। उसके सामने बैठते हुए राम ठाकुर ने कहा—"अब सामने देखो।" शिष्य जब सामने देखने लगा तब उन्होंने उसे धीरे से स्पर्श किया।

अचानक उसे लगा जैसे उसके सारे शरीर में बिजली दौड़ गयी है और वह बेहोश हो गया। लगभग डेढ़ घंटे तक वह बेहोश रहा। गुरु ने अनुभव किया कि अभी काफी कच्चा शरीर है, ज्योति सहन नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी शक्ति वापस ले ली।

शिष्य ने आँखें खोलकर कहा—"नये प्रकार की ज्योति देखी।"

ठाकुर ने कहा—"मुझमें देने की शक्ति है, पर तुम उसे ग्रहण नहीं कर सकते। यह भीतर की वस्तु है। इसका अनुभव अपनी सत्ता से होगा। जब होगा तब अनन्त-काल के लिए होगा, अपने समय से होगा। उसके पूर्व अनुभव की आकांक्षा करके भूतों की कला में मत पड़ो।"

बाद में उन्होंने उसे समझाते हुए कहा—"कुंडलिनी क्या है? यह कुंड स्थित अथवा कुंडाश्रित शक्ति का नाम है। कुंड का अर्थ है—आधार। शक्ति जब आधार में रहती है अथवा आधार का अवलंबन करके रहती है, उस समय उसका नाम कुंडलिनी है। यहाँ शक्ति की सुप्तावस्था है। जब शक्ति शिव का या शून्य का अवलंबन करेगी अर्थात् निराश्रय अथवा निरालंब होगी तब समझना चाहिए कि कुंडलिनी जाग गयी। द्विदल के ऊपर शून्य अथवा निरालंब है। वहाँ किसी प्रकार का आश्रय है नहीं—'निराश्रयं मां जगदीश रक्ष।' द्विदल का अभिप्राय है—दो पक्ष। वही केन्द्र है, वहाँ से दोनों ओर जाना संभव है अर्थात् ऊपर अव्यक्त की ओर, नीचे दृश्य की ओर।"

आगे आपने कहा है—"याचना नहीं करनी चाहिए। गुरु का दान अयाचित होता है। जो दिखाई पड़ता है, वह मिथ्या है, जो देखता है वह भी भ्रममूल देखता है।

गुरु जिस बीज को देते हैं, उसी बीज के साथ वास करना चाहिए। उसके साथ घरेलू सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए, उसे प्यार करना चाहिए। बीज के साथ वस्तुतः गुरु ही जन्म ग्रहण करते हैं, इसलिए छोड़कर जाने का उपाय नहीं है।

गुरु नाव को ठेल देते हैं। बाद में शिष्य को डाँड़ खींचना (चलाना) चाहिए। अन्यथा केवल गुरु के ठेलने से चलने पर शिष्य को अत्यन्त कष्ट होता है, क्योंकि वह सम्हाल नहीं सकता है अतएव डाँड़ स्वयं चलाना चाहिए, केवल सम्हालने के लिए। गुरु ने तो सब कुछ दे रखा है, आवश्यकतानुसार शिष्य को सब कुछ प्राप्त हो जाता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम ठाकुर में एक विशेषता यह थी कि वे भोजन नहीं करते थे। केवल दो-एक फल खाकर अपनी क्षुधा मिटाते रहे। अपने भक्तों को नाम जपने की सलाह देते थे। उनका कहना था—"हरे कृष्ण आदि सोलह नाम, बत्तीस अक्षर और प्रणव एक ही वस्तु है। हरे, कृष्ण और राम, ये तीन अंश ही प्रणव के तीन अवयव 'अ', 'उ' और 'म' हैं। राम के माने रति अथवा प्रेम। कृष्ण के माने है एकाग्रता। अतएव इसका अर्थ है, सर्वदा स्थिर होकर प्रेम के साथ हरि-नाम लो।"

राम ठाकुर के अनेक शिष्य भक्त थे जिनमें माधव पागला उच्चस्तर के साधक हुए थे। माधव पागला की लीलाभूमि काशी थी। वे अपने सभी भक्तों को केवल नाम जपने की सलाह देते थे।

आपका निधन चौमुहनी नामक स्थान में अप्रैल १९४९ ई० को हुआ था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधक रामप्रसाद

"सरकार, नये गुमाश्ते के कारण सारी कचहरी (आफिस) चौपट हो रही है। अगर यही हाल रहा तो सब चौपट हो जायगा।" प्रधान गुमाश्ते ने शिकायत की।

यह पहली शिकायत नहीं है। इसके पूर्व कई बार नये गुमाश्ते की शिकायत अन्य गुमाश्तों ने की है। आज जब प्रधान गुमाश्ते ने शिकायत की तब दुर्गाचरण झुँझला उठे। आखिर नया गुमाश्ता क्या कर रहा है, जिसकी वजह से सारी कचहरी नाराज है।

जमींदार दुर्गाचरण मित्र ने कहा—"कहाँ है नया गुमाश्ता ? बुलाओ।"

नये गुमाश्ते के आने पर जमींदार ने पूछा—"क्यों जी, रामप्रसाद, क्या बात है ? कचहरी के सभी लोग तुम्हारी शिकायत कर रहे हैं। तुम काम-धाम नहीं करते, सिर्फ वहियों में न जाने क्या अल्लम-गल्लम लिखा करते हो। काम ठीक से नहीं करना है तो अपना हिसाब लो और घर चले जाओ।"

सरकार को नाराज होते देख प्रधान गुमाश्ता प्रसन्न हो उठा। इधर जमींदार को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मेरी नाराजगी का रामप्रसाद पर कोई असर नहीं हुआ। अभी नौकरी से निकाला जा सकता है, इसका भय भी नहीं हुआ। छोटे बच्चे की तरह वह टुकुर-टुकुर देख रहा है।

दुर्गाचरण ने कहा—"कहाँ हैं बहियाँ ? लाओ, देखूँ, क्या लिख मारा है ?"

प्रधान गुमाश्ते ने बही पेश करते हुए कहा—"अब आप ही देखिये सरकार। हिसाब लिखने की जगह यह सब क्या लिख मारा है। अब आप ही बताइये इसे तहसील में कैसे दिखाया जायगा ? कहीं पकड़े गये तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुमाश्ता अपनी शिकायत बराबर करता गया, पर दुर्गाचरण इन बहियों में लिखे गीतों में खो गये थे। रोकड़ बही के चारों ओर दुर्गा, काली आदि देवियों के नाम, गीत लिखे हुए थे। वे पढ़ने लगे—

मुझे दो माँ तावेदारी,
मैं नहीं नमकहराम शंकरी।
तेरा पदरत्न सभी लूट रहे
होता नहीं यह सहन मुझसे,
भंडार की जिम्मेवारी जिस पर है
वह है भोला त्रिपुरारि।
बिना वेतन का चाकर मैं,
केवल चरण-रज अधिकारी।

इस गीत को एक-दो नहीं, कई बार पढ़ने के बाद जमींदार साहब सहसा गंभीर हो गये। उनके माथे पर सिकुड़न पड़ गयी—'बिना वेतन का चाकर मैं, केवल चरण-रज अधिकारी।' इस पंक्ति को बार-बार पढ़ने के कारण उनकी आँखें सजल हो उठीं। कुछ देर तक वे अपलक दृष्टि से रामप्रसाद की ओर देखते रहे।

एकाएक बोल उठे—"रामप्रसाद, तुम गुमाश्ते के लायक नहीं हो। यह काम तुमसे हो नहीं सकता। तुम्हारे बारे में अगर मुझे पहले से जानकारी होती तो अपने यहाँ तुम्हें न रखता। दरअसल तुमने तावेदारी की माँग की है जो समय आने पर प्राप्त हो जायगी। तुम्हारा जन्म साधारण कार्यों के लिए नहीं हुआ है। अब तुम आज ही घर चले जाओ और वहीं भजन करो। यहाँ तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है।"

जमींदार साहब की नाराजगी देखकर गुमाश्ते को प्रसन्नता हुई। कम-से-कम एक निकम्मे कर्मचारी से छुट्टी मिली। दूसरी ओर रामप्रसाद को लगा जैसे पैरों तले की धरती खिसक रही है। माँ, पत्नी, बच्चे आखिर क्या खायेंगे? उनके लिए ही तो वह गाँव छोड़कर यहाँ नौकरी करने आया है। माँ काली, दया करो। अब बहियों में मैं कुछ भी नहीं लिखूँगा।

इसी तरह की कल्पना करते हुए रामप्रसाद ने सोचा कि जमींदार साहब से अपनी गलती के लिए क्षमा माँग ले, तभी उन्होंने उसे चौंकाते हुए कहा—"तुम्हारे द्वारा बहियाँ नष्ट नहीं हुई हैं, बल्कि पवित्र हुई हैं। मैं इन्हें अपने यहाँ सुरक्षित रखवा दूँगा। मेरे वंशधर निरन्तर इनका उपयोग करेंगे और सुरक्षित रखेंगे ताकि तुम चिरस्मरणीय बने रहो। अब तुम अपने घर वापस चले जाओ। तुम्हें जो वेतन दिया जाता था, वह आजीवन प्राप्त होता रहेगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुमाश्ता अवाक् रह गया। यह कैसा न्याय हुआ ? एक तो सारी बहियाँ चौपट कर दीं, तिस पर घर बैठे मुफ्त में तीस रुपसे वेतन भी प्राप्त करेगा ! आखिर इन अल्लम-गल्लम गीतों में कौन-सा जादू है ?

इधर अपने मालिक की राय सुनकर रामप्रसाद ने इसे काली माता की कृपा समझा। वहीं आनन्द से विभोर होकर गाने लगे—

अरे मन, तू है कहाँ कंगाल
तू कुछ नहीं जानता रे पागल
अनित्य धन की आशा में चक्कर काटता ठाँव-ठाँव
तेरे घर हैं चिन्तामणि, देख रे तू बैठा-बैठा।
गुरु द्वारा प्रदत्त रत्न को पकड़ कसके
दीन रामप्रसाद का विनय है उन चरणों में ॥

इस गीत को सुनते-सुनते जमींदार साहब आत्मविभोर हो उठे। रामप्रसाद को वेतन के अलावा राह-खर्च देकर उन्होंने विदा कर दिया। उधर गुमाश्ता सोचने लगा—सरकार जरूर पागल हो गये हैं।

× × ×

बंगाल के २४ परगना जिले में हाली शहर नामक एक कस्बा है जिसके एक ओर पुण्यसलिला गंगा प्रवाहित है। प्राचीनकाल में इस कस्बे का नाम कुमारहाटी था यानी कुम्हारों का बाजार। यहाँ अधिकतर कुम्हार रहते थे। इनके अलावा कुछ ब्राह्मण भी रहते थे।

एक बार नवद्वीप के कुछ पंडित कुमारहाटी आये। नवद्वीप के पंडितों की विद्वत्ता संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध थी। देश के विभिन्न स्थानों से लोग यहाँ पढ़ने आते थे। यहाँ के पंडितों को यह समझते देर नहीं लगी कि नवद्वीप के पंडितों का दल हमसे शास्त्रार्थ करने आया है। सभी भयभीत हो उठे। कारण इन पंडितों से शास्त्रार्थ करने का अर्थ था—पराजित होना। इससे अपने सम्मान को धक्का लगेगा। अपनी इज्जत बचाने के लिए स्थानीय पंडितों ने एक तिकड़म किया। एक चतुर कुम्हार को सिखा-पढ़ाकर नवद्वीप के पंडितों के पास भेजा। यह कुम्हार महिला वेष में अपने साथ एक लड़का लेकर आया।

नवद्वीप के पंडितों के पास आकर कुम्हार ने कहा—"पंडितजी, मैं आप लोगों की सेवा करने आयी हूँ। जूठा माँज दूँगी, चौका लगा दूँगी और कपड़े साफ कर दूँगी।"

पंडितों को ऐसी नौकरानी की जरूरत थी। उन्होंने रख लिया। इधर स्थानीय पंडितों से बातचीत करने पर यह निश्चित हुआ कि कल शास्त्रार्थ होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे दिन सवेरे कुम्हार चौका-बरतन कर रहा था। सहसा बाहर के पेड़ पर कौवे कांव-कांव करने लगे। यह सुनकर लड़के ने पूछा—"माँ, कौवे आपस में क्या कह रहे हैं ?"

नौकरानी ने कहा—"मुझे क्या मालूम बेटा। यहाँ बड़े-बड़े पंडित आये हैं, उनसे पूछ ले।"

माँ के कथनानुसार बालक पंडितों के पास आया और अपना सवाल दोहराया। अब इस सवाल का कोई क्या जवाब देता। पंडितों ने कहा—"सवेरा हुआ है, इसलिए वे चिल्ला रहे हैं। क्या कह रहे हैं, क्या बताऊँ ?"

लड़का असंतुष्ट होकर माँ के पास आकर जिद करने लगा। पंडितों में कोई यह भाँप नहीं सका कि दरअसल दोनों नाटक कर रहे हैं।

माँ ने कहा—"बेटा, तुझे कैसे समझाऊँ ? संस्कृत जानती नहीं। इसीलिए कहती हूँ कि पाठशाला जाया कर। संस्कृत में एक श्लोक है—

तिमिरारिस्तमो हन्ति शंकाकुलितमानसाः।
वयं काका वयं काका इति जल्पन्ति वायसाः॥

अर्थात् अंधकार का नाश करने के लिए सूर्य देवता प्रकाश दे रहे हैं। कौवों के मन में इस बात का भय हो रहा है कि उनके काले पंखों का अँधेरा समझकर कहीं उन्हें भी नष्ट न कर दें। इसी डर के कारण वे वयं काका, वयं काका यानी हम काक हैं, कह रहे हैं।"

एक बरतन माँजनेवाली नौकरानी को संस्कृत श्लोक की इस तरह व्याख्या करते सुनकर पंडित-मंडली चौंक उठी। उन्होंने उसे बुलाकर पूछा—"तुम्हें संस्कृत भाषा की जानकारी कैसे हुई, किसने सिखाया ?"

नौकरानी ने कहा—"गाँव में मेरे घर के आसपास पंडितों के मकान हैं। उनके यहाँ हमेशा संस्कृत भाषा के बारे में चर्चा होती है। उनकी जबानी मैंने सुनी है।"

इतना सुनना था कि पंडितों के चेहरे का रंग उड़ गया। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि जहाँ की नौकरानी इतना ज्ञान रखती है, वहाँ के पंडितों से शास्त्रार्थ करना मूर्खता है। उसी दिन सभी पंडित पलायित हो गये।

हालीशहर के पंडितों को इस समाचार से बड़ा आनन्द मिला। इस कुम्हार के बुद्धि-चातुर्य से प्रसन्न होकर उन लोगों ने इस गाँव का नाम कुमारटोली रखा। इसी गाँव में चैतन्य महाप्रभु के गुरु श्री ईश्वरपुरी रहते थे।

इसी गाँव में कीर्त्तिवास सेन वंश-परम्परा से निवास करते थे। तंत्र-सम्बन्धी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी भी कार्य के लिए कीर्त्तिवास दिल खोलकर खर्च करते थे। इन्हीं कीर्त्तिवास के प्रपौत्र थे—रामप्रसाद सेन।[1]

माता-पिता की एकमात्र संतान होने के कारण वे उनकी आँखों के तारे थे। बचपन से ही नटखट थे। समयानुसार पाठशाला पढ़ने गये। जिन प्रतिभाओं पर दैवी कृपा होती है, उनमें ईश्वर धी-शक्ति पहले से प्रदान कर देते हैं।

पिता गाँव में कुशल कविराज माने जाते थे। किसीको कोई बीमारी हुई सीधे कविराजजी के पास चला आता था। पिता ने सोचा—मेरे बाद रामप्रसाद गाँव में वैद्यगी ही करेगा, अतएव संस्कृत भाषा का अध्ययन कर ले। संस्कृत भाषा का अध्ययन रामप्रसाद ने अच्छी तरह किया। रामप्रसाद की प्रगति देखकर पिताजी को गर्व अनुभव हुआ। अब वे स्वयं वैद्यगी पढ़ाने लगे।

लेकिन उन्हें देखकर अफसोस होने लगा कि लड़का पैतृक-कार्य की ओर मन नहीं लगा रहा है। जब कभी इस दिशा में कुछ बताने लगते तब लड़के का ध्यान न जाने कहाँ चला जाता था। बंगला, संस्कृत, हिन्दी, फारसी आदि भाषाओं में इसकी पैठ है, पर वैद्यगी के प्रति अरुचि है।

कुछ दिनों तक लड़के के भविष्य के बारे में चिन्तन करने के बाद उन्होंने सोचा—अभी माँ-बाप के मत्थे पल रहा है। आर्थिक चिन्ता या कोई जिम्मेदारी नहीं है। अगर विवाह कर दिया जाय तो शायद इसके स्वभाव में सुधार हो। पत्नी के भरण-पोषण की चिन्ता उसे जब सतायेगी तब वह गृहस्थी की चिन्ता करेगा। उन दिनों रामप्रसाद २१ वर्ष पार कर २२वें में प्रवेश कर चुके थे।

अपने निश्चय के अनुसार पिता रामराम सेन एक दिन भाजनघाट निवासी लोकनाथ दासगुप्त की सुपुत्री सर्वाणी को पुत्रवधू के रूप में घर ले आये। विवाह के समय ही परम्परा के अनुसार कुलगुरु ने नवदम्पती को दीक्षा दी।

दीक्षा प्राप्त करने के बाद रामप्रसाद के स्वभाव में तेजी से परिवर्तन होने लगा। पिता ने सोचा था कि पत्नी-प्रेम के कारण वह गृहस्थी की ओर ध्यान देगा। लेकिन उनका यह सपना व्यर्थ हो गया। अब पहले से अधिक उदासीन रहने लगा। कभी-कभी अनमने भाव से बैठा न जाने क्या सोचता रहता है। उसे सही मार्ग पर लाने के लिए पिता समझाते—"मेरे बाद इस घर की सारी जिम्मेदारी तुझ पर आ जायेगी। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। पका आम हूँ, पता नहीं कब टपक पड़ूँ। कुछ कर। मेरे जीवितकाल में कुछ सीख लेगा तो भोजन-वस्त्र का अभाव नहीं होगा।"

---

१. श्री रामप्रसाद के जन्म सन् तथा तिथि के बारे में विद्वानों की भिन्न-भिन्न राय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामप्रसाद एक कान से सुनता और दूसरे कान से इन बातों को निकाल देता। आखिर हारकर पिताजी ने सब कुछ भगवान् के ऊपर छोड़कर अपने काम में लग गये। इधर रामप्रसाद भी यह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है। जब वह अपनी आँखें बन्द कर लेता तब उसे अजीब-अजीब दृश्य दिखाई देने लगते थे। उस वक्त तन-मन की सुधि नहीं रहती थी।

ठीक इन्हीं दिनों उसके कुलगुरु का निधन हो गया। मन को सांत्वना देनेवाला महारथी चला गया। अक्सर जब उसका मन बहुत उद्विग्न हो उठता था तब कुलगुरु के पास जाने पर वे एक न एक मंत्र-जाप करने का निर्देश देते थे। इससे मन को शांति मिल जाती थी।

कुलगुरु के निधन के पश्चात् रामप्रसाद अधिक बेचैन रहने लगा। उसकी दशा देखकर घर के लोग चिन्तित रहने लगे। कुछ दिनों बाद बंगाल के सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक पंडित माधवाचार्य आगमवागीश भ्रमण करते हुए कुमारहाटी आये। उन दिनों उनकी ख्याति चारों ओर फैली हुई थी। स्थानीय पंडितों का दल उनके आगमन से प्रसन्न होकर हर्ष मनाने लगा। रामप्रसाद भी अक्सर उनके यहाँ जाता था, पर उनसे खुलकर बातें करने का मौका नहीं मिलता था। लगातार कई दिनों के बाद उसे यह मौका मिला। उसने बातचीत के सिलसिले में तंत्र-साधना-सम्बन्धी जिज्ञासा प्रकट की। आगमवागीश ने सोचा—फालतू जिज्ञासु है। इस तरह अधकचरे जिज्ञासु बराबर आते रहते हैं। लेकिन दूसरे प्रश्न ने उन्हें चौंका दिया। वे गौर से रामप्रसाद के चेहरे को देखने लगे। आगमवागीश की आघ्राण-शक्ति ने उन्हें सूचित किया कि यह साधारण जिज्ञासु नहीं है। आज जिस स्थान पर मैं खड़ा हूँ, वहाँ तक पहुँचने में मुझे अनेक कठिनाइयों को पार करना पड़ा है और यह युवक बिना साधना, बिना क्रिया के उसे प्राप्त कर चुका है। यदि इसकी कुंडलिनी-शक्ति जागृत हो जाय तो यह महान् साधक बन सकता है।

यह विचार मन में आते ही आगमवागीशजी ने न केवल उसके प्रश्नों का समाधान किया, बल्कि उसे तंत्र-साधना की प्रक्रियाएँ समझाने लगे।

रामप्रसाद के प्रपितामह, पितामह दोनों ही तंत्र-साधक थे। वे स्वयं इस क्षेत्र में गुरुओं द्वारा बतायी गयी पद्धति से अर्थात् पंच म-कार[1] का उपयोग करते

---

१. पंच म-कार का सीधा अर्थ है—मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन। गुरु द्वारा बतायी गयी पद्धति से साधक पंच म-कारों का आस्वादन प्राप्त करता है। बाद में षट्चक्र को भेदकर बीज और शक्ति को प्राप्त करता है। तब जाकर कहीं वह सहस्रार तक पहुँच पाता है।

सहस्रार यानी ब्रह्मरंध्र से जो अमृत क्षरित होता है, उसे मद्य कहा जाता है। ब्रह्म-ज्ञान होने पर इसी मद्य को साधक पीता है। साधक जब ब्रह्मानन्द में रहता है तब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुए लगभग दस वर्ष तक साधना करते रहे। इन दिनों वे वाक्य-संयम का कठोरता से पालन करते थे। उनकी यह साधना वीर भाव में चलती रही। दिन-रात काली-माता का जप करते थे। रामराम सेन स्वयं धार्मिक प्रकृति थे, इसलिए पुत्र से कुछ कहने में संकोच करते थे। अचानक एक दिन बीमार हुए और किसीको कोई कष्ट दिये बिना परलोकवासी हो गये।

पिता के निधन के पश्चात् रामप्रसाद की आँखें खुलीं। माँ, पत्नी और बच्चों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी उन्होंने पहले-पहल अनुभव की। जप, क्रिया, ध्यान सब कुछ भूल गये। जिस व्यक्ति को व्यवसाय करना नहीं आता और न नौकरी, दुर्गति ज्ञात थी, अत्यन्त बेचैनी से काली माता का स्मरण करने लगे।

कहा जाता है कि उन्हें दर्शन देकर माँ ने कलकत्ता जाने का निर्देश दिया था। कलकत्ता आने पर माँ ने अपने भक्त की सहायता की। उनकी प्रेरणा से ही उन दिनों गरनहाटा के जमींदार के यहाँ तीस रुपये मासिक वेतन पर गुमाश्ता बने। भक्त को हिसाब-किताब से क्या लेना-देना। हिसाब लिखने के स्थान पर वे लिखने लगे—'मुझे दो माँ तावेदारी, मैं नहीं नमकहराम शंकरी।'

रामप्रसाद की इन हरकतों को देखकर अन्य गुमाश्ते परेशान हो गये। समझाने-बुझाने पर जब वे नहीं माने तब दुर्गाचरण मित्र के पास शिकायत पहुँची। इसके आगे की घटना का उल्लेख किया जा चुका है।

× ⊠ ⊠

एकाएक बिना कोई सूचना दिये लड़के के आगमन पर माँ आश्चर्यचकित रह गयी। धीरे से पूछा—"कैसे आ गया ? तबीयत ठीक है न ?"

रामप्रसाद ने कहा—"ऐसी कोई बात नहीं है माँ। काली माँ ने घर वापस भेज दिया।"

माँ ने कहा—"सो तो ठीक है, पर गृहस्थी कैसे चलेगी, बेटा। छह-छह आदमियों का पेट चलाना है।"

रामप्रसाद ने कहा—"तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है। काली माँ ने उसका प्रबंध करके मुझे यहाँ भेजा है। अब हर माह घर बैठे तीस रुपये आ जायेंगे।"

लड़के की बात पर माँ को विश्वास नहीं हुआ। भला लड़के ने ऐसा कौन-सा

बातें नहीं करता। वाक्य-संयम मांस-भक्षण है। इड़ा, पिंगला रज-तमरूपी श्वास-प्रश्वास को प्राणायाम के माध्यम से निरोध करना पड़ता है। इसीको मत्स्य-भक्षण कहते हैं। सहस्रदल पद्म में ज्योतिपूर्ण आत्मा को जानना ही मुद्रा है। नाभिचक्र में स्थित अजपारूपी श्वास-प्रश्वास तथा आद्याशक्तिस्थित महायोनि का मिलन ही मैथुन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्य किया है जो कोई मुफ्त में रुपये देता रहेगा ? उन्होंने सोचा—देखा जाय क्या होता है।

अगले माह जब रुपये आ गये तब रामप्रसाद ने कहा—"माँ, अब मुझे छुट्टी दो। काली माँ की कृपा से घर-खर्च का प्रबंध हो गया। अब मैं उनकी शरण में जाकर कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ।"

गृहस्थी तथा नौकरी के कारण रामप्रसाद की साधना में व्याघात पहुँचता था। अब उसने अपने-आपको पूर्ण रूप से देवी के चरणों में आत्मसमर्पित कर दिया। दिन-रात काली माँ के उद्देश्य से गीत बनाकर डगर-डगर गाने लगे। जिस वक्त नदी में खड़े होकर वे सुमधुर कंठ से गीत गाते, उस वक्त स्नानार्थी स्नान करना भूल जाते थे। घाट पर लोगों की भीड़ जुट जाती थी। नाव से गुजरनेवाले यात्री भी इन गीतों के आकर्षण से किनारे चले आते थे। एक प्रकार से इनके गीतों में चुम्बक-सा असर था।

एक बार नवद्वीप के राजा कृष्णचन्द्र नाव पर गंगा-विहार करने निकले थे। हवा में तैरती हुई स्वर-लहरियों से प्रभावित होकर वे गायक के पास चले आये। रामप्रसाद आँखें बन्द कर अपनी भक्ति में मग्न थे। महाराजा के आगमन का पता उन्हें नहीं चला। उपासना-गीत समाप्त होने पर सामने बैठे महाराजा को देखते ही उन्होंने नमस्कार किया।

× ×

बंगाल के देशी नरेशों में कृष्णचन्द्र की ख्याति थी। वे सम्राट् विक्रमादित्य और अकबर की तरह अपने दरबार में सभारत्न रखे थे। उनके सभारत्नों में हरिराम सिद्धान्त, कृष्णानन्द वाचस्पति, रामगोपाल सार्वभौम, प्राणनाथ न्यायपंचानन, गोपाल न्यायालंकार, रामानन्द वाचस्पति, रामवल्लभ विद्यावागीश, वीरेश्वर न्यायपंचानन, वाणेश्वर विद्यालंकार, रामरुद्र विद्यानिधि जैसे विद्वान् थे। वहीं मनोरंजन के लिए गोपाल भाँड़ भी था।

पारखी राजा ने रामप्रसाद की प्रतिभा को पहचान लिया। उन्होंने रामप्रसाद से आग्रह किया कि आप मेरी सभा की शोभा बढ़ायें। रामप्रसाद ने कहा—"काली माँ से आज्ञा लेकर आपको उत्तर दूँगा, महाराज।"

महाराजा के जाने के बाद रामप्रसाद ऊहापोह में फँस गये। जिस मुँह से काली माँ का गुणगान करता हूँ, उसीसे दिन-रात महाराजा की चाटुकारिता करनी पड़ेगी। अगर इनकार करता हूँ तो और भी बुरा होगा। पानी में रहकर क्या मगर से वैर करना उचित होगा ? रात को वे साधना पर बैठकर काली माँ से प्रार्थना करने लगे—"माँ, इस संकट से मुक्ति दिलाओ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काली माँ की कृपा हुई। महाराजा स्वतः समझ गये कि रामप्रसाद सभारत्न नहीं बनना चाहते। साधक अपनी साधना में मग्न रहना चाहता है। रामप्रसाद के इस त्याग पर वे मुग्ध हो उठे। उन्होंने घोषणा की कि राज्य की ओर से तुम्हें एक सौ बीघा भूमि बिना लगान दान में दी जा रही है ताकि तुम और तुम्हारे वंशज महामाया के गुण-गान बराबर करते रहें। दरबार में 'कविरंजन' की उपाधि से सम्मानित करते हुए महाराजा ने यह घोषणा की।

राज-रोष का भय रामप्रसाद के मन से हट जाने पर वे पूर्ण रूप से काली माँ की शरण में चले गये। अपने घर के समीप पंचमुंडी आसन के पास पंचवटी का रोपन कर वे साधना में डूब गये। वे जिस आसन पर बैठकर साधना करते थे, वहाँ आम तौर पर लोग दिन के वक्त भी जाने में कतराते थे। लोगों का विश्वास था कि वहाँ अशरीरी लोग आते हैं। यह बात एक हद तक सही है। अक्सर वहाँ भूत-प्रेत उनकी साधना में जब विघ्न पहुँचाते तब वे तेजी से जप प्रारंभ कर देते थे।

तभी 'वत्स, मा भैः—मैं आ गयी हूँ। अब तुम मुझे अपने हृदय में, भावनेत्र से देख सकते हो' की आवाज सुनाई देने लगती। उस समय अशरीरियों का उपद्रव शान्त हो जाता था।

रामप्रसाद के घर के समीप एक गड्ढा है जहाँ उन्हें माँ जगदम्बा ने प्रत्यक्ष रूप से दर्शन दिया था। इस दर्शन के पश्चात् रामप्रसाद में अद्भुत परिवर्तन हुए। बंगाल का साँवलापन दूर हो गया। उसके स्थान पर उनका सारा शरीर अपूर्व क्रान्ति से चमकने लगा। गाँव के लोग रामप्रसाद में होनेवाले इस परिवर्तन को देखकर चकित रह गये।

घर पर नित्य रामप्रसाद काली माता को भोग लगाया करते थे जिसे साधक के आग्रह पर चिन्मयी महामाया प्रकट होकर ग्रहण करती थीं। एक दिन पत्नी को संदेह हुआ कि काली माँ का यह चित्र क्या वास्तविक है? जिज्ञासु हृदय ने उस चित्र को स्पर्श करके देखा। तुरत देवी प्रकट हो गयीं। काली के उस रूप को देखकर पत्नी बेहोश हो गयीं। होश आने पर उन्होंने देखा—फिर वही सामान्य चित्र है। रामप्रसाद की पत्नी यह समझ नहीं पायीं कि यह आँखों का भ्रम था अथवा वास्तव में देवी प्रकट हुई थीं।

एक बार एक अपूर्व सुन्दरी रामप्रसाद के घर आयी। रामप्रसाद उस समय स्नान के लिए नदी की ओर जानेवाले थे। सुन्दरी ने कहा—"मैं आपका गायन सुनने आयी हूँ।"

रामप्रसाद ने कहा—"अभी मैं स्नान करने जा रहा हूँ। आप थोड़ी देर बैठिये। वापस आकर मैं गीत सुनाऊँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्नान समाप्त कर जब रामप्रसाद वापस आये तो देखा—वह सुन्दरी जा चुकी थी। चारों ओर उसकी तलाश करते समय उन्होंने देखा कि सामने दीवार पर लिखा है—"मैं अन्नपूर्णा हूँ। तुम्हारा गायन सुनने आयी थी। इंतजार करने का मौका नहीं था। काशी आकर गीत सुनाना।"

इस लिखावट को पढ़कर रामप्रसाद हाय-हाय कर उठे। माता अन्नपूर्णा मेरे घर मेरा गायन सुनने आयी थीं और मैं चूक गया। तुरत रामप्रसाद ने निर्णय किया के काशी जाकर माँ को अपना गायन सुनाऊँगा।

कब मैं काशीवासी होऊँगा,
उस आनन्द कानन में जाकर निरानन्द होऊँगा।
गंगा जल बिल्वदल से विश्वेश्वर पूजूँगा,
वाराणसी के जल-थल में ही मोक्ष पाऊँगा॥
अन्नपूर्णा अधिष्ठात्री की शरण पाऊँगा,
नाच-नाच बमभोला कहते गाल बजाऊँगा॥

मार्ग में इसी गीत को गाते हुए वे सबसे पहले त्रिवेणी-तट पर आये। यहाँ स्नान करने के बाद गाने लगे—

अन्नपूर्णा की धन्य काशी
शिव धन्य, काशी धन्य, धन्य माँ आनन्दमयी।
भागीरथी विराजित, प्रवाह में अर्द्ध शशि,
उत्तरवाहिनी गंगा प्रवाहित है दिवा निशि॥
शिव के त्रिशूल पर काशी, वेष्टित वरुणा असि,
यहाँ मरने पर जीव शिव शरीर में प्रवेसि।
कैसी महिमा अन्नपूर्णा की, कोई नहीं उपवासी,
माँ रामप्रसाद तेरे चरण-रज का अभिलाषी॥

यह गीत गाते हुए वे त्रिवेणी-तट पर सो गये। उसी दिन रात्रि को उन्होंने स्वप्न में देखा एक छाया-मूर्ति जो ठीक अन्नपूर्णा जैसी थीं, कह रही हैं—"वत्स, मैं तुम्हारे गीत को सुन चुकी। अब तुम्हें काशी आने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी भक्ति और गायन से मैं संतुष्ट हो गयी हूँ। भविष्य में जब तुम मुझे स्मरण करोगे, अनायास दर्शन प्राप्त कर सकोगे।"

इस स्वप्न को देखते ही उनकी नींद खुल गयी और वे अपनी जन्मभूमि की ओर लौट गये। इन दिनों उनकी मनःस्थिति पागलों जैसी हो गयी थी। न खाने की चिन्ता और न सोने की। घर पर बहुत कम आते थे। माँ और पत्नी उनकी इस हालत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को देखकर समझ गयीं कि अब रामप्रसाद उनका अपना नहीं रह गया। पत्नी को जब कुछ कहना होता था तब बड़े संकोच के साथ अपनी बात कहती थी। आजकल घर की सारी जिम्मेदारी उसी पर थी। रामप्रसाद केवल माँ के आकर्षण के कारण घर आते थे और शेष समय पंचवटी में व्यतीत करते थे।

जिस प्रकार मीराबाई कृष्ण-प्रेम के पीछे दीवानी थी, ठीक उसी प्रकार रामप्रसाद काली माता की भक्ति के पीछे दीवाने थे। मीरा के भजनों की तरह रामप्रसाद के श्यामा-गीत बंगाल के गाँव-गाँव में प्रचारित हैं। कहा जाता है कि रामप्रसाद ने एक लाख पदों का निर्माण किया था, पर मिलते ढाई सौ से अब अधिक नहीं।

पंचवटी में जिस वक्त वे भावविभोर होकर श्यामा-गीत गाते थे, उस वक्त गाँव के निवासियों के अलावा राजा कृष्णचन्द्र भी यदा-कदा चले आते थे। ठीक इन्हीं दिनों रामप्रसाद की माँ स्वर्गवासी हो गयीं। घर से रहा-सहा नाता भी टूट गया। अब रामप्रसाद पंचवटी से हटकर श्मशान-भूमि में आकर साधना करने लगे। जब कभी उनका मन व्याकुल हो उठता तब देवी प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देकर उन्हें सांत्वना देती थीं।

एक बार घर के सामने का बेड़ा (बाँस के टट्टरों का घेरा) सड़ जाने के कारण वे अपनी लड़की की सहायता से मरम्मत करने लगे। लड़की टट्टर के उस पार से फंदा लगाकर इधर रस्सी का छोर पकड़ने को देती और रामप्रसाद बाहर से भीतर की ओर देते थे। इसी बीच उनकी लड़की जगदीश्वरी निजी काम से भीतर चली गयी। लेकिन रस्सियों का आना-जाना बराबर जारी रहा। उधर से अब कौन रस्सी दे रहा है, इसका पता नहीं चला।

कुछ देर बाद जगदीश्वरी आयी तो देखा कि बेड़े की बुनाई काफी दूर तक हो गयी है। उसने पूछा—"पिताजी, इधर से रस्सी कौन देता रहा ? क्या आप अकेले दोनों ओर का काम करते थे ?"

रामप्रसाद ने कहा— 'क्यों ? उस पार तो तुम थी।"

जगदीश्वरी ने कहा—"मैं तो एक घंटा पहले चली गयी थी। अब आयी हूँ।"

लड़की की बातें सुनकर रामप्रसाद चकित रह गये। जगदीश्वरी जब उधर नहीं थी तब अब तक उधर से रस्सी कौन पकड़ाता था। लहमेभर में वे समझ गये कि यह कार्य जगज्जननी करती रहीं। लड़की की ओर देखते हुए रामप्रसाद गुनगुनाने लगे—"मन क्यों माँ के चरणों से दूर है ?"

इस घटना के कुछ दिनों बाद रामप्रसाद को ज्ञात हुआ कि राजा कृष्णचन्द्र का स्वर्गवास हो गया है। यह एक ऐसा समाचार था जिसे सुनकर रामप्रसाद मर्माहत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो उठे। अपने जीवनकाल में राजा साहब बराबर रामप्रसाद के गीत सुनने आते थे और हर प्रकार की सहायता करते थे। आज एक बड़ा सहायक चल बसा।

महाराजा कृष्णचन्द्र का निधन रामप्रसाद के जीवन की मर्मान्तिक घटना थी। संभवतः रामप्रसाद उन्हें हृदय से प्यार करते थे। उनकी स्थिति पागलों जैसी हो गयी। न खाने की चिन्ता और न सोने की। उनकी यह हालत देखकर पत्नी और लड़कों ने सोचा कि अब रामप्रसाद को घर से बाहर कहीं जाने नहीं देंगे। पता नहीं, कब, न कहाँ, कोई दुर्घटना हो जाय।

घर पर आबद्ध हो जाने पर वे सिद्धासन पर बैठे-बैठे गीतों की रचना करने लगे। एक अर्से के बाद 'विद्या सुन्दर' नामक ग्रंथ तैयार हुआ। उस ग्रंथ को उन्होंने महाराजा कृष्णचन्द्र के नाम समर्पित किया। इस कार्य के बाद उनका हृदय शान्त हो गया। घर के लोगों ने देखा कि अब पहले की तरह विक्षिप्त भाव उनमें नहीं है। यह देखकर सभी प्रसन्न हुए।

दीपावली के दिन अपने घर रामप्रसाद ने प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी काली-पूजा का आयोजन किया। रातभर भजन-कीर्तन होता रहा। दूसरे दिन गाँव के लोगों के साथ मंगल घट लेकर भागीरथी के तट पर आये।

नदी में कमरभर पानी में खड़े होकर वे अपनी आराध्य देवी काली माता की स्तुति करने लगे। गीत गाते-गाते सहसा गंगा में गिर पड़े। जब तक लोग उन्हें बचाने का प्रयत्न करें, उसके पहले ही गंगा अपनी गोद में अपने बालक को लेकर सागर की ओर चली गयी।

आज रामप्रसाद नहीं हैं, पर उनका श्यामा संगीत बंगाल के गाँव-गाँव गूँजता रहता है। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूपतिनाथ मुखोपाध्याय

झूलन-पूर्णिमा के दिन घर में प्रथम पुत्र का आगमन हुआ। मुखर्जी-परिवार में शंख-ध्वनि हुई। पड़ोस के लोगों को ज्ञात हो गया कि बिहारीलाल मुखोपाध्याय के यहाँ वंशधर ने जन्म लिया है।

अन्नप्राशन के दिन कुल-पुरोहित आये। माँ बच्चे को गोद में लेकर बैठ गयी। सामने खिलौने, वस्त्र, पुस्तक, मिष्टान्न आदि सामग्रियाँ रखी हुई थीं। कुलाचार के समय पुरोहित ने पूछा—"क्यों बेटी, लड़के का क्या नाम रखा है?"

बच्चे की माँ ने कहा—"इसके पिता ने इसका नाम झूलनचन्द्र रखा है।"

कुल-पुरोहित ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए पूछा—"क्या?"

माँ ने कहा—"झूलन-पूर्णिमा को पैदा हुआ था, इसलिए यह नाम रखा है, उन्होंने।"

कुल-पुरोहित ने कहा—"अगर जन्माष्टमी, महालया, दोल (होली) को होता तो क्या यही सब नाम रखा जाता? बिहारी भी विचित्र है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माँ ने कहा—"आज शुभ दिन है। आप ही कोई अच्छा नाम रख दीजिए।"

कुल-पुरोहित ने कहा—"इस बालक के ग्रह साफ बता रहे हैं कि आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट् जैसा सम्मान प्राप्त करेगा। अपने वंश का श्रेष्ठ नायक बनेगा। इसके आगे बड़े-बड़े लोग अपना मस्तक झुकायेंगे।"

थोड़ी देर जन्म-कुण्डली देखने के बाद उन्होंने कहा—"बालक की धनु राशि है। इसका नाम आज से भूपतिनाथ हुआ।"

अन्नप्राशन के दिन पिता द्वारा प्रदत्त नाम झूलनचन्द्र के बदले भूपतिनाथ हो गया।

उस दिन किसीको इस बात की कल्पना नहीं थी कि बालक का वास्तविक नामकरण हुआ है। भले ही चक्रवर्ती सम्राट् की तरह भूपति न बने, परन्तु शिशुकाल से ही बिना गुरु के वह यौगिक चमत्कारों से पूर्ण होकर आया है।

गर्मी का मौसम था। शुक्लपक्ष का चाँद आकाश में उदय हो गया था। पिता बिहारीलाल कहीं से दूरबीन ले आये थे। बिस्तर पर लेटकर वे दूरबीन से चाँद का निरीक्षण करने लगे। भूपतिनाथ उत्सुक दृष्टि से सारा दृश्य देखता रहा।

सहसा उसने पूछा—"यह क्या है, पिताजी?"

"दूरबीन।"

दूरबीन का अर्थ बालक नहीं समझ सका। उसने जिद पकड़ी कि वह भी दूरबीन के जरिये चाँद को देखेगा। फलतः बिहारीलाल ने उसे दूरबीन देते हुए कहा—"ले। एक आँख बन्द कर ले और दूसरी आँख दूरबीन की छेद में लगाकर चाँद को देख।"

बालक ने पिता के निदेशानुसार चाँद की ओर देखा। चाँद को देखते ही उसे अद्भुत दर्शन हुआ। बालक होने के कारण उस ज्योति के अनुभव को वह व्यक्त नहीं कर सका, परन्तु उसकी स्मृति बराबर बनी रही। दीक्षा लेने के बाद जब अनुभूति हुई तब भूपति को बचपन की यह घटना याद आ गयी। उसे समझते देर नहीं लगी कि बचपन से ही उस पर दैव-कृपा प्राप्त होती रही।

तेरह वर्ष की उम्र में यज्ञोपवीत हुआ। कुल-पुरोहित के निदेशानुसार वे नियम-पूर्वक प्रातः, मध्याह्न और सायं गायत्री-पाठ करने लगे।

बचपन की ड्योढ़ी को पार कर भूपति ने किशोरावस्था में प्रवेश किया। उन दिनों उनकी उम्र २२-२४ वर्ष के लगभग थी। शाम का वक्त था। अपने पैतृक भवन के आगे स्थित बाग में वह टहल रहा था। टहलते हुए वह एक स्थान पर चिन्तन की मुद्रा में बैठा। अचानक दैव-कृपा से उसे समाधि लगी। इस समाधि में प्रथम बार उसे अनेक प्रकार के दर्शन हुए तब उसे याद आया कि बचपन में मुझे चाँद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में इसी प्रकार की ज्योति दिखाई दी थी। इस घटना का उल्लेख उसने किसीसे नहीं किया।

यह घटना उस समय की है जब वह पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के कॉलेज में अध्ययन करता था। अध्ययन-काल से ही वह तत्त्वज्ञान की तलाश में योग्य व्यक्तियों के पास जाने लगा। लेकिन कहीं से उसे वास्तविक ज्ञान नहीं मिला।

लेकिन यह अवसर उसे अनायास प्राप्त हो गया। उन दिनों परमहंस रामकृष्ण देव की चर्चा न केवल कलकत्ता में बल्कि पूरे बंगाल में होने लगी थी। एक दिन अपने कई मित्रों के साथ वह रामकृष्ण देव का दर्शन करने गया।

भूपतिनाथ के साथ आये मित्रों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन लोगों के आते ही रामकृष्ण देव समाधिस्थ हो गये। मित्रों को भूपतिनाथ की यौगिक-शक्ति की जानकारी नहीं थी। रामकृष्ण देव को समाधि भूपतिनाथ के कारण लगी थी।

थोड़ी देर बाद जब रामकृष्ण देव वास्तविक रूप में आये तब हिन्दी में एक गीत गाने लगे—

राम को जो नहीं चीन्हा है
दिल चीन्हा है, सो क्या रे।
और जाना है, सो क्या रे
सन्त वही जो रामरस चाखे
और विषयरस चाखे, सो क्या रे।
पुत्र वही जो कुल को तारे
और जो सब पुत्र हैं, सो क्या रे॥

परमहंस रामकृष्ण देव के यहाँ जाना भूपति के लिए वरदान साबित हुए। न जाने कौन-सी आकर्षण-शक्ति बार-बार उनके निकट जाने के लिए प्रेरित करती रही। परमहंसजी इन्हें देखकर आनन्दित होते रहे। इस प्रकार भूपतिनाथ परमहंसजी के निकट आते गये।

एक दिन बातचीत के सिलसिले में भूपतिनाथ ने प्रश्न किया—"प्रकृति और पुरुष में क्या भेद है?"

रामकृष्ण देव ने कहा—"साँप स्थिर होकर रहता है या चलता-फिरता है। अगर वह स्थिर है तो पुरुष और चलते रहने पर प्रकृति। पुरुष निर्गुण और प्रकृति सगुण है।"

केवल शब्दों के जरिये भूपतिनाथ को तत्त्वज्ञान प्राप्त हो गया जिसकी तलाश में वे अब तक व्याकुल थे। उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि जिस गुरु की तलाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में वे चक्कर काट रहे थे, वे सदेह यही हैं। पहले यहाँ कभी-कभी आते थे। इस घटना के बाद से बराबर आने लगे।

एक दिन जाने पर भूपतिनाथ ने देखा कि परमहंसजी नंगे बदन बैठे थे और उनका शिष्य लाटू महाराज उनकी तेल से मालिश कर रहे थे।

परमहंसजी के सामने बैठकर हाथ जोड़ते हुए भूपतिनाथ प्रार्थना-गीत गाने लगे। इस गीत को सुनते-सुनते परमहंसजी भावाविष्ट हो गये।

एकाएक भूपतिनाथ ने अनुभव किया कि भावाविष्ट स्थिति में परमहंसजी ने अपना एक पैर उनकी जाँघ पर रख दिया है। भूपतिनाथ उस पैर को श्रद्धा के साथ उठाकर सिर से लगाया। परमहंसजी के चरण-स्पर्श से ही भूपतिनाथ को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो गया। एक अजीब आनन्द-लोक में उनका अन्तर विचरण करने लगा।

भूपतिनाथ में यह स्थिति लगातार तीन दिनों तक बनी रही। इन दिनों उनकी नजर जिधर जाती, उधर ही सब कुछ सच्चिदानन्दमय दिखाई देता था। यहाँ तक कि एक बार जब वे ब्राह्म समाज में विद्वानों का भाषण सुनने गये तो वहाँ चारों ओर रामकृष्ण देव दिखाई देते रहे।

तीसरे दिन गंगा-स्नान करने के पश्चात् भूपतिनाथ घर की ओर आ रहे थे, ठीक उसी समय रामकृष्ण देव के यहाँ से एक अदृश्य शक्ति उनके सामने आकर खड़ी हो गयी। उस शक्ति ने कहा—"मैं तुम्हें अपने में समाहित करना चाहता हूँ।"

भूपतिनाथ ने कहा—"अभी नहीं। निधन के बाद।"

इतना सुनते ही उस शक्ति ने अपना त्रिशूल भूपतिनाथ के मस्तक पर रखा। उनका षट्चक्र भेद हो गया।

भूपतिनाथ को अनुभव हुआ जैसे वे शिवमय हो गये। यह स्थिति थोड़ी देर तक रही।

पुनः शक्ति ने कहा—"अब तुम अपने गुरु के पास चले जाओ। तुम्हारे गुरु हैं—श्री परमहंस रामकृष्ण।"

इतना कहने के पश्चात् वह शक्ति शून्य में गायब हो गयी। इस घटना को भूपतिनाथ के सिवा राह चलते किसीने देखा नहीं।

भोजन के पश्चात् भूपतिनाथ अपने गुरु रामकृष्ण देव के पास आये। अदृश्य शक्ति के आज्ञानुसार सवेरेवाली घटना का वर्णन उन्होंने किया।

रामकृष्ण देव ने चौंककर कहा—"जल्दी से महादेव का स्तव-पाठ करो। चलो, शुरू करो।"

भूपतिनाथ स्तव-पाठ करने लगे। एकाएक रामकृष्ण देव के शरीर से बिजली की तरह एक प्रकाश निकला और भूपति के शरीर में प्रवेश कर गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूपतिनाथ ने स्वतः अनुभव किया कि वे हरिहर बन गये हैं। थोड़ी देर बाद परमहंस रामकृष्ण देव ने 'हंसेश्वर मुक्ति'[1] प्रदान की।

इस घटना के पश्चात् एक बार जब भूपतिनाथ अपने गुरुदेव के पास गये तब उन्होंने हँसते हुए पूछा—"क्यों रे, विवाह करने की इच्छा है न ?"

गुरुदेव ऐसा परिहास करेंगे, इसकी कल्पना भूपतिनाथ को नहीं थी। लज्जा से उनका चेहरा लाल हो उठा। भूपतिनाथ यह अनुमान नहीं लगा सके कि गुरुदेव भवितव्य की चर्चा कर रहे हैं।

आखिर में प्रारब्ध के भोग के कारण उन्हें विवाह करना पड़ा। श्री कृष्णधन की सुपुत्री सरोजनी देवी उनकी पत्नी बनी।

विवाह के कुछ दिनों बाद भूपतिनाथ के जीवन में एक भयंकर दुर्घटना हो गयी। परमहंस रामकृष्ण देव ने अपना शरीर त्याग दिया। भूपतिनाथ शोक से विह्वल हो उठे।

गनीमत यह थी कि अपने निधन के पूर्व रामकृष्ण देव ने भूपतिनाथ को नित्य गोपाल के जिम्मे सिपुर्द कर दिया था। परमहंसजी ने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि भूपतिनाथ की ज्ञानपिपासा को नित्य गोपाल पूर्ण कर सकेगा।

अब भूपतिनाथ नित्य नित्य गोपाल के यहाँ जाने लगे। इन्हीं नित्य गोपाल के बताये मार्ग का अनुसरण करते हुए भूपतिनाथ ने योग-राज्य में प्रवेश किया। भूपतिनाथ की साधना में केवल परमहंस देव और नित्य गोपाल ही सहायक नहीं थे, बल्कि इस दिशा में महात्मा तैलंग स्वामी, योगिराज भास्करानन्दजी भी थे जिनसे वे योग की शिक्षा प्राप्त करते रहे।

× × ×

अर्द्धरात्रि का समय था। भूपतिनाथ कमरे में सो रहे थे। पूरा परिवार ही नहीं, पड़ोस में भी सन्नाटा था। सोते ही सोते भूपतिनाथ को समाधि लग गयी। उन्होंने अनुभव किया कि अब वे भगवत्मुक्त हो गये। उनका नरत्व लोप हो गया है।

कई दिनों तक उनकी स्थिति चिन्ताजनक रही। माँ, पत्नी और छोटे भाई आदि भूपतिनाथ की हालत देखकर घबरा उठे। स्वयं भूपतिनाथ को अनुभव हुआ जैसे वे मृत्यु के द्वार पर आ गये हैं।

बेटे की इस पीड़ा को देखकर माँ व्याकुल हो उठी। वह ओझा, पंडित, संन्यासियों के निकट जाकर जंत्र-मंत्र माँगने लगी। देखते ही देखते बाँहों तथा गले में अनेक

१. दिव्य अविनाशी चैतन्य अधीश्वर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जंतर' बाँध दिये गये। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। अक्सर वे गंगा किनारे दौड़ते रहे। माँ समझ नहीं पा रही थी कि आखिर बेटे को क्या हो गया है।

वास्तव में यह उग्र साधना का क्रम रहा, पर आगे की राह उन्हें नहीं मिल रही थी।

ठीक इन्हीं दिनों उन्हें सही मार्ग का आभास हुआ। उन्होंने अपने ज्ञान-नेत्र से देखा कि महायोगी तैलंग स्वामी उन्हें काशी आने के लिए आकर्षित कर रहे हैं।

अब भूपतिनाथ काशी जाने के लिए व्याकुल हो उठे। परमहंसजी तथा नित्य गोपालजी की जबानी वे तैलंग स्वामी के बारे में सुन चुके थे। जब महायोगी स्वयं ही आकर्षित कर रहे हैं तब उनके श्रीचरणों का दर्शन करना अनिवार्य है।

माँ से अनुमति लेकर वे काशी चले आये। यहाँ आकर वे तैलंग स्वामी के आश्रम में गये। तैलंग स्वामी ने उन्हें क्रियाएँ बताते हुए कहा—"तुम्हारी स्थिति ठीक नहीं है। गलत ढंग से क्रिया करने के कारण यह हालत हो गयी है। जैसा तुम्हें बताया है, उसे करो। कुछ ही दिनों में सब ठीक हो जायगा। चिन्ता करने की जरूरत नहीं। यही कारण है कि तुम्हें कलकत्ते से बुलाना पड़ा।

महायोगी तैलंग स्वामी द्वारा निर्देशित क्रियाओं को करने पर उनकी मनः-स्थिति पूर्ववत् हो गयी अर्थात् उन्होंने पुनः नरत्व प्राप्त कर लिया।

काशी से वापस आकर तैलंग स्वामी द्वारा बतायी गयी क्रियाओं को वे निरन्तर करते रहे। कुछ दिनों बाद भूपतिनाथ को पता चला कि महायोगी तैलंग स्वामी ने समाधि ले ली है। इस समाचार को सुनकर उन्हें असह्य पीड़ा हुई। धीरे-धीरे वे विक्षिप्त से हो गये।

उनकी यह स्थिति देखकर एक दिन श्री नित्य गोपाल ने कहा कि तैलंग स्वामी के समकक्ष एक और योगी काशी में हैं। वे हैं—स्वामी भास्करानन्द। एक बार उनसे जाकर मिलो। उनसे अपनी स्थिति बताओ। मेरी जानकारी में उनसे बढ़कर कोई योगी इस समय भारत में नहीं है।

इस बार काशी रवाना होते समय भूपतिनाथ ने निश्चय किया कि अगर स्वामीजी की कृपा प्राप्त कर सका तो एक अर्से तक वहाँ उपस्थित रहूँगा ताकि साधना-प्रक्रिया अधूरी न रहे।

इस निश्चय के बाद वे काशी आये और दुर्गाकुण्ड स्थित कोठी में स्वामी भास्करानन्दजी से मिलने गये। इन्हें आते देख स्वामीजी ने स्वागत किया। स्वामीजी ने सारी राम-कहानी सुनने के पश्चात् इन्हें योग-शिक्षा की प्रक्रिया बताने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी में रहते समय भूपतिनाथ उग्र तपस्या करने लगे। आखिर स्वामी भास्करानन्द ने इन्हें 'सरस्वती'[1] बना दिया।

कहा जाता है कि भूपतिनाथ की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान् ने इन्हें साक्षात् दर्शन दिया था। स्वामी भास्करानन्द इनके अंतिम गुरु थे।

काशी से वापस अपनी जन्मभूमि में आते ही भूपतिनाथ ने अपनी पत्नी से कहा—"अब तुम अपने नैहर चली जाओ। मैं शीघ्र ही भारत-भ्रमण के लिए जाऊँगा। अपने वहाँ रहोगी तो तुम्हारी देखरेख और अन्न-वस्त्र का प्रबंध हो जायगा।"

बाद में अपने गुरुभाइयों से गेरुआ वस्त्र, मृगछाला आदि लेकर तीर्थयात्रा के लिए रवाना हो गये। पास में रकम नहीं थी, इसलिए अधिकतर पैदल यात्रा करते रहे। प्रयाग, अयोध्या, हरिद्वार आदि तीर्थों के भ्रमण में कितना समय लगा, यह बताना कठिन है।

× × ×

तीर्थाटन करने के बाद पुनः भूपतिनाथ घर वापस आये। इस दौरान उन्होंने अद्भुत ऐशी-शक्ति प्राप्त कर ली थी। स्वयं इस शक्ति से वे अपरिचित थे। फलतः आप जिसे आशीर्वाद देते, तुरत उस व्यक्ति को समाधि लग जाती थी।

शशधर कथकराज नामक एक व्यक्ति परमहंस देव का भक्त था। एक बार वह भूपतिनाथ को अपने घर आदर के साथ ले गया।

यहाँ लोग बड़ी श्रद्धा के साथ उनका स्वागत करने लगे। इसके बाद दुर्घटना होने लगी। जो कोई इन्हें प्रणाम करता, उसे भूपतिनाथ आशीर्वाद देते और तुरत उसे समाधि लग जाती थी। समाधि-अवस्था में लोगों को प्रभु-मूर्ति के दर्शन होने लगे। कथक की पत्नी, समधिन, दामाद सभी की यही स्थिति हो गयी।

इसी प्रकार एक बार एक कायस्थ परिवार में भोजन के लिए आमंत्रित होकर गये। यहाँ भी काफी लोग आपको प्रणाम करने आये। जितने लोगों को आपने आशीर्वाद दिया, सभी को समाधि लग गयी। लेकिन एक युवती को लेकर आप परेशान हो गये।

समाधि लगने के कुछ देर बाद अपने-आप भंग हो जाती थी, पर इस युवती की समाधि भंग नहीं हो रही थी। अधिक देर तक यह स्थिति बनी रहे, यह ठीक नहीं है।

चिन्तित भाव से आप स्वयं समाधिस्थ हुए और कारण का पता लगाने लगे। इधर ज्योंही आप समाधिस्थ हुए, उसके कुछ देर बाद युवती की समाधि भंग हो गयी। युवती की समाधि भंग हो गयी है, पता लगते ही आपने अपनी समाधि भंग कर दी।

---

१. सर्व-विद्या-विशारद, वेद-वेदांग पारदर्शी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौर से उस युवती को देखने के पश्चात् भूपतिनाथ ने उसे थोड़ा-सा देते हुए कहा—"लो, इसे ग्रहण करो। आज तुम्हें घर जाने की जरूरत नहीं है। कल सुबह चली जाना।"

फिर एक महिला की ओर देखते हुए उन्होंने कहा—"देवीजी, आज आप इसे अपने पास सुलाना।"

× × ×

भूपतिनाथ की प्रतिष्ठा बढ़ती गयी। एक बार इनके एक परिचित नरेन्द्रनाथ कुण्डू भूपतिनाथ से दीक्षा लेने के लिए आये।

कुण्डू की इच्छा जानकर भूपतिनाथ ने कहा—"मुझसे क्यों ? अपने कुलगुरु से दीक्षा ले लो।"

कुण्डू ने कहा—"उनके प्रति मेरी धारणा अच्छी नहीं है।"

भूपतिनाथ ने कहा—"तब अपना सारा असबाब ठीक करके रखो। जहाज आने पर सवार हो जाना।"

कुण्डू बाबू को समझते देर नहीं लगी कि भूपतिनाथ उन्हें दीक्षा देना नहीं चाहते। निराश होकर वे वापस लौट गये।

इस घटना के कुछ दिनों बाद एक दिन कुण्डू बाबू की मुलाकात भूपतिनाथ के प्रिय शिष्य श्री अजित बन्धु राय से हुई। बातचीत के सिलसिले में उलाहना देते हुए उन्होंने दुःख का रोना रोया।

अजित बाबू ने कहा—"इसके पूर्व जब आपने गुरुदेव से दीक्षा लेने की चर्चा मुझसे की थी तभी मैं समझ गया था कि उनसे आप दीक्षा प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अच्छा, अगर आपको घर बैठे दीक्षा मिल जाय तो कैसा रहे ?"

"यह तो मेरे लिए अहोभाग्य की बात होगी।"

अजित बाबू ने कहा—"सद्गुरु पाने का मन्त्र मैं जानता हूँ। वह मन्त्र आपको लिखकर दे रहा हूँ। इसका निरन्तर जाप करने पर घर बैठे गुरु प्राप्त कर लेंगे।"

अन्धे को क्या चाहिए, दो आँखें। अजित बाबू के बताये हुए नियमों के अनुसार उनसे प्राप्त मन्त्र-जाप कुण्डू बाबू करने लगे।

मन्त्र ने एक दिन अपना प्रभाव दिखाया। एक दिन उन्होंने स्वप्न में देखा कि वे महासागर में डूब रहे हैं। उनके चारों ओर पत्नी, बच्चे, परिवार के अनेक सदस्य, घर-द्वार का मायाजाल है। दूर-दूर तक कहीं किनारे का पता नहीं है। इस आकस्मिक संकट से बचने के लिए वे तेजी से भगवान् को पुकारने लगे।

ठीक इसी समय शून्य में एक मन्त्र उभरा। उसे पढ़ते ही सारा मायाजाल बिखर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। वे चौंक उठे। उनकी आँखें खुल गयीं तब उन्हें मालूम हुआ कि यह सब स्वप्न था।

लेकिन शून्य में उभरे मन्त्र को वे भूल नहीं पाये। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अजित बाबू द्वारा प्रदत्त मन्त्र तथा इस मन्त्र में पर्याप्त साम्य है। केवल कुछ प्रभेद है। कुण्डू बाबू पहलेवाले मन्त्र का जाप करते रहे।

इस घटना के सात-आठ दिन बाद एक बार अजित बाबू से मुलाकात हुई। उन्होंने पूछा—"इस बीच आपने कोई स्वप्न देखा था?"

कुण्डू बाबू ने स्वप्न के बारे में सारी घटना बतायी, पर मन्त्र भी पढ़ा था, इसका उल्लेख नहीं किया।

अजित बाबू ने कहा—"भले ही आप प्रकट न करें, पर मैं सब समझ गया। गुरु महाराज ने उस मन्त्र में किंचित् परिवर्तन कर आपको दिया है। बहरहाल आप उसी मन्त्र को जपते रहिये। शीघ्र ही सिद्ध हो जायगा।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद भूपतिनाथ ने इन्हें स्वप्न में दीक्षा दी। दीक्षा प्राप्त करने के दूसरे दिन कुण्डू यह समाचार देने के लिए अजित बाबू के घर गये। सारी बातें सुनने के बाद अजीत बाबू प्रसन्न हो उठे। उन्होंने कुण्डू बाबू को बताया कि अब आगे क्या-क्या करना होगा।

× × ×

सवेरे का समय था। लगभग आठ बज चुके थे। ठीक इसी समय बाहर सदर दरवाजे पर कोई साँड की तरह हुँकारने लगा—"गुरु महाराज, गुरु महाराज।"

भूपतिनाथ ने सोचा—शायद किसी शिष्य को कोई कष्ट है। वे झटपट बाहर निकले। इन्हें देखते ही आगन्तुक ज्ञानदेव चौधुरी ने कहा—"गुरुदेव, अब आप जैसे व्यक्ति की मुझे कोई जरूरत नहीं है। आपमें कोई दम नहीं है। मुझे आपसे बढ़कर सिद्ध योगी मिल गये हैं। अब आपका दिया मंत्र भेड़-बकरियों के कान में डाल दूंगा।"

इतना कहने के पश्चात् बड़ी उपेक्षा के साथ ज्ञान चौधुरी पलटकर चल पड़े।

भूपतिनाथ ने बड़े स्नेह से पुकारा—"अरे ज्ञान, मेरी बात तो सुन ले।"

पास आकर ज्ञान चौधुरी ने कहा—"कहिये, क्या कहना चाहते हैं, पर यह सुन लीजिए कि अब आपके दिये मंत्र का उपयोग नहीं करूंगा। उसे जानवरों को सुना दूंगा।"

भूपतिनाथ ने कहा—"तेरे मन में जो आये, वही करना। मैं तुझे मना नहीं कर रहा हूँ। लेकिन जब कभी तुझ पर संकट आये तब तू इस मंत्र का जाप करना। इससे तुझे राहत मिलेगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतना कहने के पश्चात् उन्होंने एक मंत्र सुनाया। ज्ञान बाबू अपने घमण्ड में चूर रहे। बड़ी उपेक्षा के साथ उन्होंने गुरुदेव की ओर देखा और फिर तेज कदमों से आगे बढ़ गये।

बात यह थी कि इधर कुछ दिनों से ज्ञान बाबू एक कापालिक के चक्कर में आ गये थे। कापालिक के चमत्कारों से प्रभावित हो गये थे। उसने ज्ञान बाबू को यह विश्वास दिलाया था कि चन्द दिनों में वह इन्हें सिद्ध बना देगा। जब सहज ही किसी-से सिद्धि प्राप्त हो जायेगी तब ऐसे पंडित के दिये मंत्र की साधना क्यों करूँ ?

अमावस्या के दिन कापालिक रात दस बजे क्रिया करने लगा। क्रिया समाप्त होने के एक घंटा बाद ज्ञान बाबू के शरीर में असह्य पीड़ा प्रारंभ हो गयी। धीरे-धीरे यह पीड़ा इतनी बढ़ गयी कि वे मिर्गी के रोगी की तरह जमीन पर छटपटाने लगे।

इनके घर के सामने कुछ वेश्याएँ रहती थीं। इनके कराहने की आवाज सुनकर एक वेश्या ने अपनी नौकरानी से कहा—"मालती, देख तो ज्ञान बाबू को क्या हो गया है ? क्यों इतना कराह रहे हैं ?"

यह बात कान में जाते ही सहसा ज्ञान बाबू को अपने गुरुदेव द्वारा दिये गये मंत्र की याद आ गयी। याद आया कि गुरुदेव ने कहा था कि जब संकट आये तब इसका जाप करना। इधर पीड़ा इस कदर बढ़ गयी कि लगा, जैसे मौत आ जायगी।

लाचारी में भूपतिनाथ के दिये मंत्र का मन ही मन जाप करने लगे। लहमे-भर में राहत मिलने लगी। तुरत कुण्डू बाबू ने समझ लिया कि गुरुदेव का मंत्र लाभ पहुँच रहा है।

इसके बाद चौकी पर बैठकर वे तेजी से जाप जपने लगे। इसी बीच उन्होंने देखा कि सामने तेजी से 'रक्षा करो—रक्षा करो' आवाज लगाता हुआ कापालिक चला आ रहा है। ज्ञान बाबू समझ गये कि इसी कापालिक के कारण उनकी यह दशा हुई है। क्रोध से आगबबूला होकर वे बाहर आये और कापालिक की गर्दन पर हाथ लगाकर सड़क की ओर ढकेल दिया।

कुण्डू बाबू की उग्र मूर्ति और यह व्यवहार देखकर कापालिक भाग खड़ा हुआ। उसकी सारी सामग्री कुण्डू बाबू ने बाहर फेंक दी।

× × ×

पावना जिले में राधानगर नामक एक गाँव है। वहाँ के एक जमींदार अपनी गलती के कारण एक मुकदमे में फँस गये। यहाँ तक कि उन्हें अपमानित करने के लिए अपर पक्ष ने उनके नाम वारण्ट निकलवाया।

इस समाचार को सुनते ही जमींदार साहब रात को ही फरार होकर कलकत्ता चले आये। उन दिनों भूपतिनाथ कलकत्ते के श्यामपुकुर स्ट्रीट में रहते थे। जमींदार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रफुल्लकुमार श्री भूपतिनाथ के शिष्य थे। गुरुदेव के पास आकर उनके चरणों पर गिर पड़े।

प्रफुल्लकुमार की सारी कहानी सुनने के बाद उन्होंने ध्यान लगाया। कुछ देर के बाद गुरुदेव ने कहा—"डरो मत बेटा। कुछ नहीं होगा। तुम्हारे सभी वकील-मुख्तार कमजोर हैं। वे ठीक से बहस नहीं कर पाते। अब अपने लिए कोई बैरिस्टर रख लो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम्हारी विजय निश्चित है।"

भूपतिनाथजी उन दिनों अपने एक अन्य शिष्य सुरेन्द्रनाथ मजुमदार के घर ठहरे हुए थे। नित्य सुबह-शाम भक्तों की भीड़ आती जिन्हें भूपतिनाथ उपदेश देते थे। उस समय कोई इन्हें पंखा झलता तो कोई पैर दबाता था। इस प्रकार लोग इनकी सेवा करते रहते थे।

सुरेन्द्रनाथ की एक बहन का नाम था—श्रीमती सरलादेवी। उसे भूपतिनाथ-जी की ऐशी-शक्ति के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। हाल ही में यहाँ आयी थी। भूपतिनाथ की सेवा और सत्कार देखकर वह सोचने लगी कि मेरी भाभी को यह कौन-सी सनक सवार हो गयी है जो इस पागल की सेवा कर रही हैं।

सरलादेवी अन्तःपुर के दरवाजे के पास खड़ी थी। तभी भूपतिनाथ ने उसकी ओर देखते हुए पूछा—"क्यों बेटी, तुम मुझे पागल समझ रही हो?"

इतना सुनना था कि सरलादेवी अनजाने भय से पीली पड़ गयी। आखिर इस व्यक्ति को कैसे यह मालूम हो गया कि मैं इसे पागल समझ रही हूँ। क्या यह वृद्ध लोगों के मन की बात समझ लेता है? अत्यधिक भय के कारण उसके पैर काँपने लगे। बिना कोई जवाब दिये वह भीतर चली गयी।

इस घटना के बाद से सरलादेवी कभी भी भूपतिनाथ के सामने नहीं गयी। भूपतिनाथ सूजी का पायस खाना अधिक पसन्द करते थे। यह बात उनके सभी भक्तों को मालूम थी। जब वे किसी भक्त के यहाँ जाते तब भोजन के समय उन्हें एक कटोरा पायस जरूर परोसी जाती थी।

उस दिन सरलादेवी ने बड़े अच्छे ढंग से पायस बनायी। कटोरे में उड़ेलते समय खाँसी आ गयी। अचानक सुपारी का एक कण पायस में गिर गया। सरलादेवी का कलेजा काँप उठा। अब क्या होगा? सारी पायस तो जूठी हो गयी।

उधर भूपतिनाथ भोजन करने के लिए बैठ चुके थे। वहाँ से आवाज आयी—"पायस तैयार हो गया हो तो भेजो।"

सरलादेवी समझ नहीं पा रही थी कि अब क्या करूँ? जूठी पायस खिलाने से महापाप होगा। नये सिरे से बनाने में समय की जरूरत है और अगर अपनी गलती स्वीकार करती है तो भाई, भाभी तथा अन्य लोगों के सामने अपमानित होना पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी कशमकश में सरलादेवी ने मन ही मन कहा—"महाराज, आप अन्तर्यामी हैं। लोगों के मन की बात जान लेते हैं। यह पायस जूठी हो गयी है। कृपया इसे ग्रहण न करें।"

इन्हीं बातों को मन ही मन कहती हुई वह पायस की कटोरी लेकर आयी और भोजन की थाली की बगल में रखकर वापस चली गयी।

वहाँ उपस्थित सभी लोग जानते थे कि पायस भूपतिनाथ के लिए अमृततुल्य है। लेकिन अभी तक उन्होंने स्पर्श नहीं किया। भोजन समाप्त हो गया। लोगों ने पायस ग्रहण करने का अनुरोध भी किया, पर वे केवल मुस्कराकर रह गये। सारी बातें सुनकर सरलादेवी समझ गयीं कि गुरु महाराज पागल नहीं, सर्वज्ञ हैं। मन ही मन उन्हें प्रणाम करने लगी।

× × ×

कलकत्ते के डायमण्ड हार्बर मुहल्ले में डॉ० सुरेन्द्रनाथ घोष नामक एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति रहते थे। दिन-रात जब देखो तब शिव-राम कहा करते थे। यहाँ तक कि शौच के वक्त भी उनका जप चलता था। घर के लोगों का कहना था कि नींद में भी उनके ओठ जप करते थे।

उनकी इस आदत को देखकर एक दिन छोटे भाई ने परिहास में पूछा—"दादा, दिन-रात जप करते हो, कभी कोई लाभ हुआ?"

घोष बाबू ने कहा—"दिन-रात उन्हें पुकारता हूँ। शायद कभी कृपा हो जाय।"

छोटे भाई ने कहा—"दादा, अगर सचमुच साधना का लाभ उठाना चाहते हो तो भूपतिनाथजी की शरण में जाओ। वे योगी पुरुष हैं। वे तुम्हें सही मार्ग बता देंगे।"

घोष बाबू अपने छोटे भाई की राय सुनकर प्रसन्न हो गये। अपने मित्रों से भूपति बाबू के बारे में सुन चुके थे। अकेला जाने के बदले वे अपने एक परिचित संन्यासी मित्र को लेकर भूपतिनाथजी के यहाँ गये।

बातचीत के सिलसिले में संन्यासी ने कहा—"घोष बाबू आपसे दीक्षा लेने आये हैं। कृपया इन्हें शिष्य के रूप में स्वीकार कर लीजिए।"

भूपतिनाथ ने कहा—"आजकल मेरा समय ठीक नहीं है। अभी दीक्षा नहीं दे सकता।"

भूपतिनाथ की राय सुनकर घोष महाशय निराश नहीं हुए। उनके मन में यह भावना उत्पन्न हुई कि अगर गुरुदेव 'शिवराम' होंगे तो आज ही मुझे दीक्षा देंगे, वरना मुझे दीक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। आदत के अनुसार वे 'शिवराम-शिवराम' जपने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकाएक भूपतिनाथ ने कहा—"आपको अभी दीक्षा दूँगा।"

घर वापस आकर अपने छोटे भाई को गले लगाते हुए घोष बाबू ने कहा—"प्यारे भाई, आज तेरे कारण मुझे 'शिवराम' मिल गये।"

कभी-कभी गुरु भी चूक जाते हैं। सुरेन्द्रनाथ मजुमदार की बड़ी भाभी भूपतिनाथजी की ऐशी-शक्ति से परिचित थी। काफी दिनों से वह भूपतिनाथजी से दीक्षा लेने को सोचती रही।

एक दिन दृढ़ निश्चय कर वह भूपतिनाथजी के निकट गयी। महिलाओं के लिए यह नियम है कि जब तक पति से अनुमति प्राप्त न हो जाय तब तक दीक्षा नहीं लेनी चाहिए। लेकिन भूपतिनाथ ने बड़ी भाभी के प्रति रियायत कर दी।

दीक्षा लेने के बाद भाभी घर चली आयीं। दूसरे दिन शाम के समय भाभी के कमरे से भयंकर चीख की आवाज आयी। घर के अधिकांश लोग उस कमरे में दौड़े हुए गये तो देखा—बड़ी भाभी आसन पर बैठी हैं, परन्तु रीढ़ की हड्डी धनुष की तरह मुड़ गयी है। जीभ बाहर निकल आयी है। आँखें बन्द हैं, पर आँसू अविरल गति से बह रहे हैं। सारा शरीर लोहे की तरह सख्त हो गया है।

भाभी की यह दशा देखकर सभी घबरा गये। उन लोगों ने सोचा—शायद हिस्टीरिया हो गया है। तुरत सिर पर पानी डालने लगे, कोई हवा करने लगा। कोई उन्हें हिलाने-डुलाने लगा। दो घंटे लगातार श्रम करने के बाद स्थिति में किंचित् परिवर्तन हुआ। लेकिन इसके बाद दूसरी घटना प्रारंभ हो गयी।

अब वे तेजी से रोने लगीं। बार-बार यही कहने लगीं—"मैं गुरुदेव के पास जाऊँगी।"

समय काफी गुजर चुका था। इतनी रात गये कौन गुरुदेव के पास ले जायगा। कहीं वे नाराज न हो जायँ। व्यर्थ में उन्हें कष्ट देना उचित नहीं है। मँझले देवर ने कहा—"भाभी, इस वक्त काफी रात हो गयी है। कल सबेरे मैं आपको गुरुदेव के पास ले चलूँगा। अभी आराम कीजिए।"

सारी रात बेचैनी में गुजरी। भाभी के कारण कोई सो नहीं सका। दूसरे दिन देवर के लड़के ने कहा—"काकी के ऊपर किसी भौतिक देवता का प्रकोप है। इन्हें गुरुदेव के पास ले चलने की अपेक्षा उन्हें यहाँ ले आया जाय।"

मँझले देवर तुरत रवाना हो गये। गुरुदेव ने गौर से बड़ी भाभी को देखा और कहा—"घबराने की बात नहीं है। बेटी को समाधि लग गयी है। आप लोग इस बात को ध्यान में रखें कि आइन्दा ऐसी दुर्घटना हो जाय तो कुछ मत करियेगा। केवल इनके कान के पास 'गुरुपद भरोसा' शब्द दुहराते रहियेगा। अपने-आप थोड़ी देर में सब ठीक हो जायगा। देर तक इस स्थिति में रहना शरीर के लिए घातक है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतना कहने के बाद भूपतिनाथ बड़ी भाभी के सामने बैठकर जाप करने लगे। जप पूर्ण करने के बाद बोले—"माँ, शान्त हो जाओ।" कई बार इसी वाक्य को दोहराते रहे।

इसी प्रकार लगातार कई दिनों तक सुबह आकर भाभी को सामने बैठाकर जप करते रहे। पन्द्रह दिनों के बाद भाभी सही स्थिति में आयीं।

तब गुरुदेव ने कहा—"बेटी, जरा भावों को संयत करने की कोशिश किया करो। अभी आगे न जाने कितने भाव-महाभाव आयेंगे। उन्हें बराबर आदर देने का प्रयत्न करना। सत्य की पत्नी की तरह तुम्हें भी समाधि लगने लगी है। मैं आशीर्वाद देता हूँ, तुम्हारा कल्याण होगा। मेरी समझ से तुम्हारा मन्त्र आवश्यकता से अधिक तेजस्वी हो गया है। अब आगे केवल १२ बार जप करना।"

बड़ी भाभी ने कहा—"आपसे जब दीक्षा ले रही थी तब ऐसा लगा जैसे काँसे के अनेक बरतन एक साथ गिर पड़े हैं। मैं अपने को संयत नहीं कर पा रही हूँ। जीभ और मन दोनों ही बेकाबू हो जाते हैं। भोजन करते वक्त, लड़के के रोने में, यहाँ तक कि देवर जब तबला बजाता है, उस आवाज में भी मन्त्र सुनती हूँ। उस वक्त अपने को स्थिर नहीं रख पाती। ऐसी हालत में मैं क्या करूँ, गुरुदेव ?"

गुरुदेव ने गंभीर होकर कहा—"मुझे डर लग रहा है। फिलहाल चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। जितना कह चुका हूँ, आगे से उतना ही करना। शेष उपचार मैं करूँगा।"

इस घटना के बाद बड़ी भाभी में तेजी से सुधार होने लगे। आगे पुनः कोई दुर्घटना नहीं हुई। कमजोर व्यक्ति को उच्चशक्ति का मन्त्र देने पर कभी-कभी अनर्थ हो जाता है।

× × ×

शाम का समय था। अपने कई भक्तों से घिरे भूपतिनाथ वार्तालाप कर रहे थे। इतने में एक युवक बौखलाया-सा आया और उनके चरणों पर सिर रखकर रोने लगा।

देखते ही देखते आशुतोष भूपतिनाथ महारुद्र बन गये। अपना पैर खींचते हुए उन्होंने कहा—"दूर हो जा मेरी नजरों से। मैं तेरा मुंह नहीं देखना चाहता। तेरे लिए कुछ भी नहीं कर सकता। तू गुरु-त्यागी है। तेरा मुंह देखना पाप है। तू कुत्ता है।"

उपस्थित सभी भक्त सकते में आ गये। इन लोगों ने अपने जीवन में भूपतिनाथ को कभी क्रोधित नहीं देखा था। स्वभाव से बहुत शान्त और उदार हैं। आखिर आज क्या हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूपतिनाथ की फटकार सुनकर वह युवक चुपचाप चला गया, पर उसका आना वन्द नहीं हुआ। नित्य आता और इसी प्रकार अपशब्द सुनकर वापस चला जाता था। वाद में लोगों को मालूम हुआ कि यह युवक नित्य गोपालजी का शिष्य है। साधना करते-करते उन्नीत हो गया तो स्वयं गुरु वनकर शिष्य वनाने लगा। गलती यह हुई कि नये इष्ट मन्त्र के स्थान पर इसने अपने गुरु से प्राप्त इष्ट मन्त्र सभी को देने लगा। फलस्वरूप उन्नत स्थिति से स्खलित हो गया।

नित्य गोपालजी का निधन हो गया। भूपतिनाथ के गुरुओं में वे भी एक थे। अव यह युवक इनकी शरण में आया है। कुछ दिनों वाद भूपतिनाथ का क्रोध ठंढा हुआ तव उन्होंने कहा कि अब आज से तुम लगातार एक वर्ष तक मौन व्रत धारण करो। उसके वाद मेरे पास आना तव नया मार्ग वताऊँगा।

एक साल मौन रहने के वाद जव वह युवक भूपतिनाथ के पास आया तब उसे उन्होंने प्रार्थित वस्तु दे दी।

गुरु का महत्त्व और उनके मन्त्र की क्या मर्यादा होती है, इसके दो उदाहरण उपर्युक्त घटनाओं से प्राप्त हो जाते हैं।

भूपतिनाथ वचपन से ही दैवकृपा के कारण ऐशी-शक्ति प्राप्त कर चुके थे। जब इनमें ज्ञान का उदय हुआ तव परमहंस रामकृष्ण देव, नित्य गोपालजी, महायोगी तैलंग स्वामी और भास्करानन्दजी ने योग की शिक्षाएँ दीं। आम तौर पर भूपतिनाथ कभी भी यौगिक शक्ति का प्रदर्शन नहीं करते थे। मन्त्र-दान देकर जप करने पर जोर देते थे।

कभी-कभी अनजाने इनसे चमत्कार अपने-आप हो जाता था। एक वार श्री ज्ञानेन्द्र चौधुरी नामक एक व्यक्ति भूपतिनाथजी से मिलने आया। शिष्यों ने इन्हें ऊपर नहीं जाने दिया तो वे वाहर से ही चिल्लाने लगे—"गुरुदेव, गुरु महाराज।"

तेज आवाज में चिल्लाने के कारण भूपतिनाथ नीचे आये। इन्हें देखते ही चौधुरीजी ने कहा—"जरा अपने शिष्यों को समझाइये। मुझे ऊपर आपके निकट जाने से रोक रहे हैं। इन्हें क्या मालूम कि मैं आपका प्रथम शिष्य हूँ। इस दृष्टि से आप पर मेरा कितना अधिकार है।"

इसके बाद भूपतिनाथ को प्रणाम करते हुए उपस्थित शिष्यों को अपनी राम-कहानी सुनाने लगे—"आज आप लोगों को अपनी कहानी सुना दूँ तब पता चलेगा कि मैं कौन हूँ और कैसे पहली वार गुरुदेव को मैंने पहचाना। आज से काफी दिनों पहले मैं सिद्ध योगी की तलाश में आगरा के जंगलों में चक्कर काट रहा था। गुरुदेव भी मेरे साथ थे। आप तीर्थयात्रा करने निकले थे। अपने भाव में मग्न थे। जव हम दोनों किसी मंदिर में पहुँचते तब भूपतिनाथजी होम करते। होम के लिए मुझे सूखी लकड़ियाँ लानी पड़ती थीं। उस समय तक मैं भूपतिनाथजी के बारे में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ भी नहीं जानता था। मुझे इसका आभास नहीं था कि आप ऊँचे दर्जे के योगी पुरुष हैं। अपनी तरह इन्हें साधारण आदमी समझता था। उन्हीं दिनों मेरे साथ एक दुर्घटना हो गयी। नागफनी का एक काँटा मेरी आँख में धँस गया। आँख जैसे कोमल अंग में काँटा धँसने से कितनी पीड़ा होती है, इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इलाज कराने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ। पीड़ा धीरे-धीरे असह्य हो गयी। सात-आठ दिन बाद डॉक्टरों ने कहा—"कल आपकी आँखों का आपरेशन होगा।"

"मैंने इस बात की सूचना भूपतिनाथजी को दी तब इन्हें मेरे रोग का पता चला। दरअसल ये हमेशा खोये-खोये-से रहते थे। किसी बात की चिन्ता नहीं थी। इन्होंने सहज स्वर में पूछा—'मुन्ना, क्या हुआ है ?' इतना सुनना था कि मुझे क्रोध आ गया। अपने स्वभाव के अनुसार चिढ़कर मैंने कहा—'मैं मर रहा हूँ और तुम्हें पता भी नहीं ? क्या दिखाई नहीं देता ? मेरी एक आँख खराब हो गयी है। कल आपरेशन होगा।'

"गुरुदेव ने मेरी पीड़ावाली आँख पर दो बार अपना हाथ फेरा। आप लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि सारा दर्द छू मंतर हो गया। लगा जैसे कभी दर्द था ही नहीं। उस समय भी मैं कल्पना नहीं कर सका कि भूपतिनाथ सिद्ध योगी हैं। मैं केवल इस चमत्कार से चकित रह गया। दूसरे दिन अस्पताल आपरेशन के लिए गया। सारी तैयारी हो गयी। स्ट्रेचर पर लेटने के बाद जब डॉक्टरों ने मेरी आँख देखी तो बोले—'कहीं कोई शिकायत नहीं है। आपरेशन की जरूरत नहीं है।'

"डॉक्टरों की बातें सुनकर मुझे पक्का विश्वास हो गया कि यह जादू भूपतिनाथजी के कारण हुआ है। आप सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। उच्चकोटि के योगी हैं। यह तो मेरा अहोभाग्य है जो इन्होंने मुझे अपना लिया है वरना मैं इस लायक नहीं हूँ।" ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

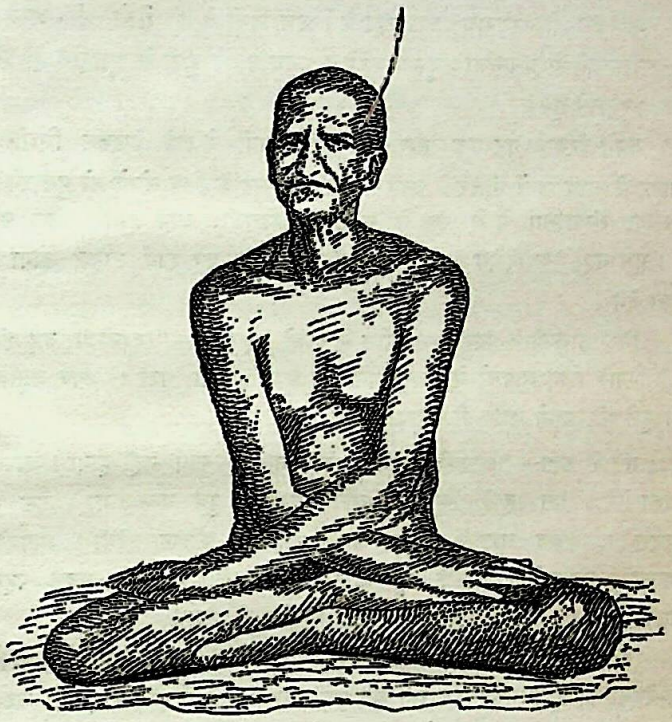

स्वामी भास्करानन्द

कानपुर जिले का मैथालालपुर गाँव संवत् १८९०, आश्विन मास की सप्तमी की घटना है। इसी दिन शाम होने के कुछ पूर्व तीन अपरिचित संन्यासी गाँव में मिश्रीलाल मिश्र के घर का पता पूछते हुए उनके घर आये।

इन संन्यासियों को देखकर गाँव के लोगों को आश्चर्य नहीं हुआ। पंडित मिश्रीलाल मिश्र के यहाँ अनाहूत की तरह बराबर साधु-संन्यासी आते रहते हैं। संतों की सेवा करने की उनकी आदत है। उन्हें भोजन देते हैं, आश्रय देते हैं और राह-खर्च

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देकर गाँव के बाहर तक पहुँचा आते हैं। केवल साधु-संतों के प्रति वे दयालु नहीं हैं बल्कि किसी भी अभावग्रस्त व्यक्ति की सहायता करने को सदा उन्मुख रहते हैं। जाड़े के दिनों में रात को गली-कूँचे में टहलते हुए यह देखते हैं कि कोई कपड़े के अभाव में सर्दी से ठिठुर तो नहीं रहा है? कोई भूख के कारण परेशान तो नहीं है? ऐसे लोगों को अपने यहाँ लाकर भोजन देते हैं और रात गुजारने के लिए आश्रय देते हैं।

आजकल तो नवरात्र चल रहा है। इन दिनों वे किसीको भी अपने यहाँ भोजन-आश्रय देने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। भगवान् की कृपा से खुशहाल हैं, इसलिए यह सब कर पाते हैं।

अपने दरवाजे पर एक साथ तीन संन्यासियों को खड़े देखकर मिश्रीलालजी बड़े आदर के साथ उन्हें भीतर ले आये। आदर-सत्कार के लिए लोगों को पुकारने लगे। तभी आगत संन्यासियों में से एक ने कहा—"पंडितजी, आप हमारे लिए परेशान न हों। हम यहाँ एक विशेष कार्य से आये हैं। ज्योंही वह कार्य समाप्त होगा त्योंही हम चल देंगे।"

मिश्रीलालजी ने प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए पूछा—"स्वामीजी, वह कौन-सा कार्य है जिसके लिए आपको मेरे घर आने का कष्ट करना पड़ा। अगर असुविधा न हो तो मुझे भी बतायें ताकि मैं सहायता करूँ।"

संत ने कहा—"आपकी सहायता के बिना यह कार्य नहीं होगा। आपसे हम सहायता लेंगे। बात यह है कि आज आपके यहाँ एक पुत्र जन्म लेगा। इस बालक के कारण न केवल आपकी बल्कि आपके वंश की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आपको कष्ट यह करना है कि ज्योंही बालक भूमिष्ठ हो तब उसे कोई न देखे। सबसे पहले हम देखेंगे।"

संत की बातें सुनकर मिश्रीलाल आश्चर्यचकित रह गये। सवेरे से पत्नी प्रसव-वेदना का जिक्र जरूर कर रही थी, पर आज ही संतान भूमिष्ठ होगा, यह बात इन संन्यासियों को कैसे मालूम हो गयी? आखिर ये लोग उसे क्यों देखेंगे? क्या कोई देव-पुरुष आ रहा है? संभव है कि लड़की जन्म ले तब क्या होगा? इसी ऊहापोह में उन्होंने संन्यासियों से पुनः कोई प्रश्न नहीं पूछा।

रात्रि के दो प्रहर व्यतीत होने के बाद नवजात शिशु की क्रन्दन-ध्वनि सुनाई दी। मिश्रीलालजी अपने साथ संन्यासियों को लेकर सूतिकागृह में आये और स्वयं बाहर खड़े होकर भीतर का सारा दृश्य शंकित हृदय से देखने लगे। संन्यासियों ने बच्चे को देखा और कहा—"पंडितजी, जल्दी से होम की सामग्री लाइये।"

मिश्रीलाल ने कहा—"आधी रात को होम की सामग्री कहाँ से लाऊँगा। होम करना था तो आप शाम को···"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीच ही में उन्हें रोककर एक संन्यासी ने कहा—"आपको कहीं से लाना नहीं है। बगल के कमरे से सामग्री ले आइये। समय गुजरता जा रहा है।"

मिश्रीलालजी चकित भाव से बगल के कमरे में गये तो देखा—सारी सामग्री तैयार है। पता नहीं, कैसे यह सब सामग्री आ गयी। लगता है, बाबा लोग अपने साथ ले आये थे। सामान लाकर उन्होंने संन्यासियों को दे दिया। थोड़ी ही देर में सूतिका गृह होमाग्नि से गमक उठा। होम करने के बाद तीनों संन्यासी बाहर निकल आये।

इसके बाद घर के लोग आकर हर्ष मनाने लगे। अचानक मिश्रीलाल को संतों की सेवा की याद आयी। वे बैठक में आये। तीनों संन्यासी अन्तर्धान हो चुके थे। बाहर चाँदनी फैली हुई थी। दूर-दूर तक देखने पर वे कहीं नहीं दिखाई दिये। ये लोग कौन थे, क्यों आये थे और होम क्यों किया, इन प्रश्नों का उत्तर देनेवाला कोई नहीं था।

दूसरे दिन पूरे गाँव में यह समाचार फैल गया कि मिश्रीलाल मिश्र के यहाँ जो लड़का पैदा हुआ है; उसे देखने के लिए देवलोक से ब्रह्मा, विष्णु और महेश आये थे। किसीने कहा—"ऐसा भला हो सकता है?" दूसरे ने पूछा—"उन्हें होम करने की क्या गरज पड़ी थी? फिर तुरत हवा में गायब कैसे हो गये?"

अन्नप्राशन के दिन बालक का नामकरण हुआ—मोतीराम। इसके बाद क्रमशः मुण्डन, उपनयन आदि हुए। परम्परा के अनुसार पिता संस्कृत पढ़ाने लगे। पढ़ने के बाद बालक अक्सर न जाने कहाँ गायब हो जाता था। उसको तलाश में मिश्रीलाल परेशान हो जाते थे। उन्होंने अनुभव किया कि शायद मैं अधिक कड़ाई करता हूँ। अब इसे पाठशाला भेजना उचित होगा।

पिता के आदेशानुसार मोतीराम गाँव से दूर न जाकर अपने हमजोलियों के साथ खेलते-कूदते रहे। कुछ दिनों बाद सहसा बालक में अपने-आप परिवर्तन होने लगे। जिस बालक के लिए तीन महात्मा जन्म के समय आये थे, उसके प्रति मिश्रीलाल की ममता अधिक थी; इसीलिए वे हमेशा उसका ख्याल रखते थे। इस उम्र के बालक जहाँ वाचालता प्रकट करते हैं, वहाँ उनका बालक शिव की प्रतिमा बनाता या चुपचाप बैठा न जाने क्या सोचा करता था। मिश्रीलाल की पत्नी ने कहा—"यह सब लक्षण ठीक नहीं हैं। जन्म के समय बाबा लोगों ने न जाने क्या कर दिया है। इसकी शादी कर दो। कहीं साधु बन गया तो क्या होगा?"

पत्नी की सलाह मानकर वे योग्य लड़की की तलाश करने लगे। अन्त में एक रूपवती योग्य बालिका को पुत्रवधू के रूप में घर ले आये। उन दिनों मोतीराम की उम्र बारह साल थी। मिश्रीलाल का ख्याल था कि रूपवती पत्नी के कारण अब इसका अनमनापन दूर हो जायगा। देखते ही देखते छह वर्ष का समय गुजर गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी समय दो विचित्र घटनाएँ हुईं। मोतीराम प्रथम पुत्र के पिता बने। दादा बनने की प्रसन्नता में मिश्रीलाल ने उस दिन गरीबों को अन्न-वस्त्र दान दिया। पड़ोसियों का मुंह मीठा किया। इस घटना के एक सप्ताह बाद मोतीराम घर से गायब हो गये।

आसपास के गाँवों से लेकर प्रत्येक रिश्तेदारों के यहाँ पता लगाने पर भी मोतीराम का कहीं पता नहीं लगा। पौत्र के जन्म का सारा आनन्द निरानन्द में परिवर्तित हो गया।

× × ×

घर से रवाना होकर मोतीराम कई तीर्थों का चक्कर काटते हुए उज्जैन आये। इस बीच कई सतों के दर्शन हुए। उनका प्रभाव मोतीराम पर पड़ चुका था। नित्य क्षिप्रा नदी में स्नान करने के पश्चात् वे महाकालेश्वर का दर्शन करने जाते थे। इसके बाद सुनसान स्थान में आकर ध्यान लगाते थे।

कुछ दिनों बाद जब राहगीर उनसे तरह-तरह के प्रश्न करने लगे तब वे श्मशान-भूमि के निकट चले आये जहाँ कुछ साधु रहते थे। इनकी जमात से दूर अपने लिए उन्होंने एक गुफा खोज ली। इस निर्जन गुफा में उन्हें आनन्द मिलने लगा। काफी दिनों तक एकान्त-सेवन करने के पश्चात् मोतीराम ने अनुभव किया कि जब तक किसी योग्य गुरु से योग की शिक्षा नहीं लूंगा तब तक साधना का सही मार्ग नहीं मिलेगा।

मोतीराम के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि जिस दिन उनके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ, ठीक उसी दिन दक्षिण भारत के प्रसिद्ध स्वामी पूर्णानन्द तीर्थयात्रा करते हुए उज्जैन आये। इस समाचार को सुनते ही मोतीराम उनके निकट गये और अपनी इच्छा प्रकट की।

स्वामी पूर्णानन्द योगी पुरुष थे। उन्होंने मोतीराम को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। उसकी शक्ति पहचानकर उन्होंने कहा—"ठीक है। पहले प्राणायाम से प्रारंभ करूँगा।"

मोतीराम ने कहा कि प्राणायाम की समस्त विधियाँ मुझे ज्ञात हैं। पूर्णानन्दजी की आज्ञा पर उन्होंने कई कठिन प्राणायाम करके दिखाया। पूर्णानन्दजी ने कहा—"तब योग तुम्हारे लिए सरल है।"

स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से योग की शिक्षा प्राप्त कर उन्हींकी आज्ञा से एक बार तीर्थ-भ्रमण के लिए निकले। वहाँ से गुजरात आकर यहाँ के पंडितों से वेदान्त का अध्ययन करने लगे। चार वर्ष तक अध्ययन करने के बाद वे पुनः उज्जैन वापस आये। उस समय तक स्वामी पूर्णानन्द वहीं थे।

स्वामीजी के निकट आकर उन्होंने कहा—"स्वामीजी, आपके आज्ञानुसार तीर्थ-भ्रमण और वेदान्तों का अध्ययन कर चुका। अब कृपया मुझे दीक्षा देकर शिष्य बना लीजिए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी ने कहा—"परसों स्नान के पश्चात् यहाँ चले आना। उसी दिन तुम्हें पूर्ण रूप से संन्यास दूँगा।"

निश्चित समय पर मोतीराम मिश्र स्वामीजी के पास आये। उन दिनों मोतीराम की उम्र सत्ताईस वर्ष थी। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती ने गुरु-मंत्र देने के बाद कहा—"आज से तुम अपना पूर्वनाम त्यागकर भास्करानन्द सरस्वती नाम ग्रहण करोगे।" इसके बाद एक दण्ड देते हुए कहा—"आज से तुम दण्डी स्वामी सम्प्रदाय में सम्मिलित हो गये।"

गुरुदेव को साष्टांग प्रणाम करने के बाद वे कुछ दिनों तक उनके सान्निध्य में उपदेश ग्रहण करते रहे। इसी बीच उन्हें पता चला कि उनके एकमात्र पुत्र का देहान्त हो गया है। इस समाचार से उन्हें किसी प्रकार की पीड़ा नहीं हुई।

कुछ दिनों बाद वे उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के असनी गाँव में आये। यहाँ वे एक ब्राह्मण के घर रहने लगे। एक दिन उन्होंने सोचा कि जब मैं सर्वत्यागी बन गया हूँ तब इस दण्ड को बेकार लिए फिरता हूँ। यह विचार आते ही एक दिन स्नान करते समय उसे गंगा में प्रवाहित कर दिया।

असनी गाँव से वे कानपुर चले आये। संन्यास लेने के पश्चात् व्यक्ति को एक बार अपनी जन्मभूमि में आना पड़ता है। यह विचार आते ही वे मैथालालपुर आये। संन्यासी के रूप में उन्हें पाकर गाँववालों ने इनका बड़ा आदर किया। इस आदर-स्नेह से मुक्ति पाने के लिए एक दिन वे रात को चुपचाप चल दिये। साथ में जितने वस्त्र तथा वस्तुएँ थीं, फेंक दीं। केवल कौपीन पहनकर पूर्ण रूप से वैरागी बन गये।

कानपुर से हरिद्वार होते हुए बदरीनाथ आये। यहाँ से केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्तरी दर्शन करते हुए मानसरोवर चले आये। यहाँ से पुनः दक्षिण भारत के तमाम तीर्थों का दर्शन करने के बाद आप हरिद्वार आकर विभिन्न ग्रन्थों के अध्ययन में जुट गये।

अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने निश्चय किया कि अब यायावर-जीवन समाप्त कर निश्चित रूप से कहीं रहना आवश्यक है। उन्हें सभी तीर्थों से उत्तम काशी नगरी अधिक उपयुक्त प्रतीत हुई। तत्काल वे काशी आकर गंगा किनारे रहने लगे। प्रचण्ड गर्मी में तप्त बालू पर चुपचाप बैठे रहते। भयंकर शीत और वर्षाकाल में भी वे अपने स्थान पर ध्यान लगाये रहते। किसी भी प्रकार के प्राकृतिक दुर्योग का आप पर प्रभाव नहीं पड़ता था।

कहते हैं कि लोग सोते हैं, पर उनकी जबान चलती रहती है। आपके त्याग-तपस्या के प्रति काशी के नागरिक आकृष्ट हुए। आपकी चर्चा होने लगी। फलस्वरूप आर्त-पीड़ित लोग आशीर्वाद पाने के लिए आपके निकट आने लगे। इससे आपकी साधना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में व्याघात पहुँचने लगा। कभी-कभी लोगों से बचने के लिए वे गंगा के उस पार चले जाते थे।

ठीक इन्हीं दिनों अमेठी के नरेश ने आपसे आग्रह किया कि उनके बाग में जाकर रहें। स्थान मनोरम है और वहाँ सर्वसाधारण आकर तंग नहीं कर सकेंगे। अमेठी नरेश की कोठी नगर के दक्षिणी छोर पर दुर्गाकुण्ड के बगल में थी। पहले यह नाम राजा अमृत पेशवा का था। सन् १८५७ ई० के विद्रोह के समय इस कोठी को अपने कब्जे में लेकर सरकार ने नीलाम कर दिया था। उस समय अमेठी-नरेश श्री लालमाधव सिंह ने खरीद लिया। उन्होंने ही इस कोठी का नाम 'आनन्दबाग' रखा था।

राजा साहब के आग्रह पर स्वामी भास्करानन्दजी आनन्द बाग में चले आये। यहाँ स्वामीजी को राजा की ओर से पर्याप्त सम्मान दिया गया। आपकी सेवा के लिए आठ नौकर नियुक्त किये गये थे। इन आठों नौकरों की देखरेख से घबराकर स्वामीजी ने एक दिन उन्हें बुलाकर कहा—"देखो बेटा, मुझे तुम लोगों की सेवा की कोई जरूरत नहीं है। मैं ठहरा बैरागी बाबा, मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है। अगर तुम लोग मेरी सेवा करना चाहते हो तो इतना करना कि मेरे पास कोई अचानक न आने पाये।"

यहाँ आने के बाद सर्वसाधारण की भीड़ में कमी जरूर हो गयी, पर सम्पन्न घराने की भीड़ बढ़ने लगी। बालिका, युवती, सधवा, विधवा, बहुएँ, रजवाड़े की रानियाँ आने लगीं। इस संकट से बचने के लिए वे आनन्दबाग स्थित एक भूमिगत कमरे में रहने लगे। यहाँ उन्होंने नियम बना लिया कि मेरे कमरे में कोई नहीं आ सकता। मैं दिन में एक बार कुछ देर के लिए ऊपर आऊँगा और तभी दर्शनार्थियों से मिलूँगा।

× × ×

अमेठी-नरेश के यहाँ एक बार अन्य देशी नरेश आकर ठहरे। स्वामीजी का व्यवहार उन्हें ढोंग प्रतीत हुआ। दरअसल वे स्वामीजी के बारे में अन्य ढोंगी संन्यासियों जैसा विचार रखते थे। उन्होंने स्वामीजी की शक्ति की परीक्षा लेने के लिए जाल फेंका। नगर से तीन वारवधुओं को बुलाकर उन्होंने कहा—"इस मकान में एक संन्यासी रहते हैं। अगर तुम अपने हाव-भाव और कर्त्तव्य से उन्हें अपने जाल में फाँस सको तो तुम्हें १००-१०० रुपये इनाम दूँगा।"

उन दिनों १०० रु० की काफी कीमत थी। इतनी बड़ी रकम पाने के लालच में वे तुरत राजी हो गयीं। शाम ढले तीनों वारवधुएँ मनमोहिनी शृंगार किये आयीं। उन्हें यह बता दिया गया कि स्वामीजी कहाँ हैं। तीनों वेश्याएँ हाथ में दीपक लेकर भूगर्भ स्थित बाबा के कमरे में आयीं तो देखा—वे समाधि लगाये बैठे हैं। आँखें बन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। कुछ पल उन्हें देखने पर इनके मन का कलुष दूर हो गया। वे झटपट ऊपर चली आयीं।

राजा केतकी फूलों के कुंज में छिपे सारा दृश्य देख रहे थे। इन्हें वापस आते देख वे चौंककर पास आये। नगरवधुओं ने कहा—"महाराजा साहब, हमसे यह काम नहीं होगा। हमें घर पहुँचा दीजिए।"

राजा मायूस होने के बदले पुरस्कार की रकम दस गुना बढ़ाते हुए बोले—"मैं तुम लोगों में प्रत्येक को एक-एक हजार रुपये दूंगा। जाओ, हुक्म का पालन करो।"

हजार रुपये के लालच में पुनः तीनों भूगर्भ में आयीं। उन्होंने देखा—स्वामीजी की समाधि भंग हो गयी है। वे विस्मय से देख रहे हैं। तुरत सिंह की तरह गरजते हुए बोले—"अगर तुम लोगों को अपनी जान प्यारी है तो तुरत यहाँ से भाग जाओ।"

यह बात सुनते ही दो भाग गयीं, पर हजार रुपये पाने के लालच में एक रुक गयी। तभी न जाने कहाँ से एक काला नाग आकर उसके पैरों से लिपटकर फुफकारने लगा। वह प्राणपण से चिल्लाने लगी—"महाराज, मुझे बचाइये। क्षमा करें महाराज। मैं मर जाऊँगी। स्वामीजी, मुझे बचाइये।"

वह इस प्रकार चिल्लाती रही। उसे उसी हालत में छोड़कर स्वामीजी ऊपर आकर अन्य कमरे में चले गये। इधर राजा ने सोचा—तीसरी आखिर क्या कर रही है? यह देखने के लिए उसने भूगर्भ स्थित कमरे के प्रवेश-द्वार से नीचे की ओर देखा। उस दृश्य को देखते ही वह भी भाग खड़ा हुआ।

इस घटना के बाद से फिर किसीको स्वामीजी की परीक्षा लेने का साहस नहीं हुआ। भोर के समय नाग नगरवधू के पैरों से अलग होकर एक ओर चला गया। कहा जाता है कि आगे चलकर उक्त नगरवधू शरीर बेचने का रोजगार छोड़कर भगवत्-पूजन में लग गयी।

× × ×

आनन्दबाग में रहते हुए स्वामीजी कठोर साधना करते रहे। संवत १९२५ में उन्होंने कौपीन को भी तन से अलग कर दिया। अब वे पूर्ण रूप से दिगम्बर रहने लगे। इन दिनों की स्थिति के बारे में श्री भूधर बाबू ने लिखा है—"जाड़े की सर्दी में स्वामीजी किसी प्रकार वस्त्र नहीं ओढ़ते थे। यहाँ तक कि धूनी भी नहीं जलाते थे। बायें हाथ पर सिर रखकर सोते रहते थे। शरीर पर ओस के कण साफ साफ दिखाई देते थे। प्यास लगने पर किसी पात्र में पानी नहीं पीते थे, बल्कि अंजलि में पानी पीते थे।"[1]

---

१. दि इंडियन डेली न्यूज, १९०० ई०, पृष्ठ ८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेंकटेश्वर समाचार के अनुसार स्वामीजी का दर्शन करने के लिए नित्य हजारों लोग आते थे। कभी-कभी भीड़ के कारण सदर गेट बन्द करवा दिया जाता था। फिर भी दर्शनार्थियों की श्रद्धा और विनय से त्रस्त होकर स्वामीजी को दर्शन देना पड़ता था। स्वामीजी के शिष्यों की संख्या एक लाख से अधिक थी। इनमें राजा-महाराजा अगणित थे। उनकी योग-विभूति से प्रभावित होकर तत्कालीन अनेक देशी नरेशों ने अपनी कोठियाँ दुर्गाकुंड के समीप बनवायी थीं। अयोध्या, काश्मीर, रींवा, नाढोर, भिनगा, डुमराँव, बेतिया, शिवारसोल, दरभंगा-नरेश के भवन काशी में बने। बाबा के भक्त अनेक सरकारी कर्मचारी थे।[1]

भारत ही नहीं, भारत के बाहर विदेशों में भी स्वामीजी की ख्याति फैली हुई थी। भारत के अनेक राजा, महाराजा स्वामीजी की सेवा में विभिन्न प्रकार के व्यंजन, फल भेजा करते थे। सिंगापुर से केसूर, ईरान से वैर, चीन से केले, काबुल से सरदे, हैदराबाद से तरबूज आदि पोस्ट-पार्सल से आते थे। स्वामीजी यह सब चीजें जिलाधीश, सिविल सर्जन, कोतवाल, जज आदि को दान कर देते थे। काशी, दरभंगा, बड़हल, नेपाल, नागौद, बेतिया, अयोध्या आदि नगरों के राजा भी ऐसे पदार्थ भेजते थे जिन्हें स्वामीजी कुत्तों, बन्दरों, बिल्लियों, गायों आदि को खिला देते थे।[2]

प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी काशी-प्रवासकाल में अक्सर स्वामीजी का दर्शन करने आते थे। एक दिन आने पर उन्होंने देखा कि एक देशी नरेश एक थाली में मोहरें भरकर उसे स्वीकार करने का अनुरोध कर रहे हैं। स्वामीजी चुपचाप बैठे हैं। यह देखकर गोस्वामीजी कहने लगे—

न योगी न भोगी न वा मोक्षाकांक्षी
न वीरो न धीरो न वा साधकेन्द्रः।
न शैवो न शाक्तो न वा वैष्णवो वा
वधूतश्चिदानन्दरूपो महेशः॥
श्मशाने गृहे वा हिरण्ये तृणे वा
तनूजे रिपौ वा हुताशे जले वा।
स्वकीये परे वा समत्वेन बुद्धे
विरजेहवधूते द्वितीयो महेशः॥

इस के युवराज अपने छोटे भाई के साथ भास्करानन्दजी स्वामी का दर्शन करने आये थे। योगियों के पास आते ही उनके तेज का प्रभाव पड़ता है। युवराज स्वामीजी

१. २१ जुलाई सन् १८९९ ई०।
२. अमृत बाजार पत्रिका, १८ मई, १९०० ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से अत्यन्त प्रभावित हुए। चार वर्ष बाद अपने एक दूत के द्वारा अनेक रूसी फल भिजवाए थे।

अंग्रेजी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार मार्क ट्वेन को भारत में सबसे अधिक भास्करानन्दजी के व्यक्तित्व ने प्रभावित किया था। स्वामीजी के बारे में उनके कई लेख प्रकाशित हुए हैं।

भारत के तत्कालीन जनरल लंकहर्ट, उनकी पत्नी, लेफ्टिनेण्ट जनरल और मेजर जनरल के साथ अमेठी-कोठी में स्वामीजी का दर्शन करने गये थे। सन् १८९८ ई० में उत्तर प्रदेश के गवर्नर श्री जे० डिगेस आये थे।

जब मार्क ट्वेन के लेख प्रकाशित हुए तब जर्मनी के सम्राट् कैसर विलियम द्वितीय ने श्री ग्रफ कर्णिगसमार्क को अपना दूत बनाकर काशी भेजा ताकि स्वामीजी कुछ दिनों के लिए जर्मनी में आकर उस देश को पवित्र करें। स्वामीजी ने दूत से कहा—"मेरी यह प्रतिज्ञा है कि काशी छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाऊँगा।"

अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी तथा इंग्लैण्ड के पत्रों में उन दिनों स्वामीजी के बारे में अनेक लेख प्रकाशित हुए थे। भारत में हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, मराठी पत्र-पत्रिकाओं में जीवन-चरित्र प्रकाशित हुए हैं।

संवत् १९३० में पंडित मिश्रीलाल मिश्र का मन उचट गया। लड़का संन्यासी बन गया। एकमात्र पौत्र की अकालमृत्यु हो गयी। एक दिन किसीको बिना कोई सूचना दिये वे काशी चले आये और यहाँ संन्यास लेकर रहने लगे। बाद में यहीं उनका निधन हो गया। उधर घर पर पत्नी अपने पति, पुत्र, पौत्र को खोने के बाद बदरीनाथ-दर्शन करने गयी तो ऐसी बीमार हुई कि भगवान् ने उसे भी अपने यहाँ बुला लिया।

× × ×

कलकत्ते से एक लखपति सेठ काशी आये। नगर में रहने की अपेक्षा छावनी-क्षेत्र में किराये का मकान लेकर रहने लगे। यहाँ रहते हुए उन्होंने देखा कि इस क्षेत्र के अधिकांश अंग्रेज नर-नारी किसी भारतीय योगी की चर्चा करते हैं। उनका दर्शन करने जाते हैं। कौतूहलवश एक दिन वह भी स्वामीजी के पास आया।

कुछ देर बाद स्वामीजी ने आदेश दिया कि अब तुम वापस चले जाओ। लखपति सेठ गया नहीं बल्कि चुपचाप वहीं बैठा रहा। सुबह से दोपहर, फिर शाम हो गयी। स्वामीजी ने कहा—"भूख-प्यास को रोककर यहाँ बैठने से क्या लाभ होगा। जाओ, घर जाकर आराम करो।"

सेठ ने कहा—"घर जाकर क्या करूँगा? मन में बड़ी अशान्ति है। यहीं भूखा-प्यासा प्राण दे दूँगा। अगर आपकी कृपा प्राप्त……।"

---

१. भारत जीवन, २६ दिसम्बर, १८९८ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी ने बात काटते हुए कहा—"मैं जानता हूँ कि तुम्हारी पत्नी गुजर गयी है और अभी तक अंत्येष्टि दूसरा विवाह नहीं हुआ है, पर यहाँ तुम नित्य क्लब जाते हो, विदेशी रमणियों के साथ रंगरेलियाँ मनाते हो।"

देखते ही देखते सेठ के चेहरे का रंग उड़ गया। उन्होंने अनुभव किया कि ये सब बातें मेरे सिवा कोई जानता भी नहीं। स्वामीजी कैसे जान गये। जरूर त्रिकालदर्शी हैं। आत्मग्लानि और पश्चात्ताप ने उन्हें प्रायश्चित्त के लिए प्रेरित किया। स्वामीजी के चरण आँसुओं से धोते रहे। दयालु स्वामीजी ने उनके अपराधों को क्षमा करते हुए बाद में उन्हें दीक्षा दी।

इसी प्रकार की एक घटना का उल्लेख श्री क्षेत्रचन्द्र वसु ने किया है। उन्होंने लिखा है—"पत्नी के निधन के बाद मेरा मन उचाट हो गया। शान्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से स्वामीजी के निकट गया। मुझे देखते ही उन्होंने कहा—'क्यों बेकार परेशान हो रहे हो? अभी तुम्हें पुनः नये सिरे से गृहस्थी बसानी है।'

"स्वामीजी की बातें सुनकर मैं चौंक उठा। मैंने अपनी पत्नी के निधन की चर्चा तक नहीं की थी, पर अन्तर्यामी ने सब कुछ जान लिया। मैं गुरुदेव के समीप काफी देर तक बैठा था। सहसा मैंने देखा कि एक महिला की छाया-मूर्ति जो गोद में बालक लिए हुए थी, मेरे आसपास टहल रही है।

"तभी उस छाया-मूर्ति की ओर देखते हुए स्वामीजी ने कहा—'मेरी राय है कि अब तुम घर चले जाओ। मेरा यह भी आदेश है कि तुम पुनः एक विवाह कर लो। अगर ऐसा नहीं कर सके तो भविष्य में मेरे यहाँ मत आना।' इस आदेश को शिरोधार्य कर मैं घर वापस आया। पुनर्विवाह किया। सोहागरात को देखा—यह वही मूर्ति थी जिसे काशी में गुरुदेव के पास देखा था।

"विवाह के तीसरे दिन मैं हैजे से पीड़ित हो गया। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। माँ ने व्याकुल होकर गुरुदेव के पास तार भेजा—'आपके आदेश पर मैंने लड़के का विवाह किया। अब वह मरणासन्न है, इसे बचाइये।' तुरत तार से जवाब आया—'घबराओ मत। तुम्हारा लड़का ठीक हो जायगा।' स्वामीजी का तार आने के बाद मेरी हालत में सुधार होने लगा।

"मुझे इस तरह मौत के मुँह से निकलते देख मेरे बहनोई राय रमानाथ घोष स्वामीजी के प्रति श्रद्धा से विगलित हो उठे। वे स्वयं अपनी एक समस्या लेकर बाबा के पास गये। बात यह थी कि उनका एकमात्र पुत्र था। वे उसका विवाह करने में हिचक रहे थे। जन्म-पत्रिका के अनुसार १६वें वर्ष में मारकेश योग था। स्वामीजी से राय माँगने पर उन्होंने कहा—'आप लड़के का विवाह कर दीजिए।'

"स्वामीजी से आश्वासन पाकर रमानाथ सपत्नीक वापस चले आये। उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाने के बाद एक ज्योतिषी जो कि स्वामीजी के पास बैठा था, बोले—'महाराज, इस बालक पर संकट आनेवाला है और आपने उसके विवाह की आज्ञा कैसे दे दी ?'

"स्वामीजी ने कहा—'जिस लड़की के साथ इस लड़के का विवाह होनेवाला है, उसके भाग्य में वैधव्य लिखा है, उसे कौन मिटा सकता है ? उसके कर्म इस लड़के के कर्म से संयुक्त हैं। उसे विधवा होना ही है। लेकिन जब तक मैं जीवित हूँ तब तक उसकी अकालमृत्यु नहीं होगी।'

"आगे चलकर स्वामीजी हैजे से पीड़ित हुए। उधर लड़का घोड़े से गिर पड़ा। कुछ दिनों तक स्वामीजी अचेतावस्था में थे और बाद में अपना कलेवर छोड़ दिया। ठीक उसी समय वह बालक भी चल बसा।"

महाराजा के शिष्यों में अयोध्या के नरेश श्री प्रतापनारायण सिंह थे। एक बार काशी आकर वे स्वामीजी की सेवा में काफी दिनों तक रह गये। अचानक एक दिन राज्य से तार आया। तार पाते ही राजा साहब यात्रा की तैयारी करने लगे। बाद में स्वामीजी के पास आकर अनुमति माँगी।

स्वामीजी ने कहा—"यात्रा स्थगित कर दो। अभी तुम काशी के बाहर नहीं जा सकते।"

यह आज्ञा सुनकर राजा साहब सहम गये। राजा साहब के राज्य में एक घटना हो गयी है जिसके लिए उनका जाना आवश्यक है और इधर स्वामीजी जाने की आज्ञा नहीं दे रहे हैं। अजीब कशमकश थी। उन्होंने निवेदन किया कि मेरा जाना बहुत जरूरी है।

स्वामीजी ने कहा—"अगर इतना आवश्यक है तो जिस गाड़ी से जाने का निश्चय किया है, उससे मत जाओ। बाद में जो गाड़ी जानेवाली हो, उससे जाओ।"

इस आज्ञा को शिरोधार्य कर राजा साहब यथासमय स्टेशन आये तो पता चला कि इसके पहलेवाली गाड़ी जौनपुर के समीप मालगाड़ी से टकरा गयी है। रास्ता साफ होने में समय लगेगा। गुरुदेव की भविष्यवाणी पर उनका तन-मन पुलकित हो उठा।

एक बार स्वामीजी संवत् १९५२ में कानपुर के भक्त गयाप्रसाद के विशेष आग्रह पर उनके यहाँ जाने का निश्चय किया। वे चाहते थे कि यह यात्रा चुपचाप हो, मन में एक शंका थी कि अयोध्या-नरेश को अगर पता चल गया तो वह जरूर रोक लेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी की शंका सही साबित हुई। अयोध्या स्टेशन पर गाड़ी के रुकते ही कई हजार लोग स्वामीजी की जयकार करने लगे। महाराजा ने नतजानु होकर चरण-धूलि ली। भक्त के आग्रह पर स्वामीजी को उनके महल तक जाना पड़ा।

अयोध्या के इतिहास में वह महान् दिवस था। ऐसा दृश्य बीसवीं शताब्दी में किसीको कभी देखने के लिए नहीं मिला था। स्टेशन के बाहर खड़े रथ में तेरह घोड़े लगे हुए थे और उस पर स्वामीजी को बैठाकर स्वयं राजा प्रतापनारायण सिंह बहादुर कोचवान के रूप में रथ को आगे बढ़ाने लगे। सड़क के दोनों ओर अपूर्व सजावट थी। लाखों लोग पलक-पांवड़े बिछाये फूलों की बरसात कर रहे थे।

महल में लाकर राजा साहब ने उनके चरणों को सरयू के जल से धोया। इसके बाद छत्रपति शिवाजी ने जिस प्रकार समर्थ गुरु रामदास के चरणों में सब कुछ समर्पित किया था, ठीक उसी प्रकार प्रतापनारायण सिंह ने कोषागार, अस्त्र, सेना, पूरे परिवार को गुरुदेव को समर्पित कर दिया।

अयोध्या से स्वामीजी कई जगह होते हुए मैथालालपुर अपने गाँव आये। यहाँ कई लाख लोगों की भीड़ एकत्रित थी। स्वामीजी के लिए पहले से मंच तैयार था। स्वामीजी जिस रास्ते से पैदल आ रहे थे, उस पर हजारों लोग लोटने लगे, क्योंकि उन्हें चरण-रज लेना था, पर इस माहौल में सभी के लिए सुलभ नहीं था। कम-से-कम इस पवित्र भूमि पर पड़े पावन चरण-रज का गंध शरीर स्पर्श कर ले।

मंच पर बैठते ही स्वामीजी ने इधर-उधर देखने के बाद पूछा—"यहाँ लछमन मल्लाह कहीं हो तो बुलाओ।"

यह आदेश पाते ही पुलिस और कार्यकर्ता तत्पर हो गये। दो घंटे बाद वह मिला। स्वामीजी के पास जाते ही उन्होंने उसका हाथ पकड़कर अपनी बगल में बैठाया। आज उसके भाग्य पर लोग धन्य-धन्य कह उठे। कुछ ने कहा—"स्वामीजी गरीबों के देवता हैं।"

स्वामीजी के यहाँ काफी बड़े-बड़े लोग आते थे, इसलिए उनके बारे में यह प्रचारित हो गया था कि वे बड़े आदमियों से सम्पर्क रखते हैं जब कि उपर्युक्त उदाहरण से यह धारणा गलत प्रमाणित हो जाती है। उनकी दृष्टि में राजा-रंक समान थे।

काशी में सहाय नामक एक तेली रहता था। उसका नित्य का नियम था कि सबेरे स्नान करने के बाद वह सबसे पहले स्वामीजी का दर्शन करता था। इसके बाद अपने काम पर जाता था। उसे देखते ही स्वामीजी कह उठते थे—"आओ, मेरे बाप।"

केवल यही नहीं, काशी के कुछ खोमचेवाले, दुकानदार, नौकरी पेशेवाले साधारण लोग स्वामीजी का दर्शन करने के बाद अपने-अपने गन्तव्य स्थल जाते थे। नगर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संगीतज्ञ सबसे पहले स्वामीजी को अपना संगीत सुनाने के लिए समारोह में जाते थे। एक प्रकार से स्वामीजी सभी के लिए गृह-देवता थे।

× ×

ख्यातिप्राप्त डॉक्टर भादुड़ी महाशय डकारों से परेशान थे। अक्सर यह पीड़ा इतनी बढ़ जाती थी कि वे परेशान हो जाते थे। स्वामीजी के निकट आकर उन्होंने अपने कष्ट का वर्णन करते हुए कहा कि प्रभु, आशीर्वाद दीजिए।

स्वामीजी ने उन्हें सो जाने को कहकर उनके पेट पर हाथ फेरते हुए कहा—"ठीक हो गया।" उसी दिन से उनका कष्ट दूर हो गया।

एक शिष्य अपने गुरुदेव का दर्शन करने आया। प्रणाम करने के बाद उसने कहा—"भगवन्, आज मैं घर वापस जा रहा हूँ।"

स्वामीजी ने उसे एक फल देते हुए कहा—"इस फल को साथ लेते जाओ। घर जाकर सबसे पहले अपने तीसरे पुत्र को खिला देना।"

शिष्य महोदय समझ नहीं पाये कि आखिर तीसरे पुत्र को क्यों खाने को दे रहे हैं। प्रसाद तो सभी खा सकते हैं। कलकत्ता आने पर उन्होंने देखा कि उनका तीसरा पुत्र मरणासन्न है। झट सारी बातें समझ गये। डॉक्टरी इलाज रोककर उन्होंने अपने तीसरे पुत्र को वह फल खिलाया। उसी दिन से वह स्वस्थ होने लगा।

वाराणसी का ब्रह्मनाल-निवासी शीतलाप्रसाद स्वामीजी का परम भक्त था। एक दिन शीतलाप्रसाद का पुत्र तीसरी मंजिल से नीचे गिर पड़ा। हालत चिन्ताजनक हो गयी। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। यह देखकर वे उसी हालत में बच्चे को लेकर स्वामीजी के पास आये।

दयामय स्वामीजी ने उसे अपना पादोदक दिया। बच्चे के मुँह में पादोदक पड़ते ही वह होश में आ गया और स्वस्थ हो गया।

इस घटना के कुछ ही रोज बाद सुखीरपुर-निवासी एक ब्राह्मण आया। उसकी बीमारी अजीब थी। वह जो कुछ खाता तुरत कै हो जाती थी। इस रोग के कारण उसका स्वास्थ्य काफी खराब हो गया था। आगन्तुक अपनी व्यथा को व्यक्त करे, उसके पहले ही स्वामीजी ने कहा—"पांडेजी, आप जरा जल्दी से खिचड़ी बनाइये।"

खिचड़ी बन जाने पर स्वामीजी के सामने परोसी गयी। भास्करानन्दजी ने उस थाली से एक दाना चावल लेकर खाया। शेष खिचड़ी ब्राह्मण महाशय से खाने को कहा। पांडेजी ने डरते-डरते खाया। काफी देर बाद स्वामीजी ने कहा—"जाओ, अब डर नहीं है।"

कानपुर जिले के वीर नारायण सिंह स्वामीजी के शिष्य थे। नारायण सिंह जब स्वामीजी के दर्शन के लिए काशी आते थे तब सपत्नीक आते थे। इस बार वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुपचाप अकेले रवाना हुये, क्योंकि पत्नी गर्भवती थी। इस हालत में उन्हें ले जाना उचित नहीं था। गाड़ी [illegible] नारायण पहुँची तो देखा—जनाने डिब्बे से उनकी पत्नी बाहर निकल रही हैं। अब क्या करते, लाचारी में सपत्नीक बाबा के दरबार में आये।

दूसरे ही दिन पत्नी को प्रसव-वेदना होने लगी। उसकी हालत देखकर नारायण सिंह उद्विग्न हो उठे। शहर में कहीं रहते तो कुछ करते। बाबा के आश्रम में कौन मददगार बैठा है।

ठीके इसी समय मानकी नाम्नी एक महिला बाबा को प्रणाम करने आयी। उसे देखते ही स्वामीजी ने कहा—"मेरे पास आ।"

नारायण सिंह जिस कमरे में ठहरे हुए थे, वहाँ जाकर नारायण सिंह से बिना कोई प्रश्न किये उन्होंने मानकी से कहा—"भीतर कमरे में ठकुराइन हैं। तू भीतर चली जा और उनके सिर पर हाथ फेरती हुई कहना—'दस दिन देर से बच्चा हो।' यह वाक्य केवल तीन बार कहना।"

स्वामीजी के आज्ञानुसार मानकी भीतर गयी और तीन बार स्वामीजी की बातों को दोहराया। तुरत प्रसव-वेदना दूर हो गयी। स्वामीजी मुस्कराते हुए वापस चले गये।

ढाका जिले में स्थित बहरमपुर गाँव के निवासी श्री चंडीचरण वसु मधुमेह रोग से पीड़ित थे। धीरे-धीरे रोग बढ़ता गया। चारों ओर से निराश होकर वे स्वामीजी के पास आये। उद्देश्य था कि मरने के पहले दीक्षा ले लूँ वरना पशु-योनि में जन्म लेना पड़ेगा।

वसु महोदय का संकल्प सुनकर स्वामीजी ने कहा—"तुम्हें दीक्षा देने में कोई आपत्ति नहीं है, पर पहले अपने कुलगुरु से मंत्र ले लो। इसके बाद दीक्षा लेने आना।"

स्वामीजी की राय सुनकर वसु महोदय निराश हो गये। कुलगुरु ढाका में हैं, ऐसी हालत में ढाका जाना, फिर वापस आना संभव नहीं था। मुमकिन था कि इस तरह की यात्रा में प्राण-नाश हो जाय। इसी चिन्ता में वे परेशान रहने लगे। एक दिन गंगा-स्नान कर लौट रहे थे तो सहसा कुलगुरु से उनकी मुलाकात हो गयी। वे खुशी से उछल पड़े। कुलगुरु को सारी बातें बताकर उनसे मंत्र लिया और इसके बाद स्वामीजी से दीक्षा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस घटना के बाद वे स्वामीजी के पास बराबर जाते र
ने कहा—"अब घर वापस चले जाओ। तुम्हारी बीमारी ठा
बसु महोदय ने सोचा—गुरुदेव केवल आश्वासन दे रहे हैं।
की तरह मौजूद है।

स्वामीजी ने कहा—"तुम्हारा रोग उनतालीसवें दिन बिलकुल ठीक
अब बेकार समय बरबाद मत करो।"

बसु महोदय मन में द्विधा लेकर कलकत्ता चले आये। कुछ दिनों बाद
समय उनके नाम इस आशय का एक तार आया कि तुरत ढाका चले आइये।

बसु महाशय अपने डॉक्टरों से राय लेने के लिए गये कि सफर करने लायक मेरी स्थिति है या नहीं? डॉक्टरों ने उन्हें सफर करने से मना किया। लेकिन कार्य इतना जरूरी था कि उन्हें जाना ही पड़ा। ढाका आने के ठीक चौथे दिन उन्होंने अनुभव किया कि उनका सारा कष्ट दूर हो गया है।

तुरत डायरी खोलकर उन्होंने देखा तो ज्ञात हुआ कि आज से उनतालीस दिन पूर्व स्वामीजी ने जो भविष्यवाणी की थी, आज वह सत्य प्रमाणित हो गयी।

इस घटना के कुछ दिनों बाद बसु महाशय ढाका शहर में डिप्टी कलक्टर बन गये। इस पद पर कार्य करते हुए एक बार गुरुदेव का दर्शन करने के लिए काशी आये।

अचानक एक दिन बसु महाशय की इच्छा हुई कि स्वामीजी को अपने हाथ का बनाया भोजन खिलाऊँ, पर दूसरे ही क्षण ख्याल आया कि मैं तो शूद्र जाति का हूँ। भला मेरे हाथ का बनाया भोजन गुरुदेव कैसे करेंगे?

बसु महोदय इसी प्रकार का ख्याली पुलाव पका रहे थे कि उन्होंने देखा—दरवाजे के पास स्वामीजी खड़े हैं। उन्हें प्रणाम करते ही स्वामीजी ने कहा—"देखो चण्डी, तुम्हें लोग शूद्र समझते हैं जब कि तुम ब्राह्मण हो। मेरी आज इच्छा हुई कि तुम्हारे हाथ का बनाया भोजन करूँ। कल ऐसा आयोजन करना।"

बसु महाशय का हृदय श्रद्धा से परिपूर्ण हो उठा। लगा, जैसे शबरी के घर राम भोजन करने आये हैं। उनकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े। दूसरे दिन गुरुदेव ने बसु महोदय को बुलाकर जनेऊ पहनाया और उनके हाथ का भोजन प्रेम से किया।

भोजन के पश्चात् स्वामीजी ने कहा—"देखो चंडी, अब आगे से तुम ब्राह्मण के अलावा अन्य किसीके हाथ का बनाया भोजन मत करना।"

इसी प्रकार की कृपा उन्होंने प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी के एक शिष्य पर की थी। उक्त शिष्य ने एक बार स्वामीजी से प्रश्न किया—"प्रभो, भक्ति कैसे होती है?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुपचाप अकेले रवाना हुये, उत्तर देने के बदले उन्होंने कहा—"तुम इसी वक्त आनन्दबाग [illegible] नहीं था। गाड़ी [illegible] बाहर निकल रही है। अब नाराज होकर चला गया। एक सामान्य प्रश्न पूछने पर इतना क्रोध दूसरे ही दिन को उसके स्वप्न में आकर स्वामीजी ने उसके प्रश्न का उत्तर विस्तार से [illegible] हो उठे।

बैठा है। हुल की रानी एक बार एक मुकदमे के चक्कर में बुरी तरह उलझ गयी। [illegible] गया। यहाँ तक कि इस मुकदमे में सारा धन स्वाहा होता गया। किसी-ने रानी साहिबा को सलाह दी कि स्वामी भास्करानन्दजी के पास चले जाइये। वे आपको राहत दिला देंगे।

स्वामीजी के पास आने पर उन्होंने कहा—"घबराओ मत। तुम्हारी जीत होगी।"

मुकदमे में विजय प्राप्त करने के बाद बड़हल की रानी ने स्वामीजी के पास डेढ़ लाख रुपये भिजवाये जिसे उन्होंने लेने से इनकार कर दिया। जब स्वामीजी ने यह धन नहीं लिया तब उन्होंने आनन्दबाग के समीप एक शिव मंदिर बनवा दिया। स्वामीजी के मना करने पर भी उनकी एक संगमरमर की मूर्ति बनवाकर स्थापित की।

स्वामीजी से काशी-नरेश ईश्वरीप्रसाद सिंह भी प्रभावित थे। उन्होंने स्वामीजी की एक मूर्ति बनवाकर अपने किले में स्थापित की थी।

× × ×

जिन दिनों स्वामीजी आनन्दबाग में थे, उन दिनों काशी में दो अन्य योगिराज रहते थे। साक्षात् विश्वनाथ के अवतार तैलंग स्वामी जो अक्सर भास्करानन्दजी के यहाँ चले आते थे। दूसरे स्वामी विशुद्धानन्दजी थे जिन्हें स्वामीजी बड़े भैया कहा करते थे।

एक बार तैलंग स्वामी आनन्दबाग में आये। स्वामी भास्करानन्दजी ने पहरेदार को बुलाकर कहा—"देखो, अब कोई भी मुझसे मिलने आये तो उसे मत आने देना। चाहे कोई भी हो। फाटक बन्द करके वहीं पहरा दो।"

इस घटना के आधे घंटे बाद बिहार के किसी स्टेट के राजा साहब अपने तामझाम सहित आये। पहरेदार ने कहा—"आज स्वामीजी से मुलाकात नहीं हो सकती। आप कल आइयेगा।"

राजा गरजे—"जानते हो मैं कौन हूँ? खोलो दरवाजा।"

पहरेदार ने कहा—"सख्त हुक्म है कि इस वक्त स्वामीजी किसीसे नहीं मिलेंगे और न फाटक खोला जायगा।"

एक सामान्य पहरेदार इस प्रकार राजाज्ञा की उपेक्षा करे, इसे वे कैसे सहन कर सकते थे? राज-रोष उमड़ा। तुरत उन्होंने अपने साथ आये प्यादों से कहा—"फाटक तोड़ डालो। हम स्वामीजी से मिलकर रहेंगे। देखें, कैसे कोई रोकता है?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शकों की हिन्दी पुस्त

समीक्षा, रा

शिक्षा,

त्रकारिता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुपचाप अकेले रवाना हो [illegible], क
[illegible]त नहीं था। गाड़ी [illegible]
[illegible]र निकल रही है। अब [illegible]ते [illegible]

दूसरे ही दिन
[illegible]ग्न हो उठे।
[illegible] बैठा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के प्रमुख प्रकाशकों की हिन्दी पुस्तकें

उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, राजनीति, समाजशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र, शिक्षा, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, गृह विज्ञान, पत्रकारिता, धार्मिक, आध्यात्मिक, स्वास्थ्य, गृहोपयोगी, सन्दर्भ ग्रन्थ, कोश, विश्वकोश, बाल साहित्य।

एक ही स्थान से उपलब्ध।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी-२२१००१

फोन : ६४७४१, ६६९८२

कृपया हमारे शोरूम में पधारें
अथवा सूचीपत्र के लिए लिखें।
पुस्तकालयों को विशेष सुविधा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आध्यात्मिक तथा संत जीवन सम्बन्धी पुस्तकें

मनीषी की लोकयात्रा	डा० भगवतीप्रसाद सिंह	८०-००
सूर्य-विज्ञान प्रणेता स्वामी विशुद्धानन्द	नन्दलाल गुप्त	२-००
योगिराज श्यामाचरण लाहिड़ी	सत्यचरण लाहिड़ी	२-००
भारत के महान् योगी भाग १ से ४	विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)	५-००
भारत के महान् योगी भाग ५ - ६	" "	६-००
महामानव महाबीर	डॉ० गुणवंत शाह	६-००
करुणामूर्ति बुद्ध	"	६-००
प्रकाशपथ का यात्री	भानुकुमार नायक	४०-००
कृष्ण और मानव सम्बन्ध	हरीन्द्र दवे	८०-००
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	पं० गोपीनाथ कविराज	६०-००
आचार्य नरेन्द्रदेव : युग और नेतृत्व	मुकुटविहारी लाल	५०-००
भुड़कुड़ा की संत परम्परा	डा० इन्द्रदेव सिंह	१००-००
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग	पं० गोपीनाथ कविराज	२५-००
मृत्युंजयी भाग १-२	रतनलाल जोशी प्रत्येक	५०-००
गोपी गीत	करपात्री जी महाराज	१२५-००

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.